॥ श्रीः ॥

अनुक्रमणिका

* प्रस्तावना *

॥ श्री जिनायनमः । श्रीसद्गुरुभ्योनमः ॥

इस संसार मयी महा अरण्य में अनादि काल से जीव श्री जिन प्ररूपित मार्ग से विमुख होके कुगुरु हीणा चारियों की संगाति से कुमार्ग अङ्गीकार कर परिभ्रमण कर रहा है, नरक निगोदादि के अनन्तानन्त दुःखों का उप भोगी हो अपनी पवित्रात्मा को पाप कर्म्मरूप अशुचि से अपवित्र करता है, ज्ञान दर्शन चारित्रादि निजगुनों को विसार पञ्च इन्द्रियों की विषय विकारों में लिप्त होके उन्हे ही अपना कर्त्तव्य समझ रहा है, जैसे कोई मनुष्य मदरा पान के नशे में पागल होके अपने अच्छे २ प्रासादों की सुख सय्या को छोड महा दुर्गन्ध भूमिको ही सुख सय्या समझ किसी चतुर पुरुष का कहना न मान वहीं लोटना अपना परम कर्त्तव्य जानता है वैसे ही जीव मोह मिथ्यात्व मयी नशेकी मतवाल में मतवाला बन जिन कथित सुख सय्या को छोड इन्द्रियों के काम भोगादि सय्या को ही सुख सय्या जान उसही में रङ्गरत्ता रहना अत्यावश्यकीय कार्य्य समझता है, यादि सच्चा और स्वच्छ वीर मार्ग में चलने वाले महाऋषी शुद्ध निःस्नेही मोक्ष मार्ग बतावें तो उलटी उन्ही महात्माओं को न मान कर उन निरारम्भी निष्परिग्रहों की निन्दा करने को तत्पर बने रहते हैं, किन्तु जिन कथित मार्ग क्या है इस को पहचानने की कोसिश नहीं करते, संसारी मार्ग जिन कथित मार्ग से एकदम विरुद्ध हैं इसलिए चतुर्गति संसार अटवी में भ्रमण करने वालों को मुक्ति मार्ग अच्छा नहीं लगता है यदि कभी वीतराग मार्ग जानने की कोई हलु कर्म्मी जीव इच्छा करें तो हीनाचारी

कुगुरू कु दृष्टान्त लगाके भोले लोकों को बहका देते हैं, परंतु न्यायी और विद्वान पुरुष तो सत्या सत्यका निर्णय किये विना नहीं रहते, जिन हलु कर्म्मी को संसार के सुखों से अरुचि हो गई है वे समदृष्टी तो जानते है कि जितने जितने सावद्य जोगों का त्याग किये सो धर्म्म और आगार रक्खा सो अधर्म्म है, जिस कार्य्य को साधू मुनिराज सावद्य जानके त्यागा है उस कार्य्य को करने कराने और अनुमोदने मैं पाप है, जिन आज्ञा में धर्म आज्ञा बाहर अधर्म श्रद्धना ही सम्यक्त है, जिस कार्य्य की जिन तथा मुनी आज्ञा देते नहीं और अनुमोदना भी नहीं करते तथा अनुमोदना करनें सें साधूको प्रायश्चित आवे तो वही कार्य्य गृहस्थ करे करावे और भला जाने तो एकान्त पाप हैं, बस यही जिन मार्ग की कुञ्जी है इसे जो अच्छी तरें सें जान लिया है उसी के निग्रन्थ प्रवचन अर्थ और परम अर्थ है।

सदूगुरुओं नें कृपा पूर्वक भव्य जीवों को संसार रूपी समुद्र से तैरने के लिये जिनागमानुसार अनेक ग्रन्थ शरलता सें बना के उपकार किया है इसके लिये उन्ह महा पुरुषों को जितना धन्यवाद दिया जाय सो थोडा है निन्दक लोक भलें ही उन जितेन्द्रियों की निन्दा करो परंतु जो संसार मार्ग सें विमुख और मोक्ष मार्ग सें सन्मुख विज्ञजन है सो तो उनका हृदय सें आदर करते हैं, स्वामी श्री भीखनजी के चतुर्थ पाट श्रीमद्जयाचार्य्य (श्री जीतमलजी स्वामी नाथ) महा प्रभाविक और शास्त्र वेता हुए हैं उन्हो नें भगवती आदि कई सूत्रों की जोड ढाल बंध शरल भाषा में बना के जिन वचनों को यथा तथ्य प्रगट किया है तथा अनेक ग्रन्थ बनाये हैं जिन्हें पढने सुनने

से न्यायाश्रयीयों को तत्थ्या तथ्य का स्पष्ट ज्ञान होता है, यह हित शिक्षावली "प्रश्नोत्तर तत्वबोध,, स्वामी काही बनाया हुआ है

॥ प्रश्नोत्तर तत्वबोध बनने का कारण ॥

सम्वत् १६३३ की साल में अजीमगंज (मकसुदाबाद) शहर से बाबु कालूरामजी १ प्रश्न पत्रि का ५२ दोहा में बनाके लाड णो के श्रावकों को स्वामी श्री जीतमलजी महाराज से मालूम करने को भेजा जिसकी नकल—

॥ प्रश्न पत्रिका ॥

॥ श्री जिनायनमः ॥

॥ दोहा ॥

चरण कमल जिन राज का, जामें मुज मन लीन ।
मधु कर जिहां गुंजत रहै, ज्ञाना मृत रसपीन ॥१॥
नाभेयादिक जिनेश्वरा, तीर्थंकर चोवीश ।
गणधर पाठक साधु पद, ध्यावत विश्वा वीश ॥२॥
जिनवर भाषित सुद्ध नय, आगम उदधि अपार ।
भ्रमत इण कालि काल में, जिन प्रतिमां आधार ॥३॥
स्वर्ग निवाशी देवगण, वालि पाताल कुमार ।
साश्वत जिन प्रतिमां भणी, नित प्रति करत जुहार ॥४॥
एहवी प्रतिमां जिन तणी, प्रणमी तेहना पाय ।
पत्र लिखुं अति प्रेम सुं, मुनिवर नां गुण गाय ॥५॥

क्रोध लोभ मद मोह सवे, त्यागी विषय विकार ।
जीत मल महाराज कूं, नमत सकल नर नार ॥६॥
दोष वँयालीश टाल ते, लेते शुद्ध आहार ।
भवि जन कुं प्रति बोधता, विचरै धरा मजार ॥७॥

॥ सोरठा ॥

तीन करण थिर धार, जीते बावीश परि सह ।
जपते दिल नवकार, सुद्ध करि संजम निर वहे ८

॥ दोहा ॥

सतावीश गुणे करी, पालो निज आचार ।
पंच महाव्रत पालता, एहवा तुम अणगार ॥९॥
निर जित मद उनमाद पणो, वर्जित विषय विकार ।
तर्जित कर्मादिक अशुभ, गार्जित नाण उदार ।१०।
सहर लाडणुं अति भलो, विचरो तिहां धर नेह ।
अप्रति बंध विहार करी, वेठा सम्बर गेह ॥११॥
तुम गुण गण मकरंद से, भविजन भमर लोभाय ।
देश विदेशे मानवी, कर जोडी गुण गाय ॥१२॥
में पिण गुण श्रवणे सुणी, भेटण की मन चाय ।
ते दिन सफल गीणिसहूं, वंदी तुम रा पाय ।१३।
कर्म ईंधन कूं जालवा, प्रत्यक्ष अग्नि समान ।
इन्द्रिय पांचु वश करी, एहवा तप की खान ॥१४॥

गुण सगला तुम अङ्ग में, दीखत है प्रत्यक्ष ।
आगम अर्थ विचार के, किम ताणो इक पक्ष ॥१५॥
पक्षा पक्ष कोइ मत करो, ज्ञान दृष्टि मनलाय ।
जिनवर प्रतिमां देख तां, दुःख दोहग टलजाय ।१६।
च्यार निक्षेपा जिन कह्या, भाव थापना नाम ।
सप्त नये करी देखल्यो, वरणन ठामों ठांम ॥ १७ ॥
अम्बड श्रेणिक राय तिम, रावण प्रमुख अनेक ।
विवध परः भक्ति करी, पाम्या धर्म विवेक ॥१८॥
पंचम् अंगे भाषियो, प्रगट पणें अधिकार ।
सूर्याभे जिन वंदिया, राय प्रश्रेणी मंजार ॥ १९ ॥
विजय देवता ये करी, जिन पूजा जिन राज ।
पक्ष पात कूं छोडके, सारो आतम काज ॥ २० ॥
छठे ज्ञाता अङ्ग में, द्रोपदी पांडव नार ।
मन वचकाया वश करी, पूज्या जिन इकतार ॥२१॥
जंघा विद्या चारणा, मुनिवर गुण की खान ।
ते पिण प्रतिमां वंदिता, पंचम् अङ्ग वखान ॥२२॥
जिन प्रतिमां जिन सारखी, भाखी श्री महावीर ।
कोई शङ्का मत आणज्यो, जिम पामो भवतीर ।२३।
जिनवर मत स्याद्वाद है, मत जाणो करी एक ।
दया दान मन धारल्यो, जद आवै विवेक ॥२४॥

जीव दया पाल्यां थकां, निश्चै होय उपगार ।
दया धर्म को मूल है, एहवो आगम सार ॥२५॥
घात करंता जीव की, छोडावै कोई जाय ।
अभय दान तेह नैं कह्यो, आगम में जिन राय ।२६।
ज्यो न छुडावो जीव कूं, तो अनु कंपा नांय ।
अनु कंपा विन जीव कूं, समकित पुष्टि न थाय ।२७।
गोशालो जलता थकां, जिनजी दियो विचार ।
शीतल लेस्याये करी, तेजु लेस्या वार ॥ २८ ॥
ज्यानैं कहता चूकिया, ते तो मिथ्या वात ।
कल्पातीत स्वभाव है, तीन लोक के नांथ ॥२९॥
नेम कुँवर तोरण चढ्यां, देखी जीव विनाश ।
अनु कंपा मन लायके, छोडाई प्रभु पाश ॥३०॥
आप बडे अणगार हो, पिण ए मोटी खोट ।
ज्यो नवि जीव दया करो, बंधै पाप शिर पोट ।३१।
पंच अधिक चालीशतो, कह्या सूत्र जिन राय ।
द्वातिंश तुम्ह मानता, कुण हेतु के न्याय ॥ ३२ ॥
भाखा नहिं सूत्र में सहु, आगम के नाम ।
ते बत्तीशां वीच है, देखो चित्त करी ठाम ॥ ३३ ॥
सांचा बत्तीश मानता, और न मानों सांच ।
कै कोइ प्रगटयो ज्ञान तुम्ह, अथवा मन की खांच ।३४।

सत्य परुपणा ज्यो करो, तो मानो महाराज। गहन
अर्थ आगम तणा, भाख्या श्री जिन राज ॥३५॥
मुखपती मुख बांधता, कुण सूत्रें अनुसार।
मनकी भ्रमता मिटी नहिं, ऐर विषम प्रकार॥३६॥
स्तवसमाके संजोग सुं, उपजत जीव असंख्य।
जीव समूर्च्छिम इन्द्रियन, यामै नाहिं को वंक।३७।
गण धर गौतम स्वाम कूं, मिया देवी कह्यो एम।
मुख बांधो वस्त्रें करी, गंध न आवै जेम॥ ३८॥
ज्यो पहलां बंधी हुंती, वलि बंधन किम होय।
एह व्यतिकर तुम जाण जो, सूत्र विपाके जोय।३९।
जम्भा छिंका कारणै, मुख ढांकै मुनि राय।
दशवै कालिक सूत्र में, देखो मन चितलाय।४०।
सूत्र सभे तुम देखल्यो, बंधण का नाहिं पाठ।
भगवती ज्ञाता आदि मैं, साख सूत्र की आठ।४१।
इत्यादिक सूत्रां तणां, मानो नाहिं वचन्न।
आप मतै नहिं मानता, करल्यो लाख जतन्न।४२।
लिख्या अजीमगंज सहर सुं, पत्र अधिक उच्छरंग।
खमत खामणा मान ज्यो, करि तीन करण इक संग ४३
मुनि गुण अति मुज अल्पधी, कैसै लिखुं बणाय।
जैसें जल सब उदधि को, घट विच नाहिं समाय।४४।

कुशल खेम वरतै तिहां, धर्म थकी जय कार ।
इहां पिण सु गुरु पसाय थी, आणंद हरष अपार ।४५।
भक्ति पत्र भावे लिख्यो, धरज्यो चित अधिकाय ।
अधिको ओछो ज्यो हुवै, ते खम ज्यो मुनिराय ।४६।
लिखज्यो उत्तर एह नो, मत धरज्यो मन रीश ।
मुज मति सारू में लिख्यो, धरज्यो मन सु जगीश ४७
एहवि परुपणा ज्यो करो, तो होय लाभ अपार ।
मुग्ध जीव संसार का, उतरै पैलै पार ॥ ४८ ॥
देखो बुंटे रायजी, तिम वलि आतम राम ।
त्यागी मन भ्रम आपणो, सारया भविजन काम ४६
थावो ज्यो तुम एहवा, आगम अर्थ विचार ।
मारवाड ढुंढाड में, वहु जन पामै पार ॥ ५० ॥
सकल सङ्घ श्रावक सहु, वांचो धर ज्यो प्रीत ।
उत्तर पाछा आपाव ज्यो, ए पंडित जन रीत ।५१।
मुनिवर ना गुण गावतां, होता चित आराम ।
मन तन कपट तजी करी, वंदत कालूराम ॥५२॥

॥ कलश ॥

इम करी रचना अतिही सुंदर, वांचता मन उलसै ।
देवाधि देवतिलोय स्वामी अंतर जामी मन वशै ॥
संवत उगणी सै साल तेतीस माश आश्विन सुद पखे।
मुनि विनय चंद पशाय करीनें, गोपी चंद इम उपदिसे

पूर्वोक्त प्रश्न पत्रिका अजीमगंज सें लाडणुं आई सो वहां के श्रावकों नें महाराज सें मालुम करी तब स्वामी नें हित शिक्षावली प्रश्नोत्तर तत्वबोध बनाया जिसको श्रावकों नें कण्ठाग्र धार के लिखाकर अजीमगंज बाबू कालूरामजी के पास भेजा था।

यह प्रश्नोत्तर तत्वबोध सूत्रों के प्रमाणो सहित जिन प्रणीत बचनों को यथा तथ्य बताने वाला और आतमार्थी भव्यों को लाभ दायक है इसको बांचने सें निष्पक्षी हलू कर्म्मी जीव जिन मारग को सहज में अच्छी तरहें जान कर यथा सक्ति ब्रत पच्चखाण अङ्गीकार करके अपनी आतमा का कल्याण कर सक्ते हैं; ज्यो राग द्वेष रहित बीतराग कथित मार्ग है जिस आतमार्थी को पुद्गलीक सुखों सें अरुचि है उन्हो के लिए यह ग्रन्थ मानू अमृत समान मिष्ट हैं; इस में सें कितनेक दोहा आगे श्रा० खतसी जीवराजनें मुम्बई में एक पुस्तक में छपाए थे परंतु सम्पुर्ण ग्रन्थ यह आजतक छपा नहीं अब शहर जयपुर में निम्न लिखित श्रावकों नें धारथा जिन्हों के नाम।

गणेशीलालजी सींधड,	जोरावरमलजी बांठिया,
गुलाबचन्द लूणिया,	सुजानमलजी खांडेड,
चन्दनमलजी दुगड़,	नाथूलालजी सरावगी;

उपरोक्त पांचो श्रावकों के पास सें पत्र लेकर मैने संग्रह करके लिखा और सर्व साधारण को लाभ पोंहचने के निमित्त मेरी लघु बुद्धि प्रमाण शुद्ध करके छपाया है, यदि कोई अक्षर या लघु दीर्घादि मात्रा की गलती रही होय उसका मुझे वारंवार मिच्छामि दुकडं हैं, पण्डित और गुणी जनों सें मेरी यही प्रार्थना है कि कोई अशुद्धि रही हो उसके लिए क्षमा चाहताहूं।

आप का हितेच्छू और गुणवानो का दास.

श्रा० जोंहरी० गुलाबचंद लूणियां जयपुर.

॥ प्रश्नोत्तर तत्वबोध ॥

॥ दोहा ॥

नमुं देव अरिहन्त नित, जिनाधिपति जिनराय ।
द्वादश गुणों सहित जे, बन्दू मन वच काय ॥१॥
नमूं सिद्ध गुण अष्ट युत, आचार्य मुनिराज ।
गुन षट तीश संयुक्तजे, प्रणमुं भव दधि पाज ॥२॥
प्रणमुं फुन उवज्झाय प्रति, गुण पणवींश उदार ।
नमुं सर्व साधू निमल, सत्तवींश गुन सार ॥३॥
द्वादश अठ षटतीश फुन, वलि पणवींश प्रगट्ट ।
सप्तवीश ये सर्वही, गुणवर इकशय अट्ठ ॥४॥
नवकरवाली नां जिके, मिणियां जगति मझार ।
एक एक जे गुण तणों, इक इक मिणियो सार ॥५॥
इकसो अठगुण सहित ए, परमेष्ठी पद पंच ।
तेतो भाव निक्षेप हैं, हूं प्रणमुं तज खंच ॥६॥
ए सहुनैं प्रणमीं करी, सखर समय रश सार ।
तत्वं बोध अविरोध तर, आखूं अधिक उदार ॥७॥

॥ इति मङ्गलाचरणम् ॥

॥ अथ प्रथम विजयसुर्याभाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै जे विजय सुर, वलि सुर्याभ विचार ।
प्रतिमांनीं पूजा करी, हिव तसु उत्तर सार ॥१॥
प्रतिमां पूजी विजय सुर, जीव अनन्ती वार ।
विजय पणों सहु ऊपनां, पाम्यां नहिं भव पार ॥२॥
शक्र सामानिक संगमो, देवलोक स्थित हेत ।
पूजै जिन प्रतिमांदिते, राज वैसतां तेथ ॥३॥
तिम हिज सुर्याभादि सुर, राज वैसतां तेह ।
प्रतिमां पूतलियादि प्रति, वहु वाना पूजेह ॥४॥
सुर्याभे सुर लोकनीं, स्थितिनां वशथी जांण ।
पूजा जिन प्रतिमां तणीं, कीधी कही पिछाण ॥५॥
वृत्ति उंघ निर्युक्तनीं, तेह विषै एख्यात ।
आचार्य गंध हस्त कृत, छै तिहां वहु अवदात ॥६॥
मिथ्याती वा समकती, विमान अधपति देव ।
देवलोकनीं स्थित हुंती, प्रतिमांदि पूजेव ॥७॥
समदृष्टी पूजै तिमज, मिथ्याती पूजंत ।
देवलोकनीं स्थित वशात, पिण धर्म कार्य नहिं हुन्त ॥८॥

सुर्याभे जिन वान्दियां, प्रभु षट वच आख्यात ।
एह पुराण आचार तुझ, जीत आचार सुजात ॥९॥
यह तुम्हारो कार्य छै, वलि तुझ करवा योग ।
ए तुझनैं आचरणं छै, है मुझ आंण आरोग ॥१०॥
नाटकनीं पूछा करी, तिहां आदर न दियो सांम ।
मनमैं भलो न जाणियो, प्रगट पाठमैं तांम ॥११॥
वलि मौन राखी प्रभू, देखो पाठ प्रसिद्ध ।
जे भाव निक्षेपै आगलै, नाटक आंण न दिद्ध ॥१२॥
वलि मनमैं भलो न जाणियो, ए पिण पाठ मझार ।
आज्ञा विन नहिं धर्म पुराय, देखो आंख उघार ॥१३॥
तो तास स्थापन आगलै, आज्ञा किम दे वीर ।
यह न्यायछै पाधरो, धारो धर चित धीर ॥१४॥

॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय द्रोपदी अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै समकित छतां, द्रुपदसुता अवलोय ।
प्रतिमांनीं पूजा करी, तसु उत्तर हिवै जोय ॥१॥
वृत्ति उंघ निर्युक्तनीं, गंधहस्त कृत मांहि ।
जे इक पुत्र थयां पछै, द्रोपदी समकित पाय ॥२॥

पूर्व कृत निदान करि, प्रेरी छती सुं आय ।
पांच पाराडव त्यां द्रोपदी, कह्यो सुज्ञाता मांय ॥३॥
तीव्र भोग अभिलाप तसु, निदांन विन पूरेह ।
समकित किम पामैंतिका, देखो वर चित देह ॥४॥
दशा श्रुत स्कंध सूत्रमैं, केइक जेह निदांन ।
पून्थां समकित नवि लहै, दुर्लभ बोधी कह्या जान ५
निदांन दोय प्रकार है, न्याय थकी अवलोय ।
द्रव्य प्रते धुर भेदहै, भव प्रत्येय फुन जोय ॥६॥
निदांन द्रव्य प्रत्ये तणां, दोय भेद पहिछाण ।
प्रथम भेद जे मंदरश, द्वितीय तीव्र रश जाण ॥७॥
द्रव्य प्रत्येय मन्दरश तणुं, पूरथां थकांज़ु तेह ।
समकित चारित बेहुं लहै, द्रोपदी नीपरे एह ॥८॥
द्रव्य प्रते तीव्ररश तणां, समकित चरण न पाय ।
दशाश्रुतस्कंध विषैंजवै, दुर्लभ बोधिया थाय ॥९॥
भव प्रत्येय नां भेद बे, धुर मंदरशनूं होय ।
द्वितीय तीव्र रशनु वली, न्याय विचारी जोय ॥१०॥
भव प्रत्येय मंद रश तणां, समकित प्रति पामेह ।
पिण चारित पामैं नहीं, वासुदेव जिम यह ॥११॥
भव प्रत्येय तीव्ररश तणां, समकित नहिं पामंत ।
वलि चारित पामैं नहीं, ब्रह्मदत्त जिम हुन्त ॥१२॥

द्रव्य प्रत्येयनें भव प्रत्येय, मंद तीव्ररश ख्यात ।
तेह न्यायथी संभवै, वलि जाणौं जगनाथ ॥१३॥
ते माटै ये द्रोपदी. निदांन विन पूरेह ।
प्रतिमां पूजी तिण समें, समकित किम पामेह ।१४।
ज्ञाता वृत्ती विषैं कह्युं, येक वाचना मांहि ।
द्रोपदी जिन प्रतिमां तणीं, अरचा कीधी तांहि ।१५।
दीसै यंतोहिज इम कह्यो, तेह वृत्तिरे मांहि ।
नमुंत्थुणं नुं पाठ त्यां, आख्यो दीसै नांहि ॥१६॥

॥ वार्त्तिका ॥

कोई कहै द्रोपदी समकित धारणी प्रतिमां क्यूं पूजी ॥ तेह नुं उत्तर ॥ उंघनिर्युक्तो ग्रन्थ में अभिप्राय द्रोपदी प्रतिमां पूजी तिण वेलयां सम्यक्त धारणी नहीं ते देखाडे छै; "दव्वं मि जिणहरा" इति व्याख्या ॥ उंघ निर्युक्ति रव्याख्येयं ॥ द्रव्यलिङ्गी परिग्रहितानि चैत्यानि किं सम्यगदृष्टीर्न संभावितानि इति कस्मात् द्रव्यलिङ्गी मिथ्यादृष्टीत्वात् ॥ यद्येवं तर्हि दिगम्बर संबंधीनि चैत्यानि किं सम्यक दृष्टी न संभावितानि एतत्सत्यं यद्ये तत्सत्यं तर्हि स्वर्गलोकेषु सास्वतानि चैत्यानि सूर्याभाद्यादेवाः सम्यक दृष्टयः प्रपूज्यंते तच्चैत्यानि संगमवत् अभव्य देवाः मदीयं मिति वहुमानात् प्रपूज्यं ति पुत्री परं विरुद्धं न स्यात् ननुसूर्याभाद्यादेवाः तत्कल्पस्थिति वसानुरोधात् अतः एव विरुद्धं न संभवति यद्येवं तर्हि द्रोपद्या सम्यक्त धारण्यायानि चैत्यानि नमस्कृतानि किं द्रव्यलिङ्गी परिग्रहीतानि न

भवंतीत्याह द्रौपदी न सम्यक्त्व धारणी स्यात ॥ उंघनिर्युक्तथा इत्युक्तं ॥ इत्थी जण संघट्टं तिविहं तिवहेणं वज्ज ए साहु इति वचनात ॥ स्त्री जनस्पर्शो त्रिविधः त्रिविधेन साधूनां वर्जनीयः साधोश्च अकल्पनीयः कर्माचारतः सम्यक्तभावात द्रौपदी आगमेषु श्रूयते ॥ लोमहत्थेयं परामुसई ॥ लोमहस्तेन परामृशति परामार्जयतीत्यर्थः तत परमार्जनेन जिनस्पर्शो जातः जिनस्य स्त्री जनस्पर्शेन आशातनास्यात आशातनात्सम्यक्तभाव अतः एव द्रौपदी न सम्यक्त्व धारणी संभाव्यते पुनः उंघनिर्युक्ति चिरंतन टीकायां गंधहस्त्याचार्येण उक्तं द्रौपद्या नृप पुत्रिका निदान कृति भर्त्तार पंचस्येच्छता निदान भोजितवान जातिक पुत्रः पुनः पश्चात्साधू सकाशमाप्य प्रवरं सम्यक्त्व मार्गो धरंते ॥ इति ॥

॥ एहनुं अर्थ वार्त्तिका करी कहे छे ॥

इहां कह्यो द्रव्य लिङ्गी परिगृहीत चैत्यप्रति प्रतिमां ते स्यूं सम्यक् दृष्टी संभावित नहीं ते किण कारण थकी इसो कोई प्रश्न पूछै तेहनुं उत्तर द्रव्य लिङ्गी मिथ्या दृष्टी छै ते कारण थकी जो इम छै तो दिगम्बर संबंधी चैत्य प्रतिमां स्यूं सम्यक् दृष्टी संभावित नहीं ए सत्य जो ए सत्य तो स्वर्ग लोक नें विषै सास्वता चैत्य सुर्याभादि देवता समदृष्टी पूजै ते माटे ये पूर्वापर विरुद्ध नहीं हुवै कांई एहवी तर्क कीधैं छतैं हिव एहनुं उत्तर कहै छै, सूर्याभादि देव स्वर्ग लोक नें विषै सास्वता चैत्य पूजै ते कल्प देवलोकनीं स्थित वस अनुरोध थकी इण कारज थकी ज विरुद्ध नहीं हुवै जो इम छै तो द्रौपदी समकित धारी चैत्य नें नमस्कार कियो ते स्यूं द्रव्य लिङ्गी परिगृहीत न हुई

कांई एहवीतर्क कीधैं छतैं हिवै एहनुं उत्तर कहे छे । द्रौपदी समकित धारणी न हुई इम कहे छतें वालि पूछयां द्रौपदी समकित धारणी किम नहीं तेहनुं उत्तर उंघनिर्युक्ति नैं विपे इम कह्यो स्त्रीजन नैं स्पर्श साधू नें त्रीविध ३ वरजवो साधू नें अकल्पनीय कर्म आचरवाथकी समकित नुं अभाव हुवै ते कारण थकी साधु नैं स्त्री जननुं स्पर्श त्रांविध ३ वरजवूं द्रौपदी आगम नें विपे सांभली थेछैं "लोमहत्थं परामूसई„ लोमहस्त करिके फरसैं पूंजे इसर्थ, ते पूंजवे करी जिन नूं स्पर्श हुवै जिनने स्त्री जन स्पर्श वे करी अशातनां हुवे आशातनां करिवे करी समकितनुं अभाव इण कारण थकी द्रौपदी समकित धारणी न संभाविपे, वालि उंघ निर्युक्तीनीं चिरंतन टीका नें विपे गन्धहस्त आचार्ये कह्यो द्रौपदी नृप पुत्री निहाणानीं करण हारी तिणे भर्तार पंच नें वरी निहाणो भोगवी येक पुत्र थयां पछे साधू समीपे समकित पामीं एहवो उंघ निर्युक्तीनीं टीका नै विपे गंधहस्त आचार्य कह्या ते मिथ्यात्वनां वस थकी पुस्पादिक करी प्रतिमां पूजी ।

॥ अथ तृतीय निक्षेपा अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै वावीश जिन, तसुं मुनि प्रतिक्रमणेह ॥
किस्युं करै चोवीसथो, द्वितीय आवश्यक जेह ।१।
तसु कहिये महाविदेहनां, मुनि प्रतिक्रमण विषेह ॥
द्वितीय आवश्यक स्यूं करै, न्याय विचारी लेह ।२।

नहीं तिहां अवशर्पणी, उत्सर्पणी पिण नांहि ॥
ते माटे नाहिं षट अरा,सम अद्धा कहि वाहि ॥३॥
तिहां अनन्ता शिवगया, जासे मुक्ति अनन्त ॥
मेल नहीं चोवीश नुं, देखोजी बुद्धिवन्त ॥४॥
इक इक विजय विषै वली, येक येक जिनराज ॥
वर्त्तमान काले हुवै, उत्कृष्ट पणें समाज ॥५॥
हिव ते क्षेत्र विदेह नां, जिनथया सिद्ध अनन्त ॥
तसुं वांदयां चौवीश नीं, संख्या नथी रहन्त ॥६॥
थासे सिद्ध अनन्त जिन, तसुं बंदे जे कोय ॥
तो पिण जिन चोवीस नीं, संख्या न रहै सोय ॥७॥
विजय विषै ज्यो वर्त्तता, बंदै इक जिनराय ॥
तो पिण जे चोवीसत्थो, किण विध कहिये रहाय ॥८॥
विदेह क्षेत्रनां मुनि करै, द्वितीय आवश्यक जेह ॥
विचला जिन बावीसनां, मुनि पिण तिम हिज करेह ॥९॥
बे टक नूं तसु नियम नहीं, पिण ज्यो किणहिक वार ॥
पडिक्कमणा में स्युं करै, द्वितीय आवश्यक सार ॥१०॥
ज्ञाता अध्ययनें पंच में, शेलक ऋषिनां पाय ॥
पंथक पडिक्कमणो करत, वांद्या आख्या ताय ॥११॥
ते माटै जे जिन हुवै, तेह तणों ले नांम ॥
द्वितीय आवश्यक नुं तदा, नाम उक्कित्ता तांम ॥१२॥

जिन चौवीस तणों जिहां, नियम नहीं छै तांम ॥
तिण सुं चोवीस्था तणौं स्थान उत्कीर्तन नांम ॥१३॥
अनुयोग द्वार विषे अमल, आवश्यक षट मांय ॥
अर्थ तणां अधिकार षट, आख्या श्री जिन राय॥१४॥
द्वितीय आवश्यक नै विषे, उत्कीर्तन आख्यात ॥
कह्यु अर्थ अधिकार यें, जिन गुन नांम विख्यात ।१५।
विदेह क्षेत्र मैं मुनि तणौं, द्वितीय आवश्यक जांन॥
स्व स्व जिन गुन नांम ते, उत्कीर्त्तन अभिधान ॥१६॥
जेह विजय नहीं जिन तदा. द्वितीय आवश्यकमांहि॥
पूर्व जिन गुन नांम ते, इसो संभवै ताहि ॥ १७ ॥
विचला जिन बावीसनां, मुनि नैं स्वजिन नांम ॥
उत्कीर्त्तन अभिधान तसु, द्वितीय आवश्यक तांम१८
धुर जिन नां मुनि ले तिमज, स्वजिन गुन फुन नांम॥
द्वितीय आवश्यक संभवै, उत्कीर्त्तन अभिरांम ।१९।
वा धुर जिननां मुनि तणौं, चोवीस्थो ज्यो होय ॥
तो गत चौवीसी हुई, जाणौं केवली सोय ॥ २० ॥
थया नहीं चोवीस जिन, तसुं बारै अवलोय ॥
द्वितीय आवश्यक नैं विषैं, चोवीस्थो किम होय ।२१।
चोवीसमां शाशण धणीं, तेहतणीं अपेक्षाय ॥
आख्युं छै चोवीस्थो, द्वितीय आवश्यक मांय ॥२२॥

द्वितीय आवश्यक नां कह्या, उभयनाम अवलोय ॥
उक्कीत्तन चोवीस्थो, तसु हेतु हिव जोय ॥ २३ ॥
पंचम् अङ्ग धुरकह्यु, इन्द्रभूती सुप्रसिद्ध ॥
वृत्ति विषैं कह्यो नांम ये, मात पितानूं दिद्ध ॥२४॥
गौतम गौत्र करि तसु, गौतम नांम कहाय ॥
उत्तराध्ययन तेवीस मैं, गाथा छट्टी मांय ॥२५॥
तिम जिनवर चोवीसमां, तसु वारै अवलोय ॥
गुणौं नांम चोवीस जिन, ते चोवीस्थो होय ॥२६॥
ते चोवीस्था नैं विषैं, उत्कीरतन अभिराम ॥
अर्थ तणां अधिकार छै, पिण मुख्य चोवीस्थो नांम २७
विदेह क्षेत्र मैं वीस जिन, तसुं मुनि स्व जिन नांम ॥
अर्थ तणां अधिकार करि, ते उत्कीर्तन तांम ।२८।
सूत्र उववाई नैं विषै, तपनां द्वादश भेद ॥
तृतीय भेद भिक्षाचरी, वारु नाम संवेद ॥ २९ ॥
समवायंग विषै कह्या, बारे भेद अभिराम ॥
भिक्षाचरी नैं स्थान जे, वृत्ति संक्षेप सु नांम ॥३०॥
भिक्षाचरीनां नाम बे, द्वितीय आवश्यक तेम ॥
उत्कीर्तन चोवीस्थो, उभय नाम तसुं एम ॥३१॥
नवमां जिननां नांम बे, सुविध अनें पुफदन्त ॥
आख्या लोगस मैं प्रगट, देखोजी बुद्धिवन्त ॥३२॥

पुष्प सरिसा दन्त तसु, पुष्प दन्त अभिराम ॥
इम अर्थ तणां अधिकार करि, उत्कीर्त्तन पिण नाम ३३
कृष्ण अनें बलभद्र नौं, केशव रांम आख्यात ॥
उत्तराध्ययन बावीसमैं, तिम द्वितीय आवश्यक ख्यात
किहां च्यार महा व्रत कह्या, तास कह्या चिहुं याम ॥
उत्तराध्ययन तेवीस मैं, केशी मुनि गुण धाम ॥३५॥
द्वितीय आवश्यकनां तिमज, उभय नांम अवलोय ॥
उत्कीर्त्तन चोवीस्थो, सहु भावे जिन जोय ॥३६॥
चोवीशम जिननां मुनी, करे चोवीस्थो तांम ॥
विदेह तेवीस तणां मुनी, उत्कीर्त्तन जिन नांम ।३७।
सुभ्क नें स्थासे यहवा, बारूं न्याय विचार ॥
वलि केवली जे वंदे, तेहिज सत्य उदार ॥३८॥
भाव निक्षेपे भर्त्तनीं, चोवीसी वर्तमान ॥
पाठ वंदे बहु ठाम छै, लोगस मांहि सुजान ।३६।
भाव निक्षेपे ऐरवत, चोवीसी वर्तमान ॥
पाठ वंदे बहु ठाम छै, समवायंगे जान ॥ ४० ॥
चोवीसी भरत ऐरवत, अनागत जिन नांम ॥
द्रव्य निक्षेपो तुर्य अङ्ग, वंदे पाठ न तांम ॥४१॥
अष्ट अनें चालीश नां, वर्तमान जिन नांम ॥
भाव निक्षेपो ते भणीं, पाठ वंदे बहु ठांम ॥ ४२॥

अष्ट अनैं चालीसनां, अनागत जिन नांम ॥
द्रव्य निक्षेपो ते भणी, वंदे टाल्यो सांम ॥ ४३ ॥
द्रव्य निक्षेपै यह जिन, गणधर वंद्यां नांहि ॥
तो चोवीस्थो करतां छतां, द्रव्य जिन किम वंदाहि ४४
तीर्थंकर घर मैं छतां, द्रव्य निक्षेपै जेह ॥
तेहनैं मुनि वंदै नहीं, तुझ लेखै पिण तेह ॥ ४५ ॥
तो होणहार जिनवर भणी, चोवीस्था विषेह ॥
मुनिवर किम वंदै तसुं, न्याय विचारी लेह ॥४६॥
वलि कह्यो अनुयोग द्वार मैं, जे आवश्यक नूं जांण ॥
हस्यै पिण न थयो हजी, ते द्रव्य आवश्यक पिछांण
तिम जे कोई इक मुनि हुस्ये पिण हिवडां ग्रहस्थ पणेह
कहिये द्रव्य साधू तसुं, आवश्यक वत् येह ॥ ४८ ॥
जो वन्दो द्रव्य निक्षेपनैं, तो तिण द्रव्य मुनींरा पाय॥
तुम्हे वंदता क्युं नथी, तुम्ह श्रद्धारै न्याय ॥ ४९ ॥
चौवीसी वर्तमान नैं वन्दे बहु ठमेय ॥
अनागत वांद्या नथी, देखो तुर्य अंगेय ॥ ५० ॥
तृतीय निक्षेपो द्रव्य तसुं, गणधर वंद्यो नांहि ॥
तो द्वितीय निक्षेपो स्थापनां, किम वंदीजे ताहि ॥५१॥
द्रव्य तीर्थंकर कृष्णथा, दीधा नेम बताय ॥
नेम तणां साधु साध्व्यां, त्यां क्युं नहीं वंद्या पाय५२

उलटो कृष्ण भणी तिणां, दीधो पगां लगाय ॥
तो चोवीस्थो करतां छतां, किम बंदै मुनिराय ॥५३॥
द्रव्य जिन श्रेणिक नृप हुंतो, दीधो बीर बताय ॥
बीर तणां साधु साध्वियां त्यां क्युं नहिं वंद्याणाय ५४।
तीर्थंकर बंदन तणुं, तसुं राणयां रै चाहि ॥
तो कृष्ण अनें श्रेणिक तणां, त्यां क्युं नहिं बंद्या याहि।
उलटी करी विडम्बना, जाणीं नैं भरतार ॥
तो चोवीस्थो करतां छतां, किम बंदै अणगार ॥५६॥
जिन बंदै तिहुं कालनां, नमोत्थूणं रै अंत ॥
किणी सूत्र मैं ते नहीं, देखोजी बुद्धिवंत ॥ ५७ ॥
जे कोई जीव अजीव नूं, नांम आवश्यक देह ॥
ते आवश्यक नों प्रभु, नांम निक्षेप कहेह ॥५८॥
अनुयोग द्वार विषे इसो, प्रगट पाठ पहिछाण ॥
तिम हिज तीर्थंकर तणूं, नांम निक्षेपो जांण ॥५९॥
जिम कोई जीव अजीव नूं, ऋषभ नांम छै जेह ॥
ऋषभ देव भगवान नों, नांम निक्षेपो तेह ॥ ६० ॥
जो वांदो नांम निक्षेप नैं, तो तिण ऋषभारा पाय ॥
क्युं नहिं वांदो छो तुम्हे, तुम्ह श्रद्धा रै न्याय ॥ ६१ ॥
किणरो नांम दियो वली, अरिहंत नें भगवान ॥
नांम अरिहंत बंदो तुम्हे, तो क्युं नहिं बंदो जान ।६२।

सिद्ध निरंजन नाम पिण, दीसै बहु जग मांहि ॥
नाम सिद्ध वंदो तुम्हे, तो क्युं नहिं वंदो पाहि ॥६३॥
केईक मनुषांरा कारटा, ते पिण बाजै आचार्य ह्हाय ॥
वंदो नाम आचार्य तुम्हे, तो क्युं नहिं वंदो पाय ।६४।
केईक ब्रह्मण लोक में, बाजै छै उपाध्याय ॥
नाम उपाध्याय वंदो तुम्हे, तो क्युं नहिं वंदो पाय।६५।
जोगी संन्यासी प्रमुख, साधू नाम कहाय ॥
नाम साधु वांदो तुम्हे, तो क्युं नहिं वंदो पाय ॥६६॥
ज्ञान दर्शन चारित्र नां, गुण नहीं छै जे म्हांय ॥
तेह वंदवा योग किम, निमल विचारो न्याय ॥६७॥
कोई कहै आचार्यनां, उपाध्यायनां ताहि ॥
उपग्रण नीं आशातनां, कहिं टालवी कांहि ॥६८॥
ज्ञान दर्शन चारित तणां, तेह उपधिरे मांहि ॥
कहवा गुन छै ते भणीं, उपधि संघटवुं नांहि ॥६९॥
नवमें दशवै कालिकै, द्वितीय उद्देशे ख्यात ॥
इम कहै उत्तर तेहनुं, सांभल जो अवदात ॥७०॥
सूत्र विषै तो इम कह्यो, गुरू कायाइं करेह ॥
तिम हिज गुरूनां उपाधि करि, संघटे थये छतेह ।७१।
मुझ अपराध खमों तुम्हे, वलि न हूं करूं कोय ।
इम भाषै सुविनीत शिष्य, तास न्याय हिव जोय ७२

आचार्यनां उपधि ए, तास प्रयोगे आय ।
जिम गुरु कै सहवर्त्ती तनुं, तेम उपधि पिण होय ७३
भाव निक्षेपै गणपती, तास उपधि तनुं जेम ।
तासु संघट्टथयां खामवुं, आख्यूं सूत्रे एम ॥७४॥
थयुं वलि अपराध मुझ, खमूं तुम्हे अवलोय ।
ए वच प्रत्यक्ष गुरू तणौं, न्याय विचारी जोय ॥७५॥
जो खमायवो हुवै उपधिनैं, तो देखो चित देह ।
वंदना करी खमायवे, उपग्रण स्युं जाणेह ॥७६॥
येतो उपधि सहितजे, आचारजनीं जोय ।
कही अशातना टालवी, नथी अन्यथा कोय ॥७७॥
सयनाशन गणपति तणां, तास संघट्टवूं नांहि ।
ते हिज आचार्य विहार करि, गया हुवै जो ताहि ७८
सयणाशण तेहिज तव, शिष्य सेवेकै नांहि ।
भोगवियां आशातना, लागे कै नहिं ताहि ॥७९॥
जे पृथिवी शिल ऊपरे, बैठा श्री भगवान ।
कालान्तर गोयम सुधर्म, बैठेकै नहीं जान ॥८०॥
छायागणीनां तनु तणीं, शिष्य अक्रमीं तास ।
चाले कै चाले नहीं, जोवो हिये विमास ॥८१॥
तुझ लेखे छाया भणीं, आक्रमवूं पिण नांहि ।
संघटो पिण करवुं नहीं, गुरू छायानुं ताहिं ॥८२॥

ते माटे ए स्थापना, वंदन योग न होय ।
ज्ञान दर्शन चारित तणां, तिणमें गुण नहिं कोय ८३
अथवा आचार्य्य तणां, पगला तणीं पिछाण ।
तुम्हे करोछो स्थापना, तेहनें वंदो जांण ॥८४॥
तो चाले गुरु केड शिष्य, गमन करंता जोय ।
धरती ऊपर गुरू तणां, पगला मंडे सोय ॥८५॥
शिष्यना पगते ऊपरे, पडियां दंड स्युं आय ।
बन्दनीक पगला कहो, ते लेखे दंड पाय ॥८६॥
चारित सहित जे गुरू भणीं, वंदे तीर्थ च्यार ।
काल कियां तसु कायनें, भस्म करें तिह वार ।८७।
ज्ञान दर्शन चारित तणां, तिणमें गुण नहीं कोय ।
तिणसुं दहन कृया कियां, अशातना नहिं होय ८८
करी स्थापना तेहनें, बांद्यां कहोछो धर्म ।
तो ए आगे तनु बालियां, लागे आशा तनाकर्म ८९
आवश्यकनों जाणथो, काल कियो तिहवार ।
द्रव्य आवश्यक तनु कह्यो, देखो अनुयोग द्वार ९०
तिम मुनि काल कियां छतां, जीव रहित जे देह ।
द्रव्यसाधु कहिये तसु, न्याय विचारी लेह ॥९१॥
बंदनीक द्रव्य मुनि कहो, तो तुझ लेखे हाय ।
द्रव्य साधु बाल्यां छतां, अशातना पिण थाय ।९२।

जम्बू द्वीप पन्नतीमें कह्यो, जिन जनम्यां सुर राय।
जन्म भुवन जिनवर तणां, तसुं प्रदक्षणा दे आय ९३
जिननैं वा जिनमात प्रति, प्रदक्षणा त्रण वार।
देई कर जोडी करी, वंदै शक्र अवधार ॥९४॥
हे धरण हारी रतन कूंक्षिनीं, थावो तुझ नमस्कार।
इह विध सुरपति ऊचरै, ए पिण जीत आचार ।९५।
इण लेखे मरु देवी प्रति, इन्द्र कियो नमस्कार।
पिण समकित किणपै लही, वारूं न्याय विचार ।९६।
ग्रहस्थ पणैं जिन जनकनां, पद प्रणमैं अव लोय।
लौकीक हेतै जाणवुं, धर्म हेतु नहिं कोय ॥९७॥
ज्ञाता अध्ययन आठमैं, मल्लिनाथ भगवान।
लागी पगां पिता तणैं, लौकिक हेतै जान ॥९८॥
मल्लिनाथ थया केवली, तठा पछै मा तात।
वांणि सुणीं श्रावक थया, पाठ विषे अवदात ॥९९॥
इण लेखै मल्लिनौं पिता, पहिलां श्रावक नांहि।
तास पाय प्रणम्यां मल्ली, धर्म नहीं तिण मांहि ।१००।
तिम हिज द्रव्य जिनवर भणीं, इन्द्र करै नमस्कार।
ए तसुं जीत आचारछै, श्रीजिन आज्ञा बार ॥१०१॥
जीवरहित जिन देहते, द्रव्य जिन तास कदेह।
ते वंदनीक किण विध हुवै, न्याय विचारी लेह १०२

जो वंदनीक ते द्रव्य हुवे, तो तुम लेख कहेह ।
तन्तु शबे द्रव्य कियां छतां, आशातन लागेह ॥१०३॥
ज्यो द्रव्य निक्षेप वंदो तुम्हे, तो जमाली आदि ।
द्रव्य साधु कहिये तहुं, वंदो क्यूं न संवाद ॥१०४॥
भावे ते साधू हुंतो, सेव्यो तिण अणाचार ।
भाव निक्षेपो तहुं गयो, के गयो द्रव्य जिवार १०५
मुनि वेसें सेव्यो तिणें, अणाचार अनपार ।
ते द्रव्य मुनि वंदोके नहिं, धर्म हेत धर प्यार ॥१०६॥
कृष्णादिक नरकें पड्या, द्रव्य जिनवर कहि वाहि ।
भावें कहिए नेरिया, वंदनीक ते नांहि ॥१०७॥
तीर्थंकर जनम्यां पछे, ते पिण द्रव्य जिनराय ।
भाव निक्षेपें तेहनें, ग्रहस्थी कहिये त्हाय ॥१०८॥
तीर्थंकर दीक्षा लियां, तहुं द्रव्य जिन कहिवाय ।
भावे ते मोटा मुनी, वंदनीक तहुं थाय ॥१०९॥
चौतीस अतिशय उपना, वाणी गुण पेंतीस ।
केवल ज्ञान थयां पछे, भावे जिन जगदीश ॥११०॥
वंदनीक भावे मुनी, वलि भावे जिनराय ।
उत्तम ते जाणियां थकां, पातिक दूर पुलाय ॥१११॥

॥ इति निक्षेपाधिकार ॥

॥ अथ चतुर्थम् अम्बडाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहे अम्बड कह्युं, अरिहन्त तिण अवलोय ।
वलि अरिहन्तनां चैत्य विन, नथी वंदवा मोय ॥१॥
प्रथम उपाङ्ग विषे इसो, आख्यो श्री जिनराय ।
ते अरिहंत नां चैत्य कुण, तसुं उत्तर कहिवाय ॥२॥
अरिहंत तो धुरपद विषै, प्रतिमां चैत्य कहाय ।
तो मुनिवर नहीं वंदवा, अन्य वर्ज्या तिणन्याय ३
मुनि पद तो है पंचमों, ते धुरपद में नहीं आय ।
तिण कारण अरिहन्तनां, चैत्य मुनी कहिवाय ॥४॥
जिन प्रतिमां जिन सारसी, तुम्हे कहो तिण न्याय ।
प्रतिमां तो धुरपद हुई, मुनि धुरपद नहीं आय ५
अरिहन्त तो ए देवहैं, अरिहंत चैत्य सु संत ।
तेह गुरु ए देव गुरु, विना न अन्य वंदंत ॥ ६ ॥

॥ इति ॥

॥ अथ पञ्चम् आनन्दाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै आनन्द कह्यो, अनतीर्थक संग्रहीत ।
अरिहंतनां जे चैत्य गते, वन्दू नहीं प्रतीत ॥ १ ॥

एह सातमां अङ्गमैं, दाख्यो गणधर देव ।
ते अरिहन्तनां चैत्यकुंण, उत्तर तासु कहेव ॥२॥
आनन्द कह्युं अण तीर्थनैं, अणतीर्थक नां देव ।
अन्यतीर्थक परिग्रहीत जे, अरिहंत चैत्य कहेव ३
ए तीनूं नैं वंदना, करवी कल्पै नांहि ।
नमस्कार करिवूं नहीं, ए तीनूं नैं ताहि ॥४॥
पहिलां बोलाव्यां बिनां, बोलूं नहीं इकवार ।
बार बार बोलूं नहीं, नहीं आपूं तसु आहार ।५।
चैत्य इहां प्रतिमा हुवै, तो बोलावै केम ।
वलि आपै अशणादि किम, न्याय विचारो एम ६
कोई कहै तसु देवनैं, किम बोलावै ताय ।
वलि अशणादिक किमदिये,निमल सुणो तसु न्याय७
पुत्र सुजेष्टा नूं कह्यो, महादेव तसु देव ।
नवमैं ठाणैं अर्थमैं, ते वीर थकां स्वय मेव ॥८॥
चेडाराजानीं सुता, तेह सुजेष्टा जांण ।
तिण कारण तसु देवते, विद्यमान पहिछाण ।९।
तेहनैं बोलावै नहीं, वलि नहीं आपै आहार ।
वलि चैत्य मुनी अरिहन्तनां, भ्रष्ट थया तिण वार १०
ते अन्य तीर्थिकमैं जई मिल्या,अन्य तीर्थिक पिण तास
ग्रहण किया निजमत विषै,अन्य तीर्थिक ग्रहित विमास११

नहीं बोलावूं तेहनैं, वलि नहीं आपूं आहार।
अभिग्रह ए आनन्द लियो, वारूं न्याय विचार।१२।

॥ इति ॥

अथ षष्टम् जंघा विद्याचारणाधिकार।

॥ दोहा ॥

कोई कहै मुनि लब्धिधर, जंघा विद्याचार।
जावै रुचक नन्दीश्वरैं, वन्दै चैत्य तिंवार ॥ १ ॥
वीसम शतकै भगवती, नवम उद्देश विपह।
प्रभु आख्या ते चैत्य कुंण, उत्तर तास कहेह ॥२॥
जंघा विद्या चारणा, रुचक नन्दीश्वर जाय।
तिहां वन्दै पाठछै, पिण नमंसई नांहि ॥ ३ ॥
मानुषोत्तर गिरी विषे, कूंट च्यार आख्यात।
नथी कह्यु सिद्धायतन, तूर्य ठाण अवदात ॥४॥
वृत्ति विषै द्वादश कह्या, तिहां देवता वास।
आख्यापिण सिध्दायतन, कूंट कह्यो नहीं तास ॥५॥
तिहां चैत्य वन्दै किसा, तिणसूं चैत्य सुज्ञान।
करै तास गुन ग्राम अति, देखीनैं जे स्थान ॥६॥
धन भगवन्त नौं ज्ञान ए, धन्य भगवन्तरो ज्ञान।
जेम कह्यु तिमहिज सहु, इम करै स्तुती जान।७।

नमंसई तिहां पाठ नहीं, वन्दई पाठज येक ।
तेहनुंछै स्तुती अर्थ, देखो धर सु विवेक ॥८॥
प्रश्न हजारां पूछिया गोयम पञ्चम अङ्ग ।
तिहां वन्दई नमंसई छै विहुं पाठ सुचङ्ग ॥ ६ ॥
एतो छै अति अजब गति, रुचक द्वीप लग जाहि ।
तिहां नमंसई पाठ नहीं, नमो त्थूणं पिण नांहि ॥१०॥
श्रावक तुङ्गियां नां प्रवर, आया स्थिवरां पास ।
तिहां वन्दई नमंसई, उभय पाठ गुण रास ॥११॥
जो प्रतिमां बन्दन गया, तो करता नमस्कार ।
नमोत्थूणं गुणाता वलि, देखो हृदय विचार ॥१२॥
तथा चैत्यने जिन बहू, तेह तणां गुण गाय ।
धन्य प्रभू २ इमकहे तसुं, सत्य वचन सुख दाय ॥१३॥
कोई कहै प्रभूजी भणीं, चैत्य किहां आख्यात ।
उत्तर तेहनैं आखिए, सुणज्यो सुगण सुजात ॥४१॥
सूर्याभे मन चिन्तव्युं, कल्याण कारी स्वाम ।
दूरितोपसम कारी थकी, मंगलीक अभिराम ॥५१॥
तीन लोकनां अधपति, तिणसुं देवत नांथ ।
हेतु सुप्रसन्न मनतणां, तिणसुं चैत्य आख्यात १६
राय प्रशेणी वृत्तिमैं, चैत्य अर्थ जिन ख्यात ।
तेमाटै इहां संभवै, वहु जिनगुण अवदात ॥१७॥

बहु जिनेन्द्र वा जिनकहे, रुचक नन्दीश्वर मांहि ।
भाव कह्या तिमहिज सहु, देखि हिये हुलसाय १८
धन्य जिनेन्द्र धन्य केवली, गिरी कुंटा दिकजेह ।
जेम कह्या तिम हीज ए, इम तसुं स्तुति करेह॥१६॥
तेमाटे इहां चैत्यंते, बहु जिन कहिए सोय ।
वन्दई तसु स्तुती करै, एह अर्थ पिण होय ॥२०॥
विन आलोयां ते मुनी, काल करै जो कोय ।
तास विराधक प्रभु कह्यो, पाठ विषै अवलोय ॥२१॥
जब को तर्क करै इसी, दिसां गोचरी जाय ।
पाछा आवी पडिकमैं, ईर्या वही मुनिराय ॥२२॥
तिम ए पिण आवीकरी, ईर्या वही गुणेय ।
तासु उत्तर कहीजिये, सांभलज्यो चित देय ।२३।
दिसां गोचरी मुनी जई, आवंतां कियोकाल ।
तेह विराधक नहीं हुवै, जोवो नयण निहाल ।२४।
जंघा विद्याचारणा, काल कियां अन्तराल ।
तास विराधक प्रभु कह्या, नथी आराधक न्हाल २५
तिणसुं ईर्या वही तणुं, नथी मिलै ए न्याय ।
लब्धि फोड़वी तेहनौं, दंड कह्यो जिनराय ।२६।

॥ वार्त्तिका ॥

कोई कहै जंघाविद्याचारण लब्धि फोडी नैं नन्दीश्वर द्वीपे जाय ते आलोयां विना मरै तो विराधक कह्यो ते आलो-

घणां ईर्यावही नी कही छै दिसां गोचरी जाय तेहनी पिण ईर्या वही गुणें तिम ए पिण लब्धि फोड़नें नन्दीश्वर द्वीपगया तेहनी पिण ईर्या वही जाणवी इम कहै तेहनें कहिणो इम ईर्यावही गुण्या विना विराधक हुवै तो गोचरी पिण जाणों नहीं कदा ठिकाणे आयां विना पहिलां मरिजाय तो विराधक हुवै, वालिगाम बाहिर दिसां जाणों नहीं । विहार करणों नहीं । पडिलेहणा करणी नहीं । क्षण भंगूर काया है सो ईर्यावही गुणियां विना पहिलां ही मरजाय तो विराधक होवणो पड़े ते माटे; साधू गोचरी गयो पाछो आवतां वीच मैं काल करै ईर्यावही पडिकमियां विना जब तो ओ पिण विराधक हुवै; इम विहार करतां विचै ईर्यावही पडिकम्यां विना काल करै तो उणरी श्रद्धारे लेखै ओ पिण विराधक हुवै, इम तो पडिलेहणा कियां पछै अथवा विचै ईर्यावही पडिकमियां विना काल करै तो उणरी श्रद्धारै लेखै ओ पिण विराधक हुवै, धर्म कारणें जातां धर्म कारणे आवतां ईर्यावही पडिकमियां विना काल करै तो उणरै लेखै ओ पिण विराधक हुवै, जद तो तीर्थंकर नें वांदवा जातां आवतां ईर्यावही पडिकमियां विना काल करै तो उणरै लेखै ओ पिण विराधक, अरिहन्त गणधर आचार्य उपाध्याय महामोटा पूर्वां नें वाले साधू साध्वियां नें वांदण जातां नें आवतां ईर्यावही पडिकमियां विना काल करै तो उणरै लेखै ओ पिण विराधक; इम इत्यादिक अनेक कार्य कियां ईर्यावही पडिकमवी छै, जद ते पिण कार्य करतां ईर्यावही पडिकमियां विना काल करै तो उणरै लेखै ओ पिण विराधक, इम ईर्यावही पडिकमियां विना विराधक हुवै छै तो साधू नें पहिलां हीज ईर्यावही पडिकमवा

वालो कार्य करणो हिज नहीं, तथा पडिलेहणा कियां पछै अथवा विचै ईर्यावही पडिकमियां विना काल करै तो उणारै लेखै ओ पिण विराधक हुवै, इम विहार करतां विचै ईर्यावही पडिकमियां विना मरै तो उणारै लेखै ओ पिण विराधक हुवै, जो इम विराधक हुवै जद तो तीर्थंकर नें वन्दवा जातां नें आवतां विचै ईर्यावही पडिकमियां विना काल करै तो उणारै लेखै ओ पिण विराधक हुवै, अरिहन्त गणधर आचार्य उपाध्याय महा मोटा पुरुषां नें वलि साधू साध्वियां नें वन्दवा जातां नें आवतां विचै काल करै तो उणारै लेखै ओ पिण विराधक छै; इम ईर्यावही पडिकमियां विना विराधक हुवै तो साधांनैं पहिलां हीज ईर्यावही पडिकमवारो कार्य करणो हीज नहीं, इण श्रद्धारै लेखैतो साधूनैं हालवो चालवो इत्यादि क्युंही कार्य करणो नहीं, अरिहन्तनैं भगवन्तनैं तीर्थंकरनैं गणधरनैं आचार्य नैं उपाध्याय नैं महा मोटा पुरुषां नैं साधां नैं साध्वियां नैं किणही नैं वन्दवा जाणो नही कदा विचैही काल करै तो विराधक पणो थायछै आउखारो भरोसो छै नहीं तिणसूं, उणारी श्रद्धा रै लेखैतो धर्मरो कार्य करणो नैं कठेही जाणो नहीं जातां नैं आवतां ईर्यावही पडिकमियां विनामरै तो विराधकपणो थायछै, इण श्रद्धारैं लेखै तो शाशन सर्व ऊठजावै यतो महा विपरीत श्रद्धा छै; अरिहन्त भगवन्त तो यूं कह्यो छै साधू चारित्रयानें कर्मयोगें अनेक भारी कार्य कीधा छै मोटा मोटा दोष सेव्या छै पछै गुरू कनैं अनेक कोसां लगे आलोवण चाल्यां छै कदा गुरू पासै नहीं पूगा विचै ही आलोयां विना काल करै तो तिणनैं भगवन्त आराधक कह्यो छै, तो जंघा चारण नें विद्या चारणनी ईर्यावही पडिकमवारी

सरधा नहीं थी कांई? ये विराधक किसे लेखै हुवै तो ऐसा ये कांई भोलाछा अनें वलि यां रै ईर्यावही पडिकमवारी सरधा न हुवे, तो गोचरी दिसां विहार प्रमुखनी गुरु कनें आज्ञा मांगे तो आज्ञा पिण देणी नहीं विचमें मरिजायतो विराधक हुवे, वलि नन्दी उतरवारी पिण आज्ञा मांगे तो आज्ञा देणी नहीं विचें मरिजायतो विराधक हुवे ते वारै नीकलियां पहिलांही ईर्यावही तो न गुणी इमजो विराधक हुवे तो नन्दी उतरतां मोक्ष किम जाय; सागारी संथारो पचखी नावामें वैसै एहवुं आचाराङ्ग अध्येयनै तीसरै कह्यो छै, जो ईर्यावही गुणियां विना विराधक हुवे तो नावा में सागारी संथारो पचखी किम वेसें, वलि नन्दी उतरवारी साधांनें भगवान आज्ञा दीधी अनें गोचरी प्रमुखनीं पिण आज्ञा दीधी छै तिणसुं नन्दी नावा उतरतां गोचरी प्रमुख पूर्वे कार्य्य कह्या ते करतां मरै तो अथवा गोचरी प्रमुख कार्य्य करी ठिकाणें आयां ईर्यावही गुण्यां पहिलां मरैतो आराधक पिण विराधक नहीं।

॥ दोहा ॥

धर्म हेतु हिन्सा कियां, तुम्हे दोष कहो नांहि ॥
पुष्पादिक आरंभ में, धर्म कहो छो ताहि ॥२७॥
तो यात्रा करवा भणीं, लब्धि फोडवी जेह ॥
धर्म हेतु ए कार्य नों, किम प्रभु दण्ड कहेह ॥२८॥
यात्रा अर्थे लब्धि जे, फोडवियां दण्ड आय ॥
तो पुष्पादिक कार्य मैं, धर्म पुण्य किम थाय ॥२९॥

॥ इति ॥

॥ अथ सातमों धर्मार्थ हिन्सा न गिणों तेहना उत्तर नुं अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै धर्म कारणें, जीव हणैं जो कोय ॥
पाप न लागै तेहनैं, हिव तसु उत्तर जोय ॥ १ ॥
देवल प्रतिमां कारणैं, हणै जु पृथिवी काय ॥
मन्द बुद्धि तेहनैं कह्या, दशमां अङ्गरे म्हांय ॥२॥
अर्थ धर्म नैं हेते हणें, मन्द बुद्धि कह्या तास ॥
ए पिण दशमां अङ्ग मैं, प्रथम अध्येयन बिमास ॥३॥
जन्म मरण मूंकायवा, हणैं जे पृथिवी काय ॥
कह्या अहेत अवोध तसुं, प्रथम अङ्गरे म्हांय ॥४॥
धर्म हेतु जंतू हणैं, दोष इहां नहीं कोय ॥
ए अनार्य नूं वचन, आचाराङ्ग जोय ॥ ५ ॥
जिनाला सावद्य सहु, वचन मात्र पिण सोय ॥
मुझ नें आचरवा नहीं, प्ररुपवा नहीं कोय ॥६॥
महानिशीथरै पंच मैं, कमल प्रभाः इम ख्यात ॥
सावद्य पाप सहित मैं, धर्म पुण्य किम थात ॥७॥
ग्रन्थ संघ पट्टक कियो, जिन बल्लभ सुरेण ॥
जिन प्रतिमां यात्रा भणीं, किस्यूं कह्यो छै तेण ॥८॥

लोहना कांटा ऊपरें, मान्स डली प्रति ताहि ॥
मूंकी पकडै मीननैं, धीवर नर जग मांहि ॥९॥
तिम जिन बिम्ब जिन नाम करि, मुग्ध लोक जेमीन।
जिन यात्रादि उपाय करि, कुगुरु ठगत मत हीन।१०।

॥ काव्य ॥

अत्र जिन वल्लभ सूरिकृत संघ पट्टानीं काव्य ॥
आकृष्टुं मुग्धमीनान् बडिशपिशितवद्बिम्बमाद-
र्श्य जैनं ॥ तन्नाम्ना रम्यरूपान पवर कमठान्
स्वेष्ट सिद्ध्यै विधाप्य ॥ यात्रा स्नात्रोद्युपायै र्नम-
सितक निशा जागराद्यै श्छलैश्च । श्रद्धालुर्नामजै-
नै श्छलित इव शठै र्वंच्यतेहाजनोऽयम् ॥२१॥

॥ दोहा ॥

भस्म ग्रह करिके वली, दशम् अछेर करेह ॥
मिथ्या मत कहुं संघपट्ट, जिन वल्लभ सूरेह ॥११॥
इन्दू बिम्ब प्रतिवाल बिन, ग्रहवूं कुण बंछेह ॥
तृतीय काव्य भक्तामरे, न्याय विचारी लेह ॥१२॥
तिम हिज जे जिन बिम्ब प्रति, जिन जाणी नैं जेह ॥
बाल अजाण विना कँवण, अङ्गीकृत करेह ॥१३॥
द्रव्य पूजा सावद्य छै, के निरवद्य आख्यात ॥
उत्तर हिये विचारिये, छोडी नैं पक्षपात ॥१४॥

निरवद्य छै तो मुनि करै, गृही सामाईक म्हांय ॥
ते पिण द्रव्य पूजा करै, तुम्ह श्रद्धारै न्याय ॥१५॥
जो सावद्य द्रव्य पूजा हुश्रै, तिण सूं मुनि न करेह॥
तो सावद्य मांही धर्म पुन्य, केम कही जे तेह ॥१६॥
आरंभ जे छकाय नूं, पचण पचावण जास ॥
निज वा पर अर्थे किया, निन्दू गरहूं तास ॥१७॥
इम कह्युं वन्देतू विषैं, सप्तम गाथा जोय ॥
तो साहम्मी वच्छल विषैं, धर्म पुण्य किम होय ॥१८॥

॥ इति ॥

॥अत्र वन्देतु नीं गाथा॥ छकाय समारंभे, पयण पयावण जे दोसा ॥ अत्तट्ठा परट्ठा ए, उभयट्ठा चेव तं निन्दे ॥ ॥ इति ॥

॥ अथ आठमों सुर्याभाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै सुर्याभसुर, प्रतिमा पूजी तांम ॥
तिहां हित सुत्तम पाठ है, निसेस्सा ए अनुगाम ॥१॥
ते निसेस्सा नूं अर्थ तो, मोक्ष अमर पद होय ॥
ते माटै शिव हेतु ए, तसुं उत्तर हिव जोय ॥२॥
राय प्रसेणी में कह्युं, जे सुर्याभ सु देव ॥
ऊपजियो तब चिन्तव्यूं, मन मांही स्वय मेव ॥३॥

स्युं मुज नैं करिवो हिवे, पाहिलां पछै ज काज ॥
स्युं मुज पाहिलां श्रेय जे, श्रेय फुन पछै समाज ॥४॥
स्युं मुज पाहिलां नें पछै, हित सुखम निस्सेसाहि॥
अनुगामी केडै हुई, इम चिन्तव्यो मन मांहि ॥५॥
सामानिक परिषध सुरे, जाणी ए अध्यव साय ॥
कर जोडी सुर्याभ प्रति, बोल्या एम वधाय ॥६॥
जिन प्रतिमां दाढां प्रते, आप भणी अवलोय ॥
अन्य बहु वैमानीक सुरा, सुरी प्रते फुन जोय ॥७॥
अरचणा जोगज जाव फुन, सेवा जोगज जेह ॥
ते माटे पाहिलां पछै, तुम नें करिवुं एह ॥८॥
पाहिलां पछैज ए श्रेय, पूर्व पच्छा पिण जोय ॥
हित सुखम निस्सेसाए हैं, अनुगामिक अवलोय ॥६।
इम सांभल सुर्याभसुर, हृष्ट तुष्ट सलहीज ॥
यावत विकस्यो हृदय फुन, ऊठ्यो सेज्भ थकीज ।१०।
पवर सभा उप पातथी, निकली द्रह विषेह ॥
आवी नें ते द्रह प्रते, तथा प्रदक्षणा देह ॥११॥
द्रह मैं ऊतर स्नानकरै, जिहां सभा अभिषेक ॥
तिहां आवी सिंघाशणे, बैठो पूर्व सम्पेख ॥१२॥
सामानिक प्रषध प्रमुख, सुर सुर्याभ प्रतेह ॥
अष्ट सहस नैं चौशट फुन; जल भरिया कलशेह ।१३।

इन्द्राविषेक करी कहे, सुरगण में जिम इन्द्र ॥
तारा गण में चन्द्र जिम, असुर विषे चमरिन्द्र ॥१४॥
नाग विषे धरणीन्द्र जिम, भरत चक्री मनु मांहि ॥
वहु पल्योपम लग तुम्हे, वहु सागरोपम ताहि ॥१५॥
च्यार सहस्र सामानिका, यावत सोलहजार ॥
आतम रक्षक देवता, तेह तणों अवधार ॥१६॥
अधपती फुनस्वामी पणों, करतां थकांज सोय ॥
पालंता विचरो तुम्हे, इम कहै सुर अवलोय ॥१७॥
अलंकार सभातिहां, आवी करे अलंकार ॥
आवी व्यवसाए सभा, पुस्तक वांच तिंवार ॥१८॥
पछै आय सिद्धायतन, प्रतिमादिक पूजेह ॥
सूत्रे विस्तार छे बहू, इहां कह्युं संक्षेपेह ॥१९॥
इम प्रतिमां दाढां पनग, पूतालिया दिक पेख ॥
वहु वाना पूजा तिणे, स्वर्ग स्थित थी देख ॥२०॥
ऊपजियो सुर्याभ तब, चिन्तवियो मन जेय ॥
पूर्व पछे करिवुं किस्युं, मुझ पूर्व पछै स्युं श्रेय ॥२१॥
जेह कार्य कीधें छतें, पूर्व पछै स्युं मोय ॥
हित सुख प्रमुख भणी हुइं, इम चिन्तवीयो सोय ॥२२॥
धर्म कार्य तो जाणतो, सम दृष्टी थो जेह ॥
तेह तणो स्यूं चिन्तवै, किम तसुं अमर वदेह ॥२३॥

पिण राज बैसतां कृत्य जे, करिवुं पूर्व पछेह ॥
तेह कार्य संसार नां, मङ्गल हेतु कहेह ॥२४॥
तेह रीत नवी जांणतो, नवो ऊपनो एह ॥
तिण स्यूं चिंत्यो मुज किस्युं, करिबो पूर्व पछेह ॥२५॥
एह भाव सुर्याभनां, सामानिक सुर धार ॥
वलि परिषधनां देवता, जांण लिया तिण वार॥२६॥
ए जूना था ते भणीं, राज बैसतां रहाय ॥
कारज करवो तेहनां, जांण हूंता अधिकाय ॥२७॥
ते मोटै सुर स्थिती हुंती, ते दीधी तिणें बताय ॥
जिन प्रातिमां दाढां भणीं, कह्यो पूजवुं ताय ॥२८॥
स्वर्ग रीत जाणी कह्युं, सुर सुर्याभ प्रतेह ॥
पूजा हित सुख प्रमुख पिण, प्रभु न कह्या वच एह२९
पुव्वी पच्छा पाठ त्यां, पाहिलां पछै सुजोय ॥
हित सुख आदि कह्यो सुरे, पिण पेच्चा पाठ न कोय३०
पूर्व पछा ते इह भवे, द्रव्य मङ्गल कहिवाय ॥
विघ्नोपशम अर्थै किया, राज वैसतां रहाय ॥३१॥
श्रावक तुंगिया नां स्थिवर, वन्दन जातां कीध ॥
सरिशव द्रोवाच्छत दही, द्रव्य मङ्गलिक प्रासिद्ध ॥३२॥
उत्तराध्ययन बावीश मैं, द्रव्य मङ्गल संवाद ॥
तोरण जातां नेम कृत, दधी अच्छत द्रोवादि ॥३३॥

तिमहिज सुर्याभे करी, संसारिक मंगलीक ॥
पूजा जिन प्रतिमां दिनीं,स्वर्ग स्थिती तह तीक ३४
प्रभू वन्दन अवशर कह्युं, पेच्चा हित सुख आदि ॥
पेच्चा ते पर भव विषै, देखो तज असमाधि ॥३५॥
प्रतिमां त्यां पूर्व्वी पच्छा, फुन वन्दन जिन राय ॥
पेच्चा पाठ कह्यो तिहां, राय प्रश्रेणी म्हाँय ॥३६॥
पंचमा अङ्ग दूजें शतक, प्रथम उद्देसक पेख ॥
खंधक दिक्षा अवशरे, इह विध कह्युं विशेख ॥३७॥
धन काढे ग्रही लायथीं, पच्छा पूराए ताय ॥
इंछित काल थकी पछैं,फुन पहिलां कहिवाय ।३८।
ते ग्रही जाणैं मुझ हुसे, ए धन हित सुख काज ॥
खम समरथ निस्सेसाय जे,फुन अनुगामिक साज ३९
तिम जरा मरणारी लायथी,स्वात्म काढ्यां ताय ॥
पर लोके हित सुख भणीं, वलि सुज खम निस्सेसाए
मेघ कह्युं धन लायथी, काढ्यां पूर्व पश्चात ॥
हित सुखखम निस्सेसाय फुन,पिणपेच्चा पाठ नख्यात ४१
तिम जरा मर्णारी लायथी, स्वात्म काढ्यां सोय ॥
हुसे विछेद संसारनूं, ज्ञाता प्रथम सु जोय ॥४२॥
प्रतिमांनीं पूजा तिहां, लायथकी धन बार ॥
काढे तिहां पच्छा प्रथम, ते इह भवमें धार ॥४३॥

जिन वन्दन पेच्चा कह्युं, चारित गृह्यां परलोग ॥
ते परभव हित सुख प्रमुख, देखो दे उपियोग ॥४४॥
कोई कहै प्रतिमां तणीं, पूजा छै निरदोख ॥
हित सुखत्तम निस्सेसाए कह्युं, निस्सेसाय ते मोख४५
तसुं कहिए धन लायथी, काढै तसुं पिण सोय ॥
हित सुखत्तम निस्सेसाए कह्युं, इहां मोच्च स्यूं होय४६
धन काढै जे लायथी, इह भव पूर्व पश्चात ॥
दारिद्रथी मूंकायवो, ते मोच्च दारिद्रनीं ख्यात ॥४७॥
तिम पूजा मंगलिक अरथ, इह भव पूर्व पश्चात ॥
विघ्नथकी मूंकायवो, ते मोच्च विघ्ननीं ख्यात ॥४८॥
शतक पन्नर मैं भगवती, आणंद थिवर प्रतेह ॥
गौशाले जे वणिक नूं, आख्युं दृष्टान्त देह ॥४६॥
चौथो वल्मू फोडतां, बृद्ध पुरुष तिहवार ॥
फोडक हाला पुरुष नूं, हित सुख वंछण हार ॥५०॥
पथ्य आनन्द कारण तणूं, वंछण हारो तेह ॥
अनुकम्पा कारक तिको, निश्चय यश बन्छेह ॥५१॥
निस्सेसाए नूं अर्थ जे, आख्यो बृत्ति बिषेह ॥
वंछै मोच्चज विपतनीं, विपत मूंकाय वूं जेह ॥५२॥
तिम प्रतिमां पूजै तिहां, निस्सेसाय आख्यात ॥
विघ्नतणी ए मोच्च हैं, विघ्न मूंकाय वूं ख्यात ॥५३॥

ए द्रव्य मंगल राज बैसतां, जे जग मांहि गिणेह ॥
विघ्नपडै नहीं राज मैं, दधी अक्षत जिम जेह ॥५४॥
कोई कहै प्रतिमां तणीं, पूजाथी कहिवाय ॥
अनुगामिया ए कह्युं, फल तसु केडै आय ॥५५॥
तसुं कहिये धन लायथी, काढै तसु पिण सोय ॥
अणुगामिया ए इसो, पाठ सरीसो जोय ॥५६॥
जे धन काढै लायथी, इह भव पूर्व पश्चात ॥
तसुं फल धन काढण तणुं, जिहां जाय तिहां आत ५७
विमान अधपती अभव्यथा, स्वर्ग तणी स्थिती मंत ॥
सहु सुर्याभ तणीं परें, प्रतिमां दिक पूजंत ॥५८॥
तिम पूजा प्रतिमां तणीं, ए भव पूर्व पश्चात ॥
तसुं फल द्रव्य मंगल तणुं, जिहां जाय तिहां आत ५९
शुभ सूचक संसार मैं, दधी अक्षत द्रोवादि ॥
तिम पिण ए सुरलोक मैं, शुभ सूचक संवाद ॥६०॥
भाषा श्री जिनराय नीं, गावे विवाह विषेह ॥
तिम पूजा प्रतिमां तणीं, वलि णमोत्थूणं गुणेह ॥६१॥
राज बैसतां कार्य्य जे, सहु संसारिक हेत ॥
स्वर्ग स्थिती माटै कियां, धर्म पुण्य नहीं तेथ ॥६२॥
कोई कहै पूजा कियां, ए भव विघ्न मिटेह ॥
पुण्य बंध किम नवि कहो, हिव तसुं उत्तर लेह ॥६३॥

चढ्यो शूर संग्राम मैं, कर वहु जन संहार ॥
आव्यूं जीत फते करी, सुयस करै नर नार ॥६४॥
सावद्य युद्ध तिणें करी, अशुभ कर्म बंधाय ॥
ते अशुभ कर्मैं करी, सुयस हुवै किम त्हाय ॥६५॥
नाम कर्मनी प्रकृत्ती, यसो कीर्त्ती पुन्य जेह ॥
ते तो पाछल भव बंधी, वर शुभ योग करेह ॥६६॥
ते यसो कीर्त्ति पुराय प्रकृत्ती, युद्ध समय सुविचार॥
उदय आवी तिण कारणें, सुयस करै नर नार ॥६७॥
जन वहु जाणैं युद्धथी, सुजस थयो जग मांहि ॥
पण नहीं जाणें पूर्व वंध, पुराय थकी जस पाय ।६८।
तुंगियानां श्रावक किया, विघ्न हरण रे काज ॥
दधी अक्षत द्रोवादि जे, इम हिज नेम समाज ॥६९॥
दधी अक्षत द्रोवादि करी, अशुभ कर्म बंधाय ॥
विघ्न मिटै किम तेहथी, किम सुख सम्पाति पाय ।७०।
विघ्न मिटै अरिजन हटै, सुख सम्पाति पामेह ॥
ते पुराय प्रकृत्ति पूर्व भवे, बंधी शुभ जोगेह ॥७१॥
ते पुराय प्रकृत्ती कदा, मङ्गल कियां पछेह ॥
उदय आयां सुख सम्पजे, वलि वहु विघ्न मिटेह ।७२।
जन जाणै मङ्गल थकी, हित सुख प्रमुख जे पाय ॥
पण नहीं जाणै पूर्व वंध, पुराय थकी ए थाय ॥७३॥

पुत्रादिक परणायवे, आरा मोसर आदि ॥
सुयस हुवै ते पूर्व बंध, पुराये करी सम्बाद ॥७४॥
ब्रह्मा विष्णु महेश फुन, देवी पूजा आदि ॥
कीधां सुख सम्पती मिलै, ते पूर्व पुराय प्रसाद ॥७५॥
महा आरम्भ महा परग्रही, करै पंचेन्द्री घात ॥
मांस भक्षण ए चिहुं थकी, नरकायु बंधात ॥७६॥
नरके एंचेन्द्रीय पणौं, पुराय प्रकृती छै जेह ॥
ते तो छै पूर्व बंध्यो, बर शुभ जोग करेह ॥७७॥
पण महा आरम्भ आदिजे, चिहुं कारण करि जोय ॥
पंचेन्द्री पणूं नहीं बंधै, न्याय हिये अवलोय ॥७८॥
तिम प्रतिमां पूज्यां छतां, हित सुख प्रमुख न थाय ॥
पूर्व बंध पुराये हुवै, हित सुखक्षम निस्सेसाय ॥७९॥
वर सुर्याभ विमाननौं. अधपती देव किवार ॥
मित्थ्या दृष्टी पिण हुऔ, भव्याभव्य विचार ॥८०॥
जे सुर्याभे सांचवी, तेहिज रीत तिंवार ॥
राज बैसतां सांचवै, विमान अधपती धार ॥८१॥
प्रतिमां दिक पूजै तिकै, वलि नमोत्थूणं गुणेह ॥
तिण सूं ए स्थिती स्वर्ग नीं, मङ्गलीक छतेह ॥८२॥
बहु सामर सुर सुरी तणूं, अधपती पणों करेह ॥
ए पिण बच है देव नूं, देखो पाठ विषेह ॥८३॥

आयू जे सुर्याभनूं, च्यार पल्योपम ख्यात ॥
बहु सागर लग किम रहैं, पेखो तज पखपात॥८४॥

॥ गीतक छन्द ॥

प्रतिमां तणीं पूजा तिहां सुर्याभनैं सुर आखियो पुव्वी अनें पच्छा हीयाए। आदि पाठ सुभाखियो पुव्वी पच्छा ते इह भवे संसार नां मंगलीक ही। तुन्गियादि नां जिम विघ्न हरवा। द्रोव सरसव तिम वही ॥ १ ॥ सुर्याभ जिन वन्दन तणी मन मांहि धारी छै तिहां। पेच्चा हियाए पाठ आदज प्रगट अन्तर ए जिहां। पेच्चा तिको पर भव विषै हित सुख प्रमुख पाहिछाणा वूं। पच्छा अनें पेच्चा उभय नुं अर्थ दिल में आंणी वूं ॥ २ ॥ खन्धक कह्यो धन लायथी काढै तिको चिन्ते सही। पच्छा पूराए हिया सुहाए आदि पाठ सु प्रगट ही। तिम जरा मरणज लाय थी निज आतम प्रति काढयां थकें। मुझ हुसे परलोके हियाए। प्रमुख पाठ कह्या तिकै ॥ ३ ॥ प्रातिमां तणी पूजा अनें धन लायथी काढै वही। पच्छा हियाए पाठ छै पिण पेच्चा वा परभव नहीं। सुर्याभ जिन वन्दन अनें

जे खन्धकें दीक्षा ग्रही । पेच्चा तथा परभवे यह वुं पाठ पिण पच्छा नहीं ॥ ४ ॥ चंपा तणा जन वृन्द जिन वन्दन समय ए विध कही । प्रभु वन्दतां फल पेच्चा भव वा इह भव हित सुख प्रमुख ही । फुन तु निगयानां श्रावकें पिण स्थिवर वन्दन समयहां । फल वन्दना नूं इह भवे वा परभवे होसे सही ॥ ५ ॥ शिवराज ऋषी फुन ऋषभ दत्तें कह्युं प्रभु वन्दन तणूं । फल इह भवे वा पर भवे हित सुख प्रमुख हुसे घणूं । इम जिन मुनी भतें वन्द वै फल पेच्चा वा परभव वही । पिण पाठ पच्छा शब्द किहां ही सूत्र मैं दाख्यो नहीं ॥६॥

॥ इति ॥

॥ अथ नवभूं चैइट्ठी निज्भराट्ठी शब्दार्थ अधिकार ॥ प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहे प्रतिमां तणीं, व्यावच करवी सार ॥
आखी दशमां अङ्ग मैं, तीजे संवर द्वार ॥ १ ॥
उत्तर तसुं निसुणौं हिवै, तिण ठाणौं इमवाय ॥
आराधै ए तृतीय व्रत, ते केहवुं मुनिराय ॥२॥

उपाधि भात पाणी जिको, प्रतीत घरथी आंण ।
संग्रह करिवूं कुशल वलि, कुशल दानमें जांण ॥३॥
ते केहनें आपै तिको, अत्यन्त गाढोबाल ।
दुरवल ते बल रहितजे, वलिग्लान मुनि न्हाल ४
वृद्ध तिको कहिये स्थिवर, खमग मास खमणादि ।
प्रवर्त्तावे जे योग्य तिम, प्रवर्त्तक ते सम्वाद ॥५॥
आचारज उवभाय फुन, नव शिष्य साधर्मीक ।
तपसी कुल गण संघ ए, तसुं व्यावच तहतीक ६
कुलते गच्छ समुदाय छै, चन्द्रादिक कहिवाय ।
गण ते कुल समुदायछै, संघते गण समुदाय ॥७॥
इतलानीं व्यावच करै, चैत्य ज्ञान अर्थेह ।
निरजरानूं अरथीछतो, कर्मक्षयां थी तेह ॥८॥
पूजा श्लाघा रहित चित, दश विध वहु विध जेह ।
करै व्यावच तृतीय वरत, आराधै मुनि तेह ॥६॥
अप्रतीत कारी घर विषै, प्रवेश न करै जान ।
अप्रतीत कारी घर तणूं, नहीं लेवै अन्न पांण ।१०।
इहां कह्युं जे उपाधि करि, वलि भत्त पांण करेह ।
अत्यन्त बाल प्रमुख तणी, करै व्यावच तेह ॥११॥
कोई कहै प्रतिमां तणी, व्यावच करवी ख्यात ।
तो प्रतिमां रे ये त्रिहूं, वस्तु कांम न आत ॥१२॥

प्रतिमां अन्न खाती नथी, पीती नथी ज पांण ।
वस्त्र ओढती पिण नथी, नथी पहरती जांण ॥१३॥
ते माटे इम सम्भवे, चैत्य ज्ञान अर्थेह ।
निरजरा नूं अर्थी छतो, करे व्यावच्च जेह ॥१४॥
चैत्य ज्ञान अर्थे करे, एक अर्थ ए होय ।
द्वितीय अर्थ कहिए हिवे, सांभल जो अवलोय १५
आराधे ए तृतीय व्रत, ते केहवुं मुनिराय ।
इम शिष्य प्रश्न किये छतें, हिव गुरू भाषे वाय ॥१६॥
उपधि भात पांणी जिको, प्रतीत घरथी आंणि ।
संग्रह करिवा मैं कुशल, कुशल दांन में जांणि १७
ते केहनैं आपै तिको, अत्यंत गाढो बाल ।
दुर्वल रोगी बृद्ध फुन, खमग प्रवर्त्तकन्हाल ॥१८॥
आचारज उवज्झाय शिष्य, साधर्मीक पिछांण ।
तपसी कुल गण संघ ए, चैत्य तिको जिन जांण ॥१९॥
पूर्व कह्या ते सर्व नूं, अर्थ प्रयोजन जेह ।
निरजरानूं अर्थी छतो, करै व्यावच्च तेह ॥२०॥
पूजा श्लाघा रहित चित, दश विध आचार्य्यादि ।
वहु विध भत्त पांणादि करि, करै अनेक प्रकार सम्वाद २१
चित्त अहलादक ते भणीं, चैत्य केवली जांण ।
भात पांणी तसुं आंणिदे, वलि उपधादिक दे आंणि २२

सूत्र भगवती मैं कह्यो, सीहो मुनी सुजाण ।
पाक बीजोरा बीर प्रति, बहरी आण्या आंणि ॥२३॥
अन्य केवली तेहनैं, उपधादिक दे आंणि ।
आराधै इम तृतीय व्रत, महा मुनी गुण खांन ॥२४॥
राय प्रश्रेणी मैं कह्या, बीर तणां चिहुं नाम ।
कल्याणं मंगल वलि, दैवत चैत्य सु तांम ॥२५॥
मलियागिरि कृत बृत्ति मैं, अर्थ इसो आख्यात ।
कल्याणकारी ते भणी, कल्याणिक जग नाथ ॥२६॥
दुर्त्त विघ्नज तेहनां, उपशम कारी स्वांम ।
ते माटै जगनांथ नैं, कह्यो मंगलं तांम ॥२७॥
तीन लोकनां अधपती, तिणसुं दैवत ख्यात ।
हेतु सुप्रश्न मन तणां, तिणसुं चैत्य संजात ॥२८॥
चैत्य शब्द नूं अर्थ इम, आख्यो छै तिण स्थान ।
ते माटै ए चैत्य जिन, तास वेयावच जांन ॥२९॥
मुनि नां ए पिण नांम चिहुं, आख्या छै बहु ठांम ।
कल्याणकारी ते भणीं, मुनि कल्याणिक नांम ३०
दुर्त्तोपसम कारी पणैं, मंगल मुनि कहिवाय ।
च्यार मंगल मैं देखल्यो, तीजो मंगल वाय ॥३१॥
दैवत कहतां देव ए, पंच देवमैं ताहि ।
धर्म देव मुनि नैं कह्या, सूत्र भगवती मांहि ॥३२॥

भवद्रव्य देव भवान्तरे, देव हुसे ते त्हाय ।
चक्री ते नर देव हैं, धर्म देव मुनिराय ॥३३॥
देवाधि देव तीर्थकरा, तिणसुं दैवत वीर ।
तीन लोकनां अधपती, युग केवल गुण हीर ।३४।
भाव देव चिहुं जातिनां, भवन पत्यादिक जेह ।
बारम शतके भगवती, नवम उद्देश विषेह ।३५।
ते मांटे ए चैत्य जिन, तास वेयावच तांम ।
निरजरानूं अर्थी छतो, करे मुनी गुण धाम ॥३६॥
कोई कहे ए चैत्य नूं, अर्थ इहां जिन होय ।
तो छेहडे ए किम कह्युं, तसुं उत्तर हिव जोय ।३७।
चैत्य तुम्हे प्रतिमां कहो, तो छेहडे किम ख्यात ।
तुम लेखे तो धुर कही, पछै अन्य मुनी आत ३८
जिन प्रतिमां जिन सारषी, तुम्हे कहोछो सोय ।
ते मांटै ए आदि मैं, कहिवुं चैत्य सु जोय ॥३९॥
इहां वाल अत्यन्त धुर, दुर्बल ग्लान पश्चात ।
स्थिवर प्रवर्त्तक धुर कही, पछै आचारज ख्यात ४०
आचार्य्य पदतो प्रथम, कहिवुं धुर अहल्लाद ।
ठाम ठांम व्यावच विषै, आचारज पद आदि ।४१।
इहां प्रथम बालादि कही, पछै आचारज जोय ।
तेहनुं कारण को नहीं, देखो दिल अवलोय ।४२।

तिमहिज अंते चैत्य जिन, इहां आख्युं छै सोय ।
तेहनुं पिण कारण नहीं, हिये विचारी जोय ।४३।
मुनि सहचारी पणां थकी, प्रथम कह्या अणगार ।
पछै चैत्य ते जिन कह्या, तसुं नहीं दोष लगार ।४४।
गिणूं अनुपूर्वी तुम्हैं, पद तसुं इकशय बीस ।
पच्छानु पूर्वी विषै, पहलां मुनी जगीस ॥४५॥
उवझाया आचार्य सिद्ध, अरिहन्त अन्त कहेह ।
अनानुपूर्वी विषै, आघा पाछा लेह ॥ ४६ ॥
अनुयोग द्वारे आखीयो, पूर्वानुपूर्वी जान ॥
पच्छानु पूर्वी वलि, अनानु पूर्वी आन ॥ ४७ ॥
पूर्वानुपूर्वी तिहां, ऋषभ जाव वर्ध मान ।
महावीर यावत ऋषभ, पश्चानु पूर्वी जान ॥४८॥
आघा पाछा नाम ले, अनानुपूर्वी तेह ।
ए त्रिहुं अनु पूर्वी कही, देखोजी चित देह ।४९।
सामाचारी दश विध कही, अनुयोग द्वार विषेह ।
इच्छा मिच्छा धुर अखी, पूर्वानु पूर्वी एह ।५०।
उत्तराध्ययन छब्बीस मैं, आवास्सिया धुर जोय ।
अनानु पूर्वी यह छै, तसुं दोषण नहीं कोय ।५१।
ज्ञान दर्शन चारित्र तप, शिवमग ए चिहुं सार ।
उत्तरा झयण अठ्ठवीस में, प्रथम ज्ञान सुविचार ।५२।

तिरा हिज अध्ययनें कृया, रुचि दर्शन ज्ञान चरित्त ।
इहां दर्शन धुर आखियो, तसुं कारण न कथित्त ।५३।
अभिणि वोधिक धुर कही, पछै कह्यो श्रुत ज्ञान ।
भगवती आदि विषैं प्रभु, प्रगट पाठ पहिछान ॥५४॥
उत्तराध्ययण अट्ठ बीस मैं, कह्यो प्रथम श्रुत ज्ञान ।
अभिणि बोध कह्यो पछै, तसुं दोषण नहीं जान।५५।
पूर्वानु पूर्वी किहां, किहां द्वितीया अवलोय ।
अनानु पूर्वी कही किहा, तसुं दोषण नहिं कोय ।५६।
पंच ज्ञान मैं देखलो, छेहडै केवल ज्ञान ।
छेहडै दर्शन च्यार मैं, केवल दर्शन जान ॥५७॥
च्यार ध्यान मांही वलि, छेहडै शुक्ल ध्यान ।
छेहडै गुण ठाणा मझै, अजोगी गुण स्थान ॥५८॥
छेहडै चिहुं विध देव मैं, वैमानिक सुरख्यात ।
चारित्र मैं छेहडै कह्यु, यथा ख्यात जगनाथ ॥५६॥
वलि षट नियट्ठानें विषै, छेहडै स्नातक जान ॥
इत्यादिक वहु सूत्र मैं, भाख्या श्री भगवान ॥६०॥
अनानु पूर्वी करी, इहां चैत्य जिन अन्त ।
उपधि भात पाणी करी, तसुं व्यावच मुनी करंत।६१।
आराधे इम तृतीय व्रत, महा मोटा मुनीराय ।
द्वितीय अर्थ ए आखीयो, निमल विचारो न्याय६२

चैत्य ज्ञान धुर अर्थ कह्यु, द्वितीय अर्थ जिन जोय ।
वलि केवल ज्ञानी वदै, तेहिज सत्य सुहोय ।६३।

॥ इति ॥

॥ अथ दशमूं चमर सुधर्मागत अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै असुरेन्द्र जे, स्वर्ग सुधर्मैं जाय ।
त्यां प्रतिमां नूं शरण कह्यु, तसु उत्तर कहिवाय ।१।
सूत्र भगवती तृतीय शत, द्वितीय उद्देशा मांय ।
चमर वीर नूं शरण ले, स्वर्ग सुधर्मैं जाय ॥ २ ॥
जई सुधर्मैं शक्र प्रति, बोल्यो विरुई बान ।
शक्र कोप कर मूंकीयो, वज्र सु ज्वाजल मान ॥३॥
पछै इन्द्र विचारियो, विन नेश्राय सुजोय ।
आवै चमर सुधर्म ए, इसी शक्ति नहिं होय ॥४॥
अरिहंत अरिहंतचैत्य फुन, भावितात्म अणगार ।
आवै ए तिहुं शरण लै, चमर सुधर्मैं धार ॥५॥
ते मांटै महा दुःख ए, अरिहंतनीं अवलोय ।
भगवन्त नें अणगार नीं, अति आशातन होय ।६।
इम चिन्तव अवधें करी, प्रभु कहै मुज प्रति देख ।
शीघ्र गमन कर संग्रह्यो, वज्र प्रते सुविसेख ॥७॥

इहां तिहुं शरणा में प्रथम, अरिहंत केवल धार ।
अरिहंत चैत्य छद्मस्थ जिन, चिहुं ज्ञानी सुविचार।८।
भावितात्म अणगार फुन, यह तिहुं शरणौ मंत ।
इहां चैत्य ते ज्ञान वंत, चिहुं ज्ञानी भगवन्त ॥९॥
वलि मन शक्र विचारियो, अरिहन्त नीं अवलोय ।
भगवन्त नें अणगार नीं, अति आशातन होय।१०।
चैत्य स्थान भग शब्द कह्यो, भग नुं अर्थ सुज्ञान ।
चिहुं ज्ञानी अरिहन्त ए, पिण प्रतिमां नहिं जान।११।
कोई शरण तो त्रण कहै, आशातन कहै दोय ।
अरिहन्त नें प्रतिमां तणीं, येक कहै छै सोय।१२।
शरण विषै तो पाठ त्रण, आशातन में जोय ।
दोय पाठ दाख्या हुंता, तो आशातन बे होय।१३।
शरण विषै तो पाठ त्रण, आसातन मैं जोय ।
तीन पाठ छै ते भणी, आशातना त्रण होय॥१४॥
प्रत्यत्त सूत्रे शरणा तिहुं, कही आशातनां तीन ।
अरिहंत नें भगवंतनीं, वलि मुनि तणीं कथीन।१५।
तीन आशातन नैं विषै, चैत्य शब्द नहीं ख्यात ।
चैत्य ठिकाणौं भग कह्युं, देखो तज पखपात ॥१६॥
अरिहंत नें प्रतिमां तणौं, मुनिनों शरण जु थाय ।
तो छद्म जिन नुं शरण ग्रह्युं, ते किण शरणा मांय।१७।

अरिहंत तो केवल धरा, तेह विषै सुविचार ।
जिन छद्मस्थ तणों शरण, आवै किण विध सार ।१८।
जिन प्रतिमां नूं शरण कहै, तिण में पिण नहीं आय ।
तृतीय शरण जिन विन मुनी, किम तिण विषै कहाय ।।
तिण सुं छद्म जिन तणूं, द्वितीय शरण ए होय ।
जो प्रतिमां नुं शरण हुवै, तो किम आवै मनु लोय २०
सभा सुधर्मां थी निकट, सिद्ध आयतन जाय ।
जिन प्रतिमां नुं शरण तो, ग्रहण करतो त्हाय ।२१।
ते मांटै इहां चैत्य नुं, अर्थ ज्ञान अवलोय ।
अन्य ठांम पिण चैत्य नुं, अर्थ ज्ञान कह्युं सोय ।।२२।।
चौवीस तीर्थंकर तणां, चैत्य रूख चौवीस ।
समवायङ्ग विषै कह्या, ए ज्ञान रूख सु जगीस ।।२३।।
चैत्य ज्ञान केवल लह्युं, जिण तरु तल जिनराय ।
चैत्य वृक्ष ए जाणवा, ए ज्ञान वृक्ष कहिवाय ।२४।
तिमहिज अरिहंत चैत्य प्रति, चिहुं ज्ञानी अरिहंत ।
द्वितीय शरण ए जांणवो, देखोजी मतिवंत ।।२५।।
द्वितीय आशातन नैं विषै, चैत्य स्थान भगवंत ।
इहां अर्थ जे भग तणों, कहिए ज्ञान सुतंत ।।२६।।
ते मांटै अरिहंतनी, प्रतिमांनी अवलोय ।
शरण कहै छै ते इहां, नथी संभवै सोय ।। २७ ।।

॥ अथ इग्यारमूं वली कम्मा अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै वलीकम्म शब्द, सूत्र विषै बहु स्थान ।
तेह तणुं स्युं अर्थ है, हिव तसु उत्तर जान ॥१॥
पंचमुद्देशे द्वितीय शत, तुङ्गिया तणां विचार ।
श्रावक स्थिवर सु वांदवा, त्यार थया तिह वार ॥२॥
स्नान करी वली कर्म कृत, तास अर्थ वृत्ती कार ।
कीधो छै ग्रह देवता, देखो हिये विचार ॥३॥
इमहीं उववाई मैं कह्यो, प्रवृत्ति वादुक कीध ।
वलि कर्म स्वग्रह देवता: वृत्ती विषै सु प्रसिद्ध ॥४॥
केइक इहां ग्रह देवता, जिन प्रतिमां कहै हेव ।
पिण इतलो जाणैं नहीं, ए किण घरनां देव ॥५॥
तीर्थंकरतो छै सही, तीन लोकनां देव ।
ते किम जिन प्रतिमां भणीं, घरनां देव कहेव ॥६॥
जिन प्रतिमां जिन सारषी, इम पिण कहता जाय ।
वलि स्थापै घर देवता, ए किण विध मिलसे न्याय ७
कदापि कुल देवी प्रते, कहियें घरनां देव ।
लोकीक हेतैं पूजता, श्रावक पिण स्वमेव ॥८॥

जेह देवता शब्द नित, स्त्री लिङ्ग वाची होय ।
कहुं अमर में ते भणीं, न्याय हिये अवलोय ॥९॥
नवम उद्देशै सप्तशत, वर्ण कीध वलीकर्म ।
अर्थ देवता नूं कियो, वृत्ति विषै ए मर्म ॥ १० ॥
वली कर्म नुं अर्थ धर्मसी, स्नान तणों ज विसेख ।
कीधो वालि कर्म शब्द करी, आया कारज सेख ।११।
ज्ञाताध्येयनें दूसरे, सुत वन्छा नैं हेत ।
नाग भूत यक्ष पूजवा, गई सुभद्रा तेथ ॥१२॥
पुष्करणी मैं स्नान कर, कीधा वलीकर्म जोय ।
ए वाव मधे किण देवनीं, प्रतिमां पूजी सोय ।१३।
भीनी साडी उडणों, एहवी छतीज तेह ।
कमल बहु ग्रही नींकली, पुष्करणी थी जेह ।१४।
बहु पुस्प गन्ध धूपणों, माल्य प्रमुख अवलोय ।
कांठै जे मूंक्या प्रथम, तेह ग्रही नें सोय ॥१५॥
पछै नाग घर आय नें, प्रतिमां पूजी आंम ।
जाव वेश्रमण नीं वलि, पूजी आखी तांम ॥१६॥
वलीकर्म पुष्करणी विषै, कीधो धुर आख्यात ।
ते पुष्करणी नैं विषै, किसा देवनीं जात ॥१७॥

॥ सोरठा ॥

मल्ली पिता नैं पासेरे, आवंता न्हाया कह्या। जाव
शब्द मैं तासेरे, वली कम्मा ए पाठ छै ॥१८॥
वलि मल्ली षट राजानेरे, समझावा आवी तदा।
जाव शब्द में जानेरे, वली कम्मा ए पाठ छै ॥१९॥
देखो मली भगवानेरे, प्रतिमां पूजी केहनी।
अध्ययन अष्टम् जानेरे, आख्यो ज्ञाता नैं विषै ।२०।
वलीकम्मा नूं जांणरे, अर्थ कहै पूजा तणौं।
ए जिन प्रतिमां नीं मांणरे, कै पूजा कुल देवनीं ।२१।
जो स्थापै जिन बिम्बरे, तो मल्ली तीर्थंकर छतां।
पूजे तेह अचम्भेरे, वलि प्रतिमां किण जिन तणीं २२
जिन प्रतिमां नीं तायरे, मल्ली नांथ पूजा करी।
तो भावे मुनि पायरे, देवी प्रणामें कै नहीं ।२३।
वलि अढी द्वीपरै म्हांयरे, भावे जिन उत्कृष्ट थी।
इक सौ सित्तर थायरे, जघन्य वीस थी नवि घटै॥२४॥
त्यां द्रव्ये जिन घर मांयरे, भावे जिन वंदै कै नहीं।
वलि तसुं दाण सुहायरे, तसुं लेखै किम नहिं सुणौ२५
मलिनांथ घर मांहिरे, जिन प्रतिमां पूजीकहै।
तो द्रव्ये जिन पिण ताहिरे, भावे जिन वन्दै न किम२६

जो स्थापै कुल देवरे, मल्लिनाथ पूजा करी ।
सुर सहाय स्वयमेवरे, किम न करै श्रावक समकती २७
स्नान तणु ज विसेखरे, अर्थ कहै वली कर्म नूं ।
तो टालियो क्लेश असेषरे, सहु ठाम वसेल स्नान नूं २८

॥ दोहा ॥

भगवती नवमां शतक में, तेतीस में उद्देश ।
जमाली मंजन घरे, स्नान वली कर्म सेष ॥२६॥
अलंकार कर नीकल्यो, मंजन घर थी हेव ।
इण न्हावा नां घर विषे, केहवो पूज्यो देव ॥३०॥
देवा नन्दा ब्राह्मणी, वलीकर्म मंजन गेह ।
तिण न्हावा नैं घर किसो, पूज्यो देव कहेव ॥३१॥
द्वितीय उपाङ्ग प्रदेशी नृप, देव पूजवा जाय ।
पहिलां न्हावा घर विषै, वली कर्म कीधो ताय ।३२।
इण न्हावा नां घर विषै, किसो पूजीयो देव ।
देव पूजवा तो हिवै, जावै छै स्वय मेव ॥ ३३ ॥
ज्ञाताध्ययनैं सोल मैं, द्रोपदी मंजन गेह ।
स्नान वलीकर्म कौतुकः, पवर वस्त्र पहरेह ॥३४॥
मंजन घर सु नीकली, आवी जिन घर मांय ।
इतरा सूधी पाठ छै, देख विचारो न्याय ॥ ३५ ॥

पहलां तो न्हावो कह्यो, पछै कह्यु वलिकर्म्म ।
पछै वस्त्र पहरया कह्या, हिव जोवो ए मर्म्म ।३६।
स्त्री जाति सुभाव नय, थई न्हावा बैठी जेह ।
त्यां न्हावा नां घर विषै, केहवो पूज्यो देव ॥३७॥
वलीकर्म कर जिन घर विषै, प्रतिमां पूजी आय ।
तो वली कर्म मंजन घरे, ते केहनी प्रतिमां थाय ।३८।

॥ सोरठो ॥

अपात चिलाती न्हायरे, कय वलि कम्मा पाठ त्यां ।
जम्बू द्वीप पन्नती मांयरे, किसो देव त्यां पूजीयो ३९

॥ दोहा ॥

कोणिक जिन वन्दन गयो, कह्यो स्नान विस्तार ।
वली कम्म शब्दजमूलगो, नथी तिहां अवधार ।४०।

॥ अथ कोणिक जिन वंदवा गयो त्यां न्हावा नूं पाठ उववाई सूत्र में कह्यो ते लिखीये छै ॥

जेणेव मज्झण घरे तेणेव उवागच्छइ गच्छइत्ता मज्झन घरं अणुपविसइ रत्ता समुत्ताजाला उलाभिरामे विचित्त मणिर-यण कुट्टिमतले रमणिज्जे एहाण मंडवं सि णाणामणिरयण भत्ति चित्तं सि एहाण पीढंसि सुहाणिसणे सुद्धोदगेहिं गंधोद-गेहिं पुप्फोदगेहिं सुभोदगे हिं पुणो२कल्लाणग पवरमज्झण वि-

हिए मज्झिए तत्थ कोउयसएहि वहुविहेहिं कल्लाणगपवर मज्झ- णावसाणे पम्हल सुकुमालगंध कासाइय लूहियंगे सरस सुरहि गोसीस चंदणेणु लित्तगत्ते अहय सु महग्घ दूसरयण सु संवए सुई माला वण्णग विलेवण आविद्ध मणि सुवण्णे कप्पिय हार- द्धहार तिसरय पालंब पलंबमाणे कडिसुत्त सुकय सोहे पिणद्धगे विज्झे अंगुलिज्जे कल लियंगयं ललियं कया भरणे वरकडग तुडिय थंभियभूय आंहय रूवसास्सिरीया मुद्दिया पिंगलंगुलिय कुंडल उज्जोवियाणणे मउड दित्त सरए हारोत्थयं सुकय रइयव वत्थे पालंब पलंबमाण पडसुकय उत्तरिज्झे णाणामणि कणग- रयण विमलमहरि हणिउणा वियमि समसंति विरइय सु सिलिट्ठ विसिट्ठ लट्ठ आविद्ध वीर वलये किं वहुणा कप्परुक्खए चेव अलंकिय विभूसिए णरवई सकोरंट मल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्झ माणेणं चउ चामर वालवीजयंगे मंगल जय सद्द कयालोए म- ज्झण घराउ पडिणिक्खमइमज्झ २ त्ता ॥ इति ॥

॥ सोरठा ॥

वली कर्म शब्दें जेहरे, पूजा जिन प्रतिमा तणी तो कोणिक अधिकारेहरे, जिन वंदन समय ए न किम ॥ ४१ ॥ जम्बूद्वीप पन्नती एमरे, भर्तेश्वर नां स्नान नूं, विस्तार कोणिक जेमरे, त्यां वली कम्मा पाठ नहीं ॥ ४२ ॥ स्नान तणों जिण स्थानेरे, विस्तार पणों नवि वरणव्यूं, त्यां वली कम्मा जानरे, पाठ देख निरणय करो ॥ ४३ ॥

जलांजली प्रमुखरे, स्नान करंतौ जे करै, कुरला-
दिक प्रतखरे, स्नान विषेसण यह छै ॥४४॥ ते मांटै
अवलोयरे, वली कम्मा जे पाठ नूं, स्नान विषेसण
सोयरे, अर्थ धर्म सी इम कियो ॥ ४५ ॥ वृत्तिकार
कह्यं सोयरे, वली कर्म्म ते ग्रह देवता, तसुं पूजा
अवलोयरे, इहां कुल देवी सम्भवै ॥४६॥ स्नान
विषेसण होयर, वा पूजी ग्रह देवता, उभय अर्थ
अवलोयरे, सत्य सर्वग्य वदै तिको ॥ ४७ ॥

॥ अथ असहेजाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

वलि कहै श्रावक समकती, च्यार जाति नां देव।
तास साम्भ वंछै नहीं, सूत्र विषै ए भेव ॥ ४८ ॥
ते मांटै वली कर्म्म ते, जिन प्रतिमां पूजंत।
पिण कुलदेवी अर्थ नहिं, हिव तसु उत्तर मंत ।४६।

॥ सोरठा ॥

असहेज्भा पाठ नूं जाणरे, अर्थ दोय है वृत्ति मैं।
आपद पड्यं सुजाणरे, साम्भ न वंछै देव नूं ।५०।

पोते कीधा पापरे, ते पोतेहीज भोगवै ।
अदीन मनो वृत्ति स्थापरे, एक अर्थ तो इम कियो ५१
वलि पाखंडी आयरे, चलावै समकित आदि थी ।
तो नहीं वंछै सहायरे, शमर्थ स्वयमेव हटायवा ।५२।
वलि जिन शासन मांयरे, अत्यन्त भावित आशता ।
ते मांटै असहायरे, अर्थ दूजो इम वृत्ती में ॥५३॥
तुन्गिया नें अधिकाररे, उभय अर्थ ये आखीया ।
तास न्याय सुविचाररे, चित्त लगाई सांभलो ।५४।
दूजो अर्थ पहिछाणरे, समकित व्रत सैंठा पणों ।
प्रवर मूल गुण जांणरे, यह अवश्य गुंण चाहिजे ।५५।
ए गुंण खण्डित थायरे, तो हुवै विराधक पांतिमैं ।
शुद्ध हुआं सुताएरे, आराधक पद आखीयो ॥५६॥
जो पाखंडी नैं जेहरे, जाव देवा समर्थ नहीं ।
पर सहाय विन तेहरे, तासु चलायो नवि चलै ।५७।
तो पिण मूल गुंण तासरे, तेहनुं न गयुं सर्वथा ।
समकित व्रत नीं राशरे, अखंड पणै राखी तिणैं ।५८।
आणद पडिमां आयरे, सुर सहाय वंछै नहीं ।
ए धुर अर्थ कहायरे, उत्तर गुंण ते जांणवुं ।५९।
मुनि धुर पहिर सझायरे, द्वितीय पहिर मैं ध्यान वर ।
तृतीय गौचरी जायरे, चौथै पहिर सझाय फुन ।६०।

उत्तर गुंण ए न्यारेरे, कह्या विचत्तण मुनि तणौं ।
ज्यो नकरै अणगाररे, तो संयम मैं भंग नहीं ।६१।
तिम श्रावकैरे यहरे, उत्तर गुंण असहायता ।
सुर सहाय बंछेहरे, तो समकित मैं भंग नहीं ।६२।
सूत्र उववाई मांहिरे, अम्बड नैं अधिकार पिण ।
जाव शब्द में ताहिरे, असहेज्भा ए पाठ है ।६३।
तास अर्थ बृत्ति मांयरे, एक इज कीधो अछै ।
आपद सुर असहायरे, ए अर्थ कीधो नथी ॥६४॥
कु तीर्थक प्रेरित्तरे, समकित सैं अविचल पणौं ।
पर सहाय नवि चित्तरे, उववाई बृत्ति मैं कह्यो ।६५।
रायप्रशेणी बृत्तिरे, असहेज्भा नूं अर्थ जे ।
कीधो अधिक पवित्तरे, चित्त लगाई सांभलो ।६६।
कु तीर्थक प्रेरितरे, समकित सैं अविचल पणौं ।
पर सहाय नवि चित्तरे, यह अर्थ इक हिज तिहां ।६७।
आपद सुर असहायरे, यह अर्थ कीधो नथी ।
कु तीर्थक थी ताहिरे, न चलै एहिज अर्थ त्यां ।६८।
आनन्दा दिक साररे, असहेज्भा पाठ कह्यो तिहां ।
छ छंडी आगाररे, देवाभिउग पाठ मैं ॥ ६९ ॥
अन्य तीर्थी नैं वाररे, तथा देव जे तेहनां ।
श्रद्धा भृष्ट अणगाररे, अन्य तीर्थी ग्रह्या तेहनैं ७०

नकरूं बन्दनां ताहिरे, नमस्कार पिण नहिं करूं।
पहलां बोलूं नांहिरे, अशण। दिक देवूं नहीं ।७१।
अभिग्रह यह विसेषरे, छ छंडी आगारत्यां।
राजानैं आदेशरे, तथा कुटम्ब आदेशथी ॥७२॥
बलवंत तणौं प्रयोगरे, देव तणौं परवश पणौं।
कुटम्ब बडानैं योगरे, अटवी विषैज कारणै ॥७३॥
ए खट तणौं प्रकाररे, अन्य तीर्था दिक नहुं भणीं।
बन्दै करि नमस्काररे, अशणांदिक दे तेहनैं ।७४।
आपद उपजै आयरे, अथवा तेहनां भय थकी।
बान्छै देव सहायरे, जाणै सावभ तेहने ॥७५।
तसु समकित किम जायरे, समकिततो श्रद्धा अछै।
हिये विचारो न्यायरे, श्रद्धा कार्य्य जुवा जुवा ७६
छ छंडी विन त्यागरे, ए पिण गुंण अधिकायछै।
अधकेरो वैरागरे, व्रत सांकडा जेहनां ॥७७॥
इक त्रशनां पच्चखाणरे, कीधां से श्रावक हुअे।
शतक सतर मैं जांणरे, द्वितीय उद्देशै भगवती ७८
अनर्थ दंड परिहाररे, ए आठमूं व्रत है।
अर्थ तणौं आगाररे, न्याय हिवै तेहनुं सुणौं ।७९।
अर्थ दंडमैं पहरे, आठ आगारज आखिया।
द्वितीय सुयगडांगेहरे, द्वितीय उद्देशै देखल्यो। ८०

आत्म ज्ञात घर तेथरे, परिवारनैं मित्र कारणौं ।
नाग भूत यक्ष हेतरे, हिन्सादिक आरंभ करै ।८१।
अर्थ दंडेरे मांहिरे, ए आठूंही आखीया ।
नाग भूत यक्ष त्हायरे, श्रावकरै आगरछै ।।८२।।
धारणीनौं तिहवाररे, अकाले घन डोहला अर्थ ।
देखो अभय कुमाररे, ज्ञाता सुर आराधियो ।।८३।।
कृष्णो पिण सुविसेखरे, लघु बंधवरे कारणौं ।
देव आराध्यो देखरे, अंतगड मांही कह्यो ।।८४।।
चक्री भर्त्त सु सोयरे, देवी देव भणीं तिणौं ।
जम्बू द्वीप पन्नत्ती जोयरे, अट्ठम करि आराधियो ८५
वलि मूक्या छ बांणरे, नमस्कार सुरनैं लिख्यो ।
ए प्रत्यक्षही पहिछाणरे, वन्छयो सहाय देवनूं ८६
वलि चक्री भर्त्तेशरे, चक्रतणीं पूजा करी ।
इम हिज सुर सम्पेखरे, पूजे स्वार्थ कारणो ।।८७।।
शान्ति कुंथु अरि जांणरे, चक्र रतन पूज्यो कै नां ।
खट खंड साधत पांणरे, अट्ठम् तेर कियाकै नां ८८
लवण सुट्ठियो देवरे, कृष्णो पिण आराधियो ।
ज्ञाता सोलम भेवरे, सुर सहाय वंछयो तिणौं ।८९।
पूर्वोक्त पहिछाणरे, देव सहायज वान्छवै ।
सम्यक् दृष्टी जांणरे, सावज्झ लौकिक कृत करै ९०

समकित तास न जायरे, नहीं जाय श्रावक पणौं ।
जो सुर पूजे नांहिरे, तो गुण अधिकेरो अछै ।६१।
नारद केरा पायरे, द्रुपद सुता प्रणम्यां नथी ।
ए गुणछै अधिकायरे, पिण पंडू प्रणमत करी ६२
जाव शब्दरे मांहिरे, कृष्ण पिण नारद भणी ।
प्रणमत कीधी ताहिरे,पिण तसु समकित नवि गई ६३
प्रत्यत्तही पहिछाणरे, सम दृष्टी श्रावक तिके ।
शीश नमावे जांणरे, म्लेछ नां राजा प्रते ॥६४॥
तिमहिज डरता तायरे, अथवा स्वार्थ कारणैं ।
प्रणमैं सुरनां पायरे, ते मार्ग लौकीकछै ॥६५॥
ते मांटै पहिछाणरे, पाखंडी थी नवि चलै ।
दृढ आसता जांणरे, मूल अर्थ असहेज्भनूं ।६६।
वलि जे कहै इम बांणीरे, सुर सहाय नहीं वंछणौं ।
तो चौवीश जिननां जांणरे, चौवीश जक्ष जक्षणी कहै ६७
शासण देव सहायरे, तसु थुई पडिक्कमणैं पढै ।
वलि शेत्रुंजे त्हायरे, पूजे केम चक्केश्वरी ॥६८॥
तथा यती थकां प्रत्यक्षरे, काला गोरा भैरवे ।
मांणभद्र दिक यक्षरे, आराधै रक्षा भणीं ॥६९॥
ए लेखे तो जोयरे, सहाय देवनौं वंछवे ।
निज श्रद्धा अवलोयरे,तुम गुरू पिण नहीं समकती १००

पूजै भैरव आदिरे, श्रावक परणी जे तदा ।
शीतला दिक अहलादरे,तुम लेखै नहीं श्रावक पणौं १०१
तिणसूं देवसहायरे, लौकीक खाते बंछता ।
सम्यक्त तास न जायरे, नहीं जावै श्रावक पणौं १०२

॥ इति ॥

॥ अथ १२ मूं यात्रा अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

यात्रा शेत्रुंजादिनीं, करवी केइक ख्यात ।
पिण ए यात्रा सूत्रमें, कही नथी जग नाथ ॥१॥
शतक अठारमें भगवती, दशमें उद्देशे सार ।
सोमल पूछ्या वीर प्रते, प्रश्न यात्रादि प्रकार ।२।
हेभगवंत स्यूं थांहिरे, यात्रा अधिक उदार ।
इम सोमल पूछ्यां थकें, उत्तर दे जगतार ॥३॥
जिन भाखे सुण सोमिला, छे मांहरे सुखकार ।
तप अणशणां दिक नियम, तेह अभिग्रह सार ।४।
संयम वलि सज्झायते, धर्म कथा दिक जांण ।
ध्यान आवश्यक आदि वर, जोग विमल पहिछांण५
ए पूर्व कह्या तेहनें विषे, जयणा प्रते राखे जेह ।
ते मांहरे यात्रा अछे, कह्या पवर वच यह ॥६॥

पिण शत्रुंजय दिक तणीं, जिन यात्रा कही नांहि ।
देखोजी देखो तुम्हे, देखो हिवडा मांहि ॥७॥

॥ सोरठा ॥

वृत्ती विषे इम वायरे, यद्यपि प्रभु केवल पणें ।
आवश्यकादि तायरे, बोल केइक नहीं छै तसुं ।८।
तथापि तप नियमादिरे, तसुफलनां सदभावथी ।
तप नियमादि संवाहिरे, कहिये फल ते आंशरी ९

॥ दोहा ॥

इमहिज पुप्फिया उपाङ्गमैं, तृतीय अध्येयन मझार ।
पार्श्वनाथ भगवंत प्रते, सोमल विप्र जिवार ॥१०॥
प्रश्न यात्रा दिक पूछिया, तप नियमादि प्रवृत्ति ।
पार्श्व प्रभू यात्रा कही, पिण गिरीनीं न कथित्त ११
ज्ञाताध्ययनें पंचमैं, मुनि स्थावरचा पूत ।
तेह प्रते शुक पूछिया, प्रश्न यात्रादि प्रभूत ॥१२॥
हे भदंत यात्रा किसी, शुक पूछें ए सार ।
कहुं थावरचा पुत्र इम, जे मुझ ज्ञान उदार ॥१३॥
दर्शन चारित्र तप वलि, संयम आदि विचार ।
योगें यत्नी जीवनीं, ए मुझ यात्रा धार ॥ १४ ॥

इहां पिण यात्रा यहही, ज्ञाना दिकनीं जोय ।
पिण शेत्रुंजा आदिनीं, यात्रा न कही कोय ॥१५॥
उत्ताराध्येन सु बारमैं, हरकेशी प्रति सार ।
विप्र पूछियो थोहिरे, कुण द्रह तीर्थ उदार ॥१६॥
धर्म रूप मुनि द्रह कह्यो, ब्रह्मचर्य अवलोय ।
तीर्थ शान्ति कारी कह्यो, पिण गिरनैं न कह्यो कोय १७
शेतुंज्के पव्वए सिद्धे, सूत्रमैं इम गिरि ख्यात ।
पिण शेत्रुंजे तीर्थ सिध, इम न कह्यो गणि नांथ १८
जागां अलाहदी जांणिनैं, कीधा तिहां संथार ।
बन्दनीक तो गुण अछै, जोवो हिये विचार ॥१९॥
जीव रहित तनुं तेहनुं, ते पिण नहिं बन्दनींक ।
तो जागां बंदनींक किम, न्याय विचारो ठीक ॥२०॥
नाज खला थी ले करी, घाल्यो जे कोठार ।
सूनां खला लारे रह्या, चाहै तेह गिमार ॥२१॥
हुराडी जे लाखां तणीं, सिकार ता जे स्थान ।
काल केतले शेठजी, छोडी तेह दुकान ॥ २२ ॥
हिव हुराड़ी सिकै नहीं, तेह दुकानें जोय ।
तिम शेत्रुंजा दिक विषै, जिन मुनि सिद्धा सोय ।२३।
हिव ते पर्वत नैं विषै, हुराडी तणू ज सोय ।
सिकारण वालो नहीं रह्यो, बन्दनीक किम होय।२४।

बन्दनींक जो गिर हुअै, तो तिण ऊपर त्हाय ।
पगदीधां आशातनां, हुअै तुम्फ श्रद्धा न्याय ।२४।
द्वीप अढाई नैं विषै, दोय समुद्र त्रिषेह ।
सहुठामें सीधा मुनीं, पन्नवणा सोलम यह ।२५।
जिहां येक सीधा तिहां, सीधा मुनी अनन्त ।
सूत्र उववाई नें विषै, भाख्यो श्री भगवन्त ॥२६॥
इण लेखै तुम्फ वंदवा, अढी द्वीप अवधार ।
फुन वे दधि प्रति वंदवा, त्यां सीधा अणगार ।२७।
ते माटै बन्दनींक छै, जिन मुनि महा गुण धार ।
पिण स्थानक वंदनींक नहीं, वाहूं न्याय विचार।२८।

॥ इति ॥

॥ अथ १२ मूं इकीशहजार वर्ष तीर्थ रहसी ते अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

सूत्र भगवती में कह्यो, वीसमूं शतक विषेह ।
अष्टमुद्देशक वीर प्रति, गोयम प्रश्न करेह ॥ १ ॥
जम्बू द्वीपनां भरत में, ए अवशर्पिणी मांहि ।
काल केतलुं आपरो, तीर्थ रहस्यै ताहि ॥ २ ॥

जिन कहै जम्बू भरत में, एह अवशर्पिणी मंत ।
वर्ष सहस्र इक बीश मुझ, तीर्थ रहिस्ये तंत ॥३॥
तीर्थ कहिजै केहनें, इम को प्रश्न करेह ।
तसु उत्तर तीर्थ तीको, आगम सूत्र कहेह ॥ ४ ॥
वर्ष सहस्र इक वीश लग, राहिस्यै सूत्र उदार ।
वहु द्वामें जे तीर्थ तुं, सूत्र अर्थ सुविचार ॥ ५ ॥

॥ सोरठा ॥

तीर्थ आगम धाररे, अमर कोष में आखियो ।
तीजा काराड मझाररे, थांत तवर्गे जाणवो ॥६॥
निपान आगम जेहरे, ऋषि सेव्यो जल गुरु बिषै ।
ए चिहुं अर्थ विषेहरे, तीर्थ शब्द कह्यो तिहां ॥७॥

॥ श्लोक ॥

निपानाऽगमयो तीर्थ मृषि जुष्ट जले गुरौ ॥
इत्यमर तृतीय काराडे थांततवर्गे ॥

॥ सोरठा ॥

तीर्थ शास्त्र अवधाररे, हेम अनेकार्थे अख्यूं ।
द्वादश नाम मझाररे, प्रथम नाम ए आखीयो ।८।

॥ श्लोक ॥

तीर्थं शास्त्रे १ गुरौ २ यज्ञे ३, पुण्य क्षेत्रा ४ वतार यो ५ ।
ऋषि जुष्ट ६ जले मांत्रिण्युं ७, पाये ८ स्त्रीरज-
स्यपि ९ ॥ योनौ १० पात्रे ११ दर्शनेषु १२ ॥

॥ इति हेम अनेकार्थे ॥

॥ सोरठा ॥

विश्व कोषरै मांहिरे, तीर्थ नाम कह्युं शास्त्र नुं ।
नव नामां में ताहिरे, प्रथम नाम ए पेखी यैं ॥९॥

॥ श्लोक ॥

तीर्थं शास्त्रा १ ध्वर २ क्षेत्रो ३ पायो ४ पाध्याय ५
मांत्रिषु ६ अवता ऋषि ७ जुष्टांभः ८ स्त्री रजः ९
सु च विश्रुतं ।

॥ विश्वे यांत तवर्गे ॥

॥ सोरठा ॥

तीर्थ शास्त्र इम लेखरे, कह्यो मेदनी कोष मैं ।
दश नामां में देखरे, प्रथम नाम ए परवरो ॥१०॥

॥ श्लोक ॥

तीर्थं शास्त्रा १ ध्वर २ क्षेत्रो ३ पाय ४ नारीरजः ५ सु च । अवता र्‍षि ६ जुष्टांबू ७ पात्रो ८ पाध्याय ९ मंत्रिषु १०

॥ इति मेदनी थांत तवर्गे ॥

॥ सोरठा ॥

गुंणा तीसम उत्तराज्झयणारे, बोल गुनीसम बृत्ति में ।
तीर्थ शब्दे बयणारे, गणधर वा प्रवचन श्रुतः ॥११॥
भगवई बृत्ति मझाररे, तित्थ गराणं नों अर्थ ।
तीर्थ प्रवचन साररे, इमाहिझ समवा यंग बृत्तौ ।१२।
तीर्थ प्रवचन साररे, तेहना अव्यति रेक थी ।
संघ तीर्थ सु विचाररे, तसुं कर्ता तीर्थंकरा ॥१३॥

॥ अत्र टीका ॥

तरंति लेन संसार सागरमिति तीर्थं प्रवचनं तदऽव्यतिरेकाचेह संघः तीर्थं तत करण शीलत्वा तीर्थंकरः ।

॥ एहनों अर्थ वार्तिका करिइं कह छै ॥

तिरै तिणकरी संसार सागर इति तीर्थ ते तीर्थ नें करिवानौं शील प्रणाधकी तीर्थंकर कहियै, इम भगवती नीं बृत्ति में नमो-

त्थूणं में तित्थगरा नौं अर्थ कीयो, इमहिज समवायंग नीं वृत्ति नें विषै जाणवो, इहां तीर्थ नाम प्रवचन सूत्र नुं कह्युं ते पाठ अर्थ रूप सूत्र साधू साध्वी आधार रह्या छै अनें अर्थ रूप सूत्र श्रावक श्राविका नें आधारे रह्यो छै ते सूत्र तीर्थ तो आधेय छै अनें चतुर्विध संघ आधार छै ते आधेय नें आधार नां किण ही प्रकारे करी अभेदोपचार थकी संघ नें तीर्थ कह्युं तेह नें कारिवा नूं शील ते माटे तीर्थंकर कहियै ।

इहां मुख अर्थ प्रवचननें तीर्थ कह्यूं ते प्रवचन रूप तीर्थ बहुल पणें संघनें विषै रह्युं छै तिण सुं संघनें तीर्थ कह्युं ते प्रवचन रूपी तीर्थ थी संघ जुदो नथी ते माटे ।

॥ सोरठा ॥

तीर्थ प्रवचन सारे, तत् करण शील तीर्थंकरा ।
नमोत्थूणं में धारे, राय प्रश्रेणी वृत्ति में ॥ १४ ॥

॥ अत्र टीका ॥

तीर्थं ते संसार समुद्रोऽनेनेति तीर्थं प्रवचनं तत् करण शीला-स्तीर्थ कराः तेभ्यः ॥ इति ॥

॥ एहनुं अर्थ वार्त्तिका करीइं कहै छै ॥

तीरीयै संसार समुद्र इणे करी इति तीर्थ प्रवचन सूत्र ते सूत्र तीर्थंकरिवा ना शील थकी तीर्थंकर कहियै, इहां राय प्रश्रेणी नीं वृत्ति में प्रवचन ते आगम नें तीर्थ कह्युं ते आगम

रूपी तीर्थ नां कर्त्ता तीर्थङ्कर छै ते माटै तीत्थयरे नौं अर्थ तीर्थ कर कियो ।

॥ सोरठा ॥

पन्नवणा बृत्ति मझाररे, पनर भेद में तित्थ सिद्धा ।
प्रथम पदे अवधाररे, दाख्यों छै ते सांभलो ॥१५॥
सत्य प्ररुपक सोयरे, परम गुरू छै तेहनां ।
बचन विमल अवलोयरे, तीर्थ कहिये तेह नें ॥१६॥
ते निराधार नहिं होयरे, तसुं आधारज संघ प्रति ।
तीर्थ कहिये जोयरे, वा धुर गणधर तिहां कह्युं ॥१७॥

॥ अत्र टीका ॥

तीर्यते संसार सागरो अनेनेति तीर्थं यथा अवस्थित सकल जीवाजीवादि पदार्थ परूपकं परमगुरु प्रणीत बचनं तच्च निराधार न भवति इति तदाधारं संघः प्रथम गणधरो वा तस्मिन् उत्पन्नाये सिद्धास्ते तीर्थ सिद्धा ।

॥ एहनुं अर्थ वार्त्तिका करीइं कहैछै ॥

तिरीयै संसार सागर इण करी इति तीर्थ यथावस्थित सकल जीव अजीवादिक पदार्थनां प्ररूपक परमगुरूनां कह्या वचन तेहनें तीर्थ कहियै अनें ते परम गुरूनां बचन रूप तीर्थ ते आधार विना न हुवै इमते संघ नें आधारछै ते भणी संघनें तीर्थ कहिजै, अथवा प्रथम गणधरनें तीर्थ कहियें ते संघरूप

तीर्थनैं विषे रूपना जे सिद्ध थया ते तीर्थ सिद्धः इहां पिण परमगुरूते तीर्थंकर तेहनां वचन ते आगम तेहनैं तीर्थ कह्यो, ते आगम आधार विना न हुवै ते आधार मांटै संघनैं तथा प्रथम गणधरनैं तीर्थ कह्यो ।

॥ सोरठा ॥

आवश्यक निर्युक्तिरे, तास अर्थ मैं भावथी ।
तीर्थ प्रवचन उक्तरे, समर्थ क्रोधादि जीपवा ।१८।

॥ अत्र टीका ॥

इह भाव तीर्थं क्रोधादि निग्रहं समर्थं प्रवचनं मेव गृहते ।

॥ एहनुं अर्थ ॥

इहां भाव तीर्थ क्रोधादि निग्रह समर्थ प्रवचन सूत्र हीज ग्रहण करियै, इहां पिण प्रवचन सूत्रनैं तीर्थ कह्यो ।

॥ सोरठा ॥

इत्यादिक बहू ठामरे, तीर्थ सूत्र भणीं कह्युं ।
ते तीर्थ प्रवचन तांमरे, रहिस्ये इक वीश सहस्र वर्ष १६
प्रवचन तीर्थ सोयरे, संघ आधारे हुवै कदा ।
किण हिक वेलां जोयरे द्रव्य लिंगी आधार हुवै ।२०।
जद को प्रश्न करंतरे, मुनिना गुण बिन जेहनुं ।
भण्यूं सूत्र किम हुन्तरे, तसु उत्तर हिव सांभलो २१

धुर उद्देश ववहाररे, बहु श्रुत बहु आगम भणयुं ।
द्रव्य लिङ्गी जे धाररे, मुनि प्रायश्चितले तिण कनैं २२
इहां द्रव्य लिङ्गी आधाररे, सूत्रागम श्री जिनकह्या।
तसुं श्रद्धा आचाररे, विरूद्ध हुवै ते तो जुदो ॥२३॥

॥ वार्त्तिका ॥

ववहार उद्देशै पहले कह्यो साधूनां रूप सहित भेष धारी बहुश्रुत बहु आगम नूं जांण ते कनैं साधू आलोवणा करै एहवुं कह्युं ए भेषधारीनैं आधार बहु श्रुत बहु आगम कह्यो छै ते माटै तेहनुं जतलुं अेतलुं शास्त्रनां अर्थनूं शुद्ध जाण पणो ते श्रुत आगम रूप तीर्थ नूं अंस संभवै ते माटै किण इक काले चतुर्विध संघ न हुवै तो स्थिलाचारी नैं आधारै प्रवचन रूप तीर्थ नौं अंस हुवै एहवुं संभाविये छै ।

॥ सोरठा ॥

वलि ववहार कथित्तरे, वहु श्रुत आगम भणयूं ।
श्रावक पश्चात्कृत्यरे, मुनी आलोवै तिणकनैं ।२४।
इहां ग्रहस्थ आधाररे, बहुश्रुत आगम जिन कह्या ।
तसुं सावध व्यापारे, ए तो एहथी छै जुदो ॥२५॥
अर्थ रूप अवलोयरे, जाण पणूं छै जेहनुं ।
ते निर्वध छै सोयरे, सूत्र तीर्थ छै जे भणीं ॥२६॥

मिथ्या दृष्टी देखरे, देश ऊंणा दश पूर्व धर ।
उत्कृष्टो संपेखरे, नदी मांहि निहाल ज्यो ॥२७॥
मिथ्याती आधाररे, इहां प्रभू पूर्व आखीया ।
श्रद्धा तास असाररे, ते तो धुर आश्रव अछै ।२८।
इम हिब पंचम आररे, किण वेल्यां मुनि नहिं थया ।
द्रव्य लिंग्याया धाररे, सूत्र रूप तीर्थ हुइ ॥२९॥
संघ आधारे जेहरे, सूत्र रूप जे तीर्थ ते ।
निरंतर नहीं दीसेहरे, वर्ष सहस्र इकवीश लग ३०
कदही संघ आधाररे, कदही अन्य आधार हुवे ।
सूत्र तीर्थ सुखकाररे, वर्ष इकवीश हजार लग ३१
कोई कहै चिहुं विध संघरे, तेह भणी तीर्थ कह्यूं ।
तसुं आधार सु चंगरे, प्रवच तीर्थ ते भणी ॥३२॥
पिण प्रवचन सु प्रशंसरे, द्रव्य लिङ्गी आधार तसुं ।
तीर्थ तणोंज अंशरे, किम कहियै? उत्तर तसूं ॥३३॥
पण्डित मर्ण विख्यातरे, शत दूजे उद्देश धुर ।
पाउवगमन सुजातरे, भत्त पच्चखाण ज दूसरो ।३४।
मुख बचनें करि न्हालरे, मरण पण्डित वे आखीया ।
मुनि अणशण विन कालरे, करै तिको पण्डित मृत्यु॥
बाल मर्ण फुन बाररे, मुख्य बचन करि नें कह्या ।
बार मरण विन धाररे, असंयती नों बाल मृत्क ।३७।

पूरण तापश ताहिरे, वलि जमाली तामली ।
बार मरण में नाहिरे, पिण बाल मरण ते जाणवो ३७
मुख्य बचन करि बाररे, बाल मरण आख्या प्रभू ।
तिम तीर्थ संघ च्याररे, मुख्य बचन करि जाणवा ३८
पण्डित मरण पिण दोयरे, मुख बचनें करिनें कह्या ।
तिम चिहुं तीर्थ जोयरे, मुख्य बचन करि जाणवा ३९

॥ एहिज अर्थ वार्तिका करिइं कहे छे ॥

जिम भगवती शतक दूसरे उद्देशै पहलै मुख्य वचनें करी बाल मरण बारा प्रकार नों कह्यो अनें असंयती अविरती बारा प्रकार विना चालतोही मरजाय ते पिण बाल मरण हीज छै, तथा तामली जमाली प्रमुख नौं बाल मरण हीज छै पिण ते बारा में नथी कह्यो ते माटे ये बार प्रकार बाल मरण मुख्य वचनें करी जाणवो, वा वलि पण्डित मरण वे प्रकार कह्या येक तो पादोपगमन दूजो भक्तपच्चखाण ए पिण मुख वचनें करी कह्या, जे साधू संथारा विना आराधक पद पायो तेह पिण पण्डित मरण हिज छै जिम श्रवानुभूति तथा सु नक्षत्र मुनी नौं संथारो चाल्यो नथी ते भणी भक्त प्रत्याख्यान पादोपगमनें तो नथी पिण पण्डित मरण हिज छै अनें पादोपगमन भक्त पच्च-खाण ए वे भेदें पंडित मरण कह्या ते मुख्य वचनें करी जाणी वा, तथा अराधना ज्ञान दर्शन चारित्र ए तीन प्रकारनीं भग-वती शतक आठ में उद्देशै दशमैं कही ते पिण मुख्य वचनें करी जाणवी, अनें वलि तिणहिज उद्देशै श्रुत ते समकित रहित

अनें शील कुया सहित नें देश आराधक कह्यो तिहां वृत्तीकार कह्यो ए वाल तपस्वी थोडो अंश मुक्ति मार्ग नौं आराधै एह वो अर्थ कियो छै जिम ज्ञान रहित शील सहित वाल तपस्वी मोक्ष मार्ग नौं अंश आराधै ते देश आराधक छै पिण तीन आराधनां में नथी तिम द्रव्य लिङ्गी नें आधार प्रवचन सूत्र ते तीर्थ नौं अंश संभवै पिण ते च्यार तीर्थ में नथी ।

॥ सोरठा ॥

वर्ष इकीस हजाररे, तीर्थ रहिस्यै न्याय तसुं ।
एम संभवै साररे, फुन वहु श्रुत कहे तेह सत्य ४०
वर्ष इक वीस हजाररे, तीर्थ रहिस्ये इम कह्यो ।
पिण चिहुं तीर्थ साररे, रहिस्ये इम आख्यो नथी ४१
ते मांटै अवधाररे, तीर्थ प्रवचन सूत्र छै ।
कदाहि संघ आधाररे, द्रव्य लिङ्गी आधार कादि ४२

॥ दोहा ॥

सूत्र भगवती नीं पवर, मम कृत जोड़ विषेह ।
वलि कर्म्म तीर्थ न्याय कह्यं, ते इहां ग्रहण करेह ४३

॥ इति ॥

॥ अथ चौदमूं आगमा अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

पंच अनें चालीस में, जे चिहुं शरण विचार१ ।
नाम भक्त परिज्ञा२ वलि, फुन पईन्नो संथार३ ॥१॥
जीत कल्प४ पिंड निर्युक्ती५, पच्चखाण कल्प अवलोय।
ए खट नीं नन्दी विषै, साख नहीं छै कोय ॥ २ ॥
महा निशीथ विषे कह्यु द्वितीय अध्ययन मझार ।
कु लिखत दोष देवो नहीं, तसुं कारण अवधार ॥३॥
एहिज महा निशीथ में, किहांयक अर्द्ध शीलोग ।
किहां श्लोक किहां अत्तर नीं, पंक्ती उंली प्रयोग ।४।
किहांयक पानों अर्द्ध ही, किहां पत्र त्रे तीन ।
गल्यो ग्रंथ इम आदि बहु, इह विध कह्यु सुचीन ।५।
वलि कह्यु तृतीय अध्ययन में, ए पुस्तकरे मांहि ।
चैंठ्ठा इक पानाथकी । बीजो पानो ताहि ॥ ६ ॥
तेमाटे ए सूत्रनां, आलावा न पामेह ।
तिहां भणण हार सूत्रां तणां, सां अशुद्ध लिख्युं हुवे जेह ।७।
दोष न देवो तेहनौं, खंड खंड थई एह ।
पत्र सड्या खाधा वलि, जीव उद्देहि जेह ॥ ८ ॥

हरी भद्र निज मतिकरी, सांधी लिख्यूंज ताम ।
इमकह्युं मह्वा निशीथ मैं, वलि अन्य आचार्य्य नाम ९
तिणसूं महा निशीथ पिण, डोहलाणो छै एह ।
सर्व मूलगो नहिं रह्यो, निपुण विचारी लेह ॥१०॥
सेषरह्या खट तेह मैं, काइक काइक बाय ।
अङ्गसूं न मिलै तेहबच, किम मानीं जे ताहि ।११।
टीका चूरणि दीपिका, भाष्य निर्युक्ती जाण ।
किणही करी दीसैनथी, तिणसूंएह अप्रमाण ।१२।
एकादशजे अंगथी, मिलता वचन सुजाण ।
सर्वमानवा योग्यमुझ, पइन्ना प्रमुख पिछाण ।१३।
धुर बे अंग नीं वृत्ति जे, शीलाचार्यें किद्ध ।
अभय देव सूरें करी, नव अंग वृत्ति प्रसिद्ध ।१४।
फुन अभय देव सुरें रची, प्रथम उपाङ्ग प्रबंध ।
चंद्र सूरि विरचित वृत्ति निरावलिया श्रुतस्कंध १५
शेष उपाङ्ग अरु छेदनीं, मलया गिरिकृत जाय ।
हेमाचार्य्य वृत्तिकरी, अनुयोग द्वारनींसोय ॥ १६ ॥
हरी भद्र सूरे करी, दशवै कालिक वृत्ति ।
भाष्य अनें वलि चूर्णिपिण, पूर्वाचार्यकृत्त ॥ १७॥
तिम ए खटनीं नविकरी, पूर्वा चार्य्यें जोय ।
तिणसूं तिणों नमानीया, एहवूं दीसे सोय ॥ १८ ॥

शेष रह्या बत्तीसजे, मानण योग आरोग्य ।
एहथी मिलता अन्यपिण, छै मुझ मानणयोग्य १६

॥ इति पैतालीस बत्तीस आगमाधिकार ॥

॥अथ पनरम मुख वस्त्रिका अधिकार॥

॥ दोहा ॥

इंद्रभूति नैं आखियो, मृगा राणी ताहि ।
मुहपोत्तिया ई करी, मुख बांधो मुनिराय ॥ १ ॥
तेमुखकहियै केहनैं, उत्तर तसु अवलोय ।
नाकतणों ए नाम मुख, न्याय विचारी जोय ॥२॥
दुर्गन्ध आवें नाकनैं, तेमाटै सुविचार ।
नाक बांधवा नी कही, राणी मृगा जिवार ॥ ३ ॥
ज्ञाता अध्ययन आठमैं, दुर्गन्ध व्याप्यां ताहि ।
खट राजा मुख ढांकीया, ते दुर्गन्ध नाके आय ।
ज्ञाता नवम अध्येनमैं, दुर्गन्ध व्याप्यां न्हाल ।
मुख ढांक्या आख्यातिहां, जिनऋषनें जिन पाल।५
ज्ञाता अध्ययन बारमैं, जे जित शत्रूराय ।
मुख ढांके इम आखीया, दुर्गन्ध व्यापे ताय।६।
मुखनो अवयव नाकछै, ते नाक भणी मुखख्यात।
वारूंन्याय विचार नैं, समझो सुगुण सुजात ।७।

होट हडवडी नाक फुन, चक्षु गाल निलार।
मुखना अवयव ते भणी, मुखकहिये सुविचार।।८।
धुरअङ्ग प्रथम अज्झयण में, द्वितीय उद्देश उद्दंत।
पृथिवी वेदन ऊपरै, अंध पुरुष दृष्टन्त। ९।
पगसूं लेई शिरलगे, तनु द्वात्रिंशत् स्थान।
भालाथूं भेदै वलि, खडगे छेदै जान।। १०।।
तिहां होटहडवटी नाक फुन, आंखजीभनैं दन्त।
गाल निलारअरुकर्ण फुन, जू जूआ नाम कथन्त११
ए मुखनां अवयव कह्या, पिण मुख नों नकह्यो नाम।
ते माटे ए सहु भणी, मुख कहियै छै ताम।।१२।।
द्वादश आंगुल मुख कह्यो, नव मुख नौ सहु देह।
अनुयोग द्वारे आखियो, देखो पाठ विषेह।। १३।।
ललाटथी लेई करी, द्वादश आंगुल जाण।
नाक होट नैं हडवटी, ए मुख तणु प्रमाण।।१४।।
गर्गाचार्य ना कुशिष्य, मुखनैं विषै विकार।
भृकुटी करै कह्या प्रभू, उत्तराध्ययन मझार।। १५।।
मुख नों देश निलाड छै, ते निलाड नैं मुख ख्यात।
भृकुटी ललाट नैं विषै, प्रत्यक्ष ही देखात।। १६।।
ठाम ठाम सूत्रे कह्युं, त्रिवलि भृकुटी ललाट।
निरावलिया दिक नैं विषै, प्रभुजी आख्या पाठ।१७।

तिमज मृगा राणी तदा, नाक भणी मुख ख्यात ।
ते दुर्गन्ध प्रति टालवा, पेखो तज पख पात ॥ १८ ॥
कर राखै मुख वस्त्रिका, जसु तीखो उपयोग ।
तो पिण नहिं अटकावतसुं, नहिं मुभ्क खंच प्रयोग १६
तीखो नहिं उपियोग तसुं, जतना काज सुजोय ।
मुख बांधै मुख वस्त्रिका, तो पिण दोष न होय ॥२०॥
मुख बांधै दोरै करी, कोई कहै किहां ख्यात ।
सांचूंजी सांचू कह्युं, सांचूं प्रश्न सुजात ॥ २१ ॥
नहिं तीखो उपियोग तसुं, मुख बांधै सुविचार ।
वायु नीं जतना भणी, पिण नहिं छै शृङ्गार॥२२॥
सूंठ तणों जे गांठियो, गणी देवार्द्धि संवाद ।
भोगवणों भूली गया, संध्या आयो याद ॥ २३ ॥
जाणयो बुद्धि हीणी पड़ी, लिख्या सूत्र सुख राश ।
वीर निर्वाण गयां पछै, नवसय अस्सी वाश ॥ २४ ॥
तिम तीखो उपयोग अति, रहतो जाणै नांहि ।
डोरा सूं मुख वस्त्रिका, बांधै छै मुनिराय ॥ २५ ॥
अशणा दिक प्रति बहिरतां, पांती करतां सोय ।
अन्य साधु प्रति धामतां, चरचा करतां जोय ॥२६॥
मुनि नें कार्य्य भलावतां, इत्यादिक सु प्रयोग ।
मुख बांध्यां बिन किमरहै, अति तीखो उपियोग ।२७।

तिण सुं यत्तना कारणै, डोरो घाली सोय ।
मुख बांधै मुख वस्त्रिका, और कारण नांहिं कोय २८
जदि कहे डोरो किहां कह्यो, तसुं कहिये इम वाय ।
कान विषै घालैं तिका, किसा सूत्रै मांहि ॥ २६ ॥
मुख बांधै डोरे करी, तसु करै निन्दा तात ।
कान बधावे प्रगट ए, आ किसा सूत्र नीं बात ३०
तर्क करै डोरा तणी, कहे किण सूत्रें ख्यात ।
कान बधावै तेहनी, क्यूं नहिं पूछै बात ॥ ३१ ॥
मोर पृच्छनां देश प्रति, घाली कर्ण मझार ।
उदक थकी छांटयां थकां, फूलै तेह तिवार ॥३२॥
इम नित प्रति बहु खपकरी, कर्ण बधाय विशेख ।
इम घाले मुख वस्त्रिका, किसा सूत्र में लेख ॥३३॥
कहे बचन शुद्ध यतना अर्थ, घालां कर्ण मझार ।
तो डोरो पिण यतना अर्थ, न्याय सरिषो धार ॥३४॥
उदक तणां घट नें विषै, डोरी बांधे तेह ।
किसा सूत्र में ते कह्युं, देखोजी चित देह ॥३५॥
तथा तर्पणी प्रमुख जे, डोरी बांधै तास ।
ते किण सूत्रें आखीयो, जोवो हिये विमास ॥३६॥
कम्बर बिछाणा नीं करै, तसुं डोरी बांधेय ।
ते पिण किण सूत्रें कह्युं, न्याय विचारी लेह ।३७।

वालि सौराणा बांधता, डोरी थकीज जोय ।
ते पिण किण सूत्रें कह्यु, उत्तर आपो मोय ॥३८॥
वालि चिरमली सूत्र में, आखी श्री भगवान ।
तसु डोरी बांधे तिका, किसा सूत्र में जान ॥३६॥
पुस्तक नें पूठा तणों, पडलारे पाहिछाण ।
डोरी बांधे छे तिका, किसा सूत्र में बाण ॥ ४० ॥
वालि लेखण राखवा, कलम दान कहिवाय ।
डोरी बांधे तेह नैं, किसा सूत्रेंरे म्हांयँ ॥ ४१ ॥
लिखवारी पाटी तणों, डोरी प्रति बांधेह ।
किसा सूत्र में ते कह्यु, देखो तसु लेखेह ॥ ४२ ॥
तथा लीक पाना तणों, डोरी थी पाडेह ।
फांटया नी पाटी करे, किसा सूत्र में तेह ॥ ४३ ॥
कारण में पग प्रमुखरे, पाटो बांधे देख ।
डोरी बांधे तेह नैं, किसा सूत्र में लेख ॥ ४४ ॥
गोछारे डोरयां थकी, पात्रा बांधे तेह ।
किसा सूत्र मांहीं कह्यो, उत्तर आपो एह ॥ ४५ ॥
डोरा सूं मुंह पोतिया, बांधे जयणा काज ।
तर्क करे तसु पूछि ए, इतला बोल समाज ॥ ४६ ॥
कहै अष्ट पाहिर बांध्यां रहै, ते किण सूत्रे ख्यात ।
तो एक पाहिर बांधे तिका, किण सूत्र अवदात ।४७।

बखांण में इक पहिर लग, कर्ण घाल बाधंत ।
ते पिण किणी सिद्धान्त में, भाख्यो नांहि भगवन्त ४८
अष्ट पहोर बांध्यां थकां, दोष घणों जो होय ।
तो एक पहोर बांध्यां थकां, दूषण थोडो जोय ॥४६॥
जो एक पोहर बांध्यां थकां, दोष नहिं छै कोय ।
तो आठ पहर बांधे तसूं, दोषण किण विध होय ।५०।
डोरो घाले कर्ण में, तहनों दोषण होय ।
तो कर्ण विषै मुख वस्त्रिका, घाल्यां दोषण जोय ।५१।
जो कर्ण विषै मुख वस्त्रिका, घाल्यां दोष न कोय ।
तो डोरो घालै कर्ण में, तो पिण दोष न होय ॥५२॥
कोई कहै मुख वस्त्रिका, अष्ट पहिर लग एह ।
बांध्यां कफ में ऊपजै, जीव असंखित जेह ॥ ५३ ॥
तो मुनि अज्झा तनु विषै, थयो गुम्बडो कोय ।
राधि रुधिरै ऊपरै, पाटो बांधै सोय ॥ ५४ ॥
जीव समुर्च्छिम ते विषै, उपजै तिणरै लेख ।
पाटारै लागा रहै, रुधिर राधि संपेख ॥ ५५ ॥
जब कहै तनुनीं गर्म थी, जीव न उपजै आय ।
तो कफ मैं किम ऊपजै, एक सरिषो न्याय ॥५६॥
पाटै जीव न ऊपजै, तो कफनीं क्यूं ताण ।
समझो जी समझो तुम्हे, समझो चतुर सुजाण ।५७।

तनु असज्झाई मुनि तणों, इक विध त्रण संवद ।
रजुश्वला नें त्रण फुन, अज्भा नें बे भेद ॥५८॥
ए तनु असज्झाइ विषे, मुनि अज्भा नें तहाय ।
निज निज स्थानक नें विषे, करवी नहिं सज्झाय ५६
ए तनु असज्झाई विषे, मुनि अज्भा नें ताहि ।
देवी लेवी वांचणी, कल्पै मांहो मांहि ॥ ६० ॥
ववहार उद्देशै सात में, इम भाषी प्रभु वांणि ।
राखो जिन वच आस्था, चमको मती सुजांण ॥६१॥
तनु सलग्न वस्त्र नें विषे, जो जंतु उपजेह ।
तो मांहों मांहीं वांचणीं, तसुं आज्ञा किम देह ॥६२॥
जो उघाडै मुख बोलियां, न मरै वायु काय ।
तो वखांण में मुंह वस्त्रिका, ते बांधै किण न्याय ६३
फूंक देणी वरजी प्रभू, वायु नें अधिकार ।
दशवै कालिक देखलो, चुर्थ अध्येन मझार ॥६४॥
मुख नें वायु करि मरै, वायु जीव विचार ।
दशमें अङ्ग देखलो, पाहिलै आश्रव द्वार ॥ ६५ ॥
सूत्र भगवती नें विषै, सोलम शतक मझार ।
द्वितीय उद्देशै भाखीयो, कहिए ते अधिकार ॥६६॥
शक्र उघाडै मुख लवे, भाषा सावद्य सोय ।
हस्त वस्त्र मुख दे वदै, निरवद्य भाषा होय ॥ ६७ ॥

वृत्तिकार इम आखीयो, जीव संरक्षण जोय ।
निरवद्य भाषा जाणवी, अन्यथा सावद्य होय ॥६८॥
विकलेन्द्री नां पज्जत्तगा, तेहना स्थानक जेह ।
ते सुरलोक विषै नथी, पन्नवणा द्वितीय पदेह ।६९।
धर्म सम्बन्धी वार्त्ता, करै शक्र जेहवार ।
बोलै मुख ढांकी तदा, ते निरवद्य वच सार ॥७०॥
संसारिक जे वार्त्ता, करै शक्र जेहवार ।
वदै उघाडै मुख तदा, ते सावद्य वच धार ॥७१॥
तिण कारण वायु तणी, दया अर्थ मुनि राज ।
मुख बांधै मुंह पोत्तिया, पिण अवर नहिं छै काज ७२

॥ इति ॥

॥ अथ सतरमूं स्याद्वाद अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै भगवंत नों, स्याद्वाद मत जोय ।
एकान्तिक कहिवूं नहीं, तसु उत्तर अवलोय ॥ १ ॥
स्याद कथंचित जाणवूं, किण ही प्रकार करेह ।
वदवूं कहिवूं वादते, स्याद्वाद छै एह ॥ २ ॥
कहिये किणी प्रकार करि, ते स्याद्वाद कहिवाय ।
न्याय कहुं छुं तेह नों, सांभलजो चितल्याय ॥३॥

सूत्र भगवती नें विषै, शतक सात में सोय ।
द्वितीय उद्देशै भाखीयो, जीव प्रश्न अव लोय ॥ ४ ॥
किणी प्रकार करि प्रभू, जीव सास्वता ख्यात ।
किण ही प्रकार असास्वता, आख्या श्री जगनाथ ५
द्रव्य थकी तो सास्वता, भाव थकी सु विचार ।
असास्वता प्रभुजी कह्या: ए स्याद्वाद मत सार ॥६॥
सूत्र भगवती नें विषै, शतक चौद में सार ।
तुर्य उद्देशै भाखियो, परमाणु अधिकार ॥ ७ ॥
कह्यो परमाणू सास्वतो, किणी प्रकार करेह ।
किणी प्रकार असास्वतो, हिव तसुं न्याय कहेह ॥८॥
द्रव्य थकी तो सास्वतो, परमाणू प्रति ख्यात ।
न मिटै परम अणू पणों, किण ही काल विख्यात ।९।
वर्णादिक नें पज्झव करि, असास्वता अवलोय ।
स्याद्वाद वच एह छै, न्याय दृष्टि करि जोय ॥ १० ॥
बृहत्कल्प मांहि कह्युं, पंचमुद्देश मझार ।
प्रथम पोहर अशणादि प्रति, वहिरी नें अणगार ।११।
तुर्य पाहिर राखी करी, ते अशणादि प्रतेह ।
भोगवणो कल्पै नहीं, सुखे समाधे एह ॥ १२ ॥
गाढा गाढ आतंक करि, तुर्य पाहिर में लेह ।
भोगवणो कल्पै तसुं, स्याद्वाद वच एह ॥ १३ ॥

प्रथम पहिर बहिरी करी, कारण पडियां ताहि ।
रात्री विषै जे भोगवै, ए स्याद्वाद वच नांहि ।१४।
तुर्य पहिर आज्ञा कही, निश नीं आज्ञा नांहि ।
तिण सुं निश नहिं भोगवै, कारण पडियां ताहि ।१५।
द्वितीय उद्देशै नें विषै, बृहत्कल्पैरै मांहि ।
जल वा मदनां घट तिहां, रहिवुं कल्पै नांहि ॥१६॥
अन्य स्थान न मिलै कदा, तो इक बे निशि जांण ।
रहिवूं कल्पै प्रभू कह्यो, ए स्याद्वाद पहि छाण ॥१७॥
तिण हिज उद्देशै आखियो, जे आखी निशि मांहि ।
दीपक वा अग्नि बलै, तिहां नहिं रहि वूं ताहि ।१८।
जो अन्य जागां नहिं मिलै, तो इक बे निशि तिणस्थान
रहिवूं कल्पै प्रभू कह्यो, ए स्याद्वाद वच जान ॥१९॥
मुनि नें संघट्टो स्त्री तणों, करिवो बरज्युं स्वाम ।
सोलमां उत्तराध्ययन में, वलि बहु सूत्रें तांम ॥२०॥
बृहत्कल्प छटै कह्युं, नदी प्रमुख थी बार ।
अज्भा प्रति काढै मुनी, ए स्याद्वाद मत सार ॥२१॥
ग्रहस्थ पुरुष वा स्त्री भणी, नदी प्रमुख थी जोय ।
काढै मुनि वच एह वूं, स्याद्वाद नहिं कोय ॥ २२ ॥
दशवै कालिक देखल्यो, तुर्य अध्ययन मझार ।
सचित उदक नहिं संघटै, ए जिन आज्ञा सार ॥२३॥

बृहत्कल्प तीजै कह्युं, विहार कारण थी जोय ।
नदी उतरणी प्रभू कही, ए स्याद्वाद वच होय ॥२४॥
मरणान्त कष्ट मुनि भणी, सचितोदक अवलोय ।
भोगवणूं प्रभू एहवूं, स्याद्वाद नहिं होय ॥२५॥
उत्तराध्ययन कथा विषै, परिशह द्वितीय प्रसिद्ध ।
मरणान्त कष्ट क्षुलक शिष्य, सचितोदक नहिं पिद्ध २६
शत अष्टादश भगवती, दशम उदेशै देख ।
पूछयो सोमिल प्रभू प्रति, जे स्युं छो तुम्ह एक ॥२७॥
तथा तुम्हे स्यूं दोय छो, वा अक्षय तुम्ह होय ।
फुन स्यूं अव्यय छो तुम्हे, अव स्थित तुम्ह जोय २८
कै तुम्ह अनेक भूत फुन, भाव भविक अव धार ।
वीर भणी खट प्रश्न ए, सोमल पूछया सार ॥२९॥
वृत्ति कार कह्यो तब प्रभु, स्याद्वाद प्रति त्हाय ।
सर्व दोष गोचर रहित, अवि लंबी कहिवाय ॥ ३० ॥
इक पिण हूं छूं सोमिला, यावत वलि अनेक ।
भूत भाव भावी अपि, हूं छूं इम कह्युं पेख ॥ ३१ ॥
किण अर्थे प्रभु इम कह्युं, जाव भविक हूं सोय ।
प्रभु कहै द्रव्यार्थ करी, इक पिण छूं अवलोय ॥ ३२ ॥
ज्ञान दर्शन करि दोय हूं, प्रदेशार्थ करि त्हाय ।
अक्षय हूं अव्यय अपि, अव स्थित पिण थाय ॥३३॥

अनेक भूत भावी अपि, हूं उपयोग करेह ।
न्याय सहित उत्तर छवूं, स्याद्वाद वच एह ॥३४॥
इमज थावरचा सुक प्रते, ज्ञाता पंचम् लेह ।
इमज पार्श्व सोमिल प्रतै, पुष्फिया विषै कहेह ।३५।
सहु दोषण करि रहित छै, स्याद्वाद वच एह ।
पिण दोषण कर सहित वच, स्याद्वाद न कहेह ॥३६॥
पूर्वापर अविरुद्ध वच, स्याद्वाद मति मांहि ।
पिण पूर्वापर विरुद्ध वच, स्याद्वाद वच नांहि ॥३७॥
इत्यादिक प्रभू आखिया, किण ही प्रकार करेह ।
नित्य अनित्यादिक जिके, स्याद्वाद वच तेह ॥३८॥
पिण ज्यो किण ही प्रकार करि, कुशील में नांहि धर्म्म ।
वलि नांहि किण ही प्रकार करि, शील विषै अघ कर्म्म
अज हिन्सादिक में नहीं, किण ही प्रकारे धर्म ।
किण ही प्रकार बंधै नहीं, संवर थी अघ कर्म ॥४०॥
किण ही प्रकार हुवै नहीं, सावद्य मांहीं धर्म ।
किण ही प्रकार बंधै नहीं, निरवद्य थी अघ कर्म ।४१।
किण ही प्रकार हुवै नहीं, जिन आज्ञा विन धर्म ।
किण ही प्रकार नहीं बंधै, आज्ञा थी अघ कर्म ॥४२॥

॥ अथ १७ मूं विषंवाद अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै विषंवाद मत, प्रभू नौं समय विषेह ।
किण सूत्रै वच जे कह्युं, किहां अन्यथा तेह ॥ १ ॥
किण सूत्रै वच जे कह्युं, ते वच अन्य सूत्रेह ।
विरूटै ते विषंवाद कहै, उत्तर तास सुणेह ॥ २ ॥
शखर सप्त भङ्गी कही, जिन वाणी सुखदाय ।
सप्त नयें करि सत्य वच, तसुं विषंवाद न कहाय ।३।
किण ही सूत्र विषे प्रभू, आख्या वयण विख्यात ।
विगटै जे अन्य सूत्र थी, ते विषंवाद वच थात ॥४॥
विषंवाद वच एह तो, प्रभू नौं नांहि छै कोय ।
वच केवल ज्ञानी तणों, व्यभचारिक नांहि होय ।५।
विषंवाद जोगें करी, अशुभ नाम कर्म बंध ।
अष्टम शतकै भगवती, नवमें उद्देशै संध ॥ ६ ॥
विषंवाद ए अशुभ छै, तिण थी अशुभज बंध ।
तो किम हुवै प्रभूजी तणों, विषंवाद वच मंद ॥७॥
अ विषंवाद योगें करी, नाम कर्म शुभ बंध ।
अष्टम शतकै भगवती, नवम उद्देशै संध ॥ ८ ॥

दशमां अङ्ग में देखलो, ससमध्येनें मांहि ।
सत्यवादी छै तेह नुं, विषंवाद वच नाहिं ॥ ९ ॥
सत्यवादी संसार का, तसुं विषंवाद वच नाहिं ।
तो प्रभूजी नां वयण ते, विषंवाद किम थाय ॥१०॥
पूर्वापर अविरुद्ध वच, प्रभू नां समवायङ्ग ।
वच अतिशय पैंतीस में, अतिशय नवम सुचङ्ग ।११।
उत्सर्ग में आज्ञा किहां, किहां आज्ञा अपवाद ।
इकसूं इक विगटै न ते, पिण नाहिं छै विपंवाद ॥१२॥
उत्सर्गे आज्ञा नथी, ते कार्य्य नीं जान ।
अपवादे आज्ञा कही, ते विषंवाद मत मान ॥१३॥
विषंवाद रै ऊपरै, कहिये हेतु सार ।
निपुण न्याय वच सांभली, द्वेष हिये मत धार ।१४।
बार मास हैं वर्ष नां, तेह विषै सुविधान ।
अधिक धर्म करिवा तणुं, मास भाद्रवो जान ।१५।
तेह विषै पण प्रगट है, अधिक धर्म नां दीह ।
पर्व पर्युषण प्रसिद्ध ही, पोसह प्रमुख सु लीह ॥१६॥
ते पर्युषण नें विषै, कल्प सूत्र व्याख्यान ।
तेह विषै वतका कही, सुण ज्यो सुगण सुजान ।१७।
प्रभू दशमां सुर लोक थी, भव स्थित भोगव तेह ।
चवियां पहलां नें पछै, जाणयुं अवधि करेह ।१८।

चवन समय नवि जांणियों, सूक्ष्म काल विशेष ।
इम हिज पनरम अज्झयण में, द्वितीय आचाराङ्ग लेख १९
कल्प अनैं धुर अङ्ग मैं, चवन काल त्रहुं धार ।
एक सरिषा आखीया, हिव साहरण विचार ॥२०॥
गर्भ साहरण कियो तिहां, कल्प सूत्र मैं ख्यात ।
संहरियां पहिलां पछै, जाणयुं श्री जगनाथ ॥२१॥
संहरता वेलां प्रभू, वर्त्तमान कालेह ।
जाणयुं नहिं एहवुं कह्युं, कल्प सूत्र वच एह ।२२।
आचाराङ्ग पन्नर मैं कह्यो, साहरण प्रथम पश्चात ।
वलि साहरतां वार पिण, जाणयुं श्री जगनाथ ।२३।
चवन काल तो समय इक, छद्मस्थ नों उपयोग ।
असंख समय नूं ते भणी, चवन न जाणयूं जोग २४
सुर कार्य्य साहरण ते, समय असंख सुजाण ।
तिण सूं साहरतां प्रभू, जाणयूं अवधि प्रमाण ।२५।
साहरतां जाणयुं नहीं, कल्प सूत्र मैं ख्यात ।
साहरतां जाणयुं कह्युं, धुर अंगे जगनाथ ॥२६॥
कल्प सूत्र धुर अङ्ग मैं, ए विहुं वच आख्यात ।
वच सांचो झूठो किसो, देखो तज पख पात ॥२७॥
वीर प्रभू तो एक छै, जाणयूं धुर अंग ख्यात ।
नवि जाणयूं कल्पे कह्युं, विहुं सांचा किम थात ।२८।

उभय मांहिलो एकतो, मिथ्या वचन विशख ।
देखोजी देखो तुम्ह, देखो तज मत टक ॥ २९ ॥
जाण्यां धुर अङ्ग कह्या, तेह सत्य वच जांण ।
नवि जाण्युं करनैं कह्युं, ते वयण अप्रमाण ॥३०॥
बृहत्कल्परे पंच मैं, तनु कारण थी ताय ।
सूर्य ऊगो जाणि नैं, आहार लियो मुनिराय ॥३१॥
भोगवतां शङ्का पडी, रवि ऊगो के नांहिं ।
अथवा सूर्य आथम्यों, तथा आंथम्यों नांहिं ॥३२॥
शंक सहित इम भोगव्यां, रात्री भोजन पिण्ड ।
भोगवतौ पामैं तिको, गुरू चौमासी दण्ड ॥३३॥
इम हिज कारण विन रवि, ऊगौ जाणी ताय ।
आहार ग्रह्यो पिण शङ्क सहित, भोगवियां दंड आय ३४
दशम उद्देश निशीथ मैं, रात्री भोजन ताय ।
कारण सूं पिण भोगव्यां, दण्ड चौमासी आय ।३५।
निशीथ उद्देशै बारमैं, चुर्णि विषै अवलोय ।
निशि भोजन कारण थकी, भोगवणौ कह्यो सोय३६
इम हिज बृहत्कल्प तणीं, चुर्णि वृत्ति विषेह ।
रोगादिक कारण मुनी, निशि भोजन जीमेह ॥३७॥
सूत्रे निशि भोजन प्रतै, वर्ज्यो ते तो शुद्ध ।
चूर्णि विषै ए स्थापियो, तेह प्रत्यक्ष विरुद्ध ॥३८॥

निशीथ उद्देशै पन्नर में, आखी श्री जिन वांण ।
सचित अम्ब चूंसै मुनि, दण्ड चौमासी जांण ।३९।
आख्यो चूर्णि मैं तिहां, शिष्य अपंडित सोय ।
रोग मिटावा निमित्तैं, वैद्य कथन थी जोय ॥४०॥
अथवा मारग चालतां, उणोदरी छै तेह ।
अणसरतैं जे भोगवै, विरुद्ध कहिजे जेह ॥ ४१ ॥
सूत्रैं वरज्यो सचित अम्ब, चूर्णिकार फुन तेह ।
कारण पडियां चूंसवूं, कह्युं विरुद्ध वच येह ॥४२॥
सचित रूंख मुनि जो चढै, तो चौमासिक दण्ड ।
निशीथ उद्देशै बारमैं, श्री जिन वयण सुमण्ड ४३
सूत्र निशीथ तणी जिका, चूर्णि विषै इम वाय ।
स्वान प्रमुख नां भय हरण, दण्ड ग्रहै मुनिराय ।४४।
प्रथम अचित दांडो ग्रहै, पछै मिश्र परि तेण ।
प्रथम परित्त यावत पछै, अनन्त काय नुं जेण ।४५।
रूंख ऊपर मुनि नवि चढै, ए जिन आज्ञा शुद्ध ।
चूर्णि कार कह्युं सचित दण्ड, ग्रहै ते वयण विरुद्ध ४६
ॠषभ भरत फुन बाहुबलि, ब्राह्मी सुन्दरी बेह ।
लख चौरासी पूर्व नूं, आयु तूर्य अङ्गेह ॥ ४७ ॥
ॠष मण्डल मांहि कह्युं, ॠषभ देव भगवान ।
भरत विना वालि ॠषभ नां, पूत्र निर्वाणुं जान ।४८।

भरत तणां वालि अष्ट सुत, अष्टोतरसौ एह ।
एक समय सीझा तीको, विरुद्ध वचन छै जेह ।४६।
ऋषभ बाहुबलि आउषो, पूर्व चौरासी लक्ष ।
किम तसुं शिव गति इक समय, पेखो तज मतपक्ष ५०
शत चौदश मैं भगवती, सप्तम उद्देश विपेह ।
वृत्ति विषे आख्यो तिको, सांभलजो चित देह ॥५१॥
पंदरसौ प्रति बोधिया, तापस गौतम सांम ।
प्रभूपै आवत पामियां, केवल युग अभिराम ।५२।
भो साधो वन्दो तुम्हे, श्री जिन प्रति शिरनाम ।
इम गोतम आखें छतें, जिन भाषे गुण धाम ॥ ५३ ॥
ए केवल ज्ञानी तणीं, हे गौतम मुनिराय ।
लागे तुझ आशातनां, वृत्ति विषे ए वाय ॥५४॥
दशवे कालिक सूत्र मैं, नव मैं झयण विपेह ।
प्रथम उद्देशे ज्ञारमीं, गाथा मैं इम लेह ॥ ५५ ॥
विप्र अग्निहोत्री तिको, अग्नि प्रतै शिरनांम ।
आहुती पद मंत्र पढ, घृतादि सींचै तांम ॥५६॥
आचार्य प्रतै इह विधै, वारू शिष्य विनीत ।
वर अनन्त ज्ञानी छतौ, आराधे इह रीत ॥५७॥
हरीभद्र सूरि करी, वृत्ति विषै इम उक्ति ।
शिष्य केवल ज्ञानी छतौ, करै गुरू नीं भक्ति ।५८॥

कह्युं वृत्ति मैं जिन भनै, वंदो गौतम ख्यात ।
तसुं प्रभू कही आशातना, केम मिलै ए वात ।५६।
गुरु वंदै शिष्य केवली, सूत्र विषै इम ख्यात ।
तो प्रभू वंदो इम कह्यां, आशातन किम थात ।६०।
सचित आहार मुनि नैं अभक्ष, पंचम अङ्ग प्रबंध ।
ज्ञाता अध्येनैं पंचमैं, निरावलिया श्रुत स्कंध ।६१।
द्वितीय आचारङ्ग लागतां, आधा करमी आहार ।
अप्राशुक पिण वृत्ति मैं, भोगवणुं कह्यु धार ।।६२।।
कह्यो अफासु अभख जिन, वृत्ति विषै फुन तेह ।
कह्यु भोगवणो कारणै, विरुद्ध वचन छै एह ।।६३।।
शत पण वीसम भगवती, छट्ठा उद्देशा मांहि ।
बकुश उत्तर गुण तणो, पडि शेवी कह्यु ताहि ।६४।
तिणज उद्देशे वृत्ति मैं, बकुश प्रति इम ख्यात ।
मूल उत्तर पडिशेविये, तेह विरुद्ध संजात ।।६५।।
ठाणा अङ्ग ठाणे चतुर्थ, प्रथम उद्देशे पेख ।
सनत कुमार तणी कही, अंत क्रिया सुविशेख ।।६६।।
आवश्यक निर्युक्ती मैं, उत्तराध्येन वृत्ति मांहि ।
तीजै स्वर्ग गयुं कह्यो, मिलै नाहिं ए वाय ।।६७।।
अष्टम शतके भगवती, द्वितीय उद्देशा मांहि ।
एकेन्द्री निश्चय करी, कह्या अज्ञानी ताहि ।।६८।।

कर्म्म ग्रन्थ मैं देखल्यो, एकेन्द्री रै मांहि ।
बे गुण ठाणा आखीया, तेह विरुद्ध कहाहि ।६९।
शतक सात मैं भगवती, छट्ठे उद्देश संवेद ।
छट्ठे आर वैताढय विन, सहु गिर हुस्ये विछेद ।७०।
प्रकरण मैं शत्रुंज गिरि, सप्त हस्त परिमाण ।
रहिस्ये आख्यो तेह वच, प्रत्यक्ष विरुद्ध पिछाण ।७१।
अष्टम् शतकै भगवती, नवम् उद्देश विपेह ।
माया गूढ माया करै, वचन अलीक वदेह ॥७२॥
कूडा तोला नैं वालि, कूडा मांप करेह ।
ए च्यारूंई प्रकार करि, तीरि आयु बंधेह ॥ ७३॥
ए त्रिहुं कारण अशुभ थी, तीर्यंच आयु वन्ध ।
तिण कारण तिर्यंच नूं, आयु पाप कथिंध ॥ ७४॥
कर्म्म ग्रन्थ मांही कह्यो, तिर्यंच आयु पुन्य ।
ते मांटै ए सूत्र थी, वचन विरुद्ध जघुन्य ॥७५॥
पंच स्थावर विकलेन्द्रिया, ए पिण तीर्यंच जाण ।
तास आउषो पुन्य कहै, प्रत्यक्ष विरुद्ध पिछाण ७६
जघन्य आउषा नुं धणीं, तीर्यंच मरि नैं तेह ।
जो तीर्यंच मैं ऊपजै, कोडि पूर्व स्थित केह ।।७७॥
जघन्य आयु पंच तिरि तणां, मांठा अध्यवसाय ।
कह्या भगवती नै विषै, शतक चौवीसमां मांहि ।७८।

अपसत्थ अध्यवसाय सूं, कोडि पूर्व तिरि होय ।
तिण सु ए तिरि आउषो, पाप कृत अवलोय ।७६।
कुल चाण्डाले ऊपनौं, हरकेशी मुनिराय ।
उत्तराध्ययन विषै कह्युं, बारमां अध्येन म्हाँय ।८०।
कर्म्म ग्रन्थ मांहीं कह्यो, छट्ठे गुण ठाणेह ।
नींच गोत नो उदय नहीं, न्याय मिलै किम तेह ।८१।
अष्टम शतके भगवती, दशम उद्देशे इष्ट ।
जघन्य ज्ञान आराधनां, सत अठ भव उत्कृष्ट ।८२।
वृत्तिकार कह्युं यह विध, चरित सहित जे ज्ञान ।
तेहनी जघन्य आराधनां, तसु भव ए पहिछान ।८३।
बीजा सम दृष्टी तणां, देश व्रती नां जेह ।
भव उत्कृष्ट असंख हैं, न्याय वचन छै एह ।।८४।।
चंदा विजय ग्रन्थमैं, आराधक नां सोय ।
आख्या भव उत्कृष्ट त्रण, यह मिलै नाहिं कोय ।८५।
अष्टम् अङ्ग नेम प्रभू, कृष्ण भणी आख्यात ।
तूं तीजी पृथ्वी विषै, जास्ये स्थित दधि सात ।८६।
तीजी थी अन्तर रहित, निकली सय बारेह ।
अमम नाम द्वादशम् जिन, थास्ये महागुन गेह ८७
इहां आख्यो अन्तर रहित, तृतीय नरक थी ताहि ।
निकली तीर्थंकर हुस्ये, तिण सु बिच भव नांहि ८८

प्रकरण रत्तन संचय विषै, आख्यो कृष्ण मुरार ।
बालू प्रभाथी नीकली, नर भव लही उदार ।८९।
ब्रह्म कल्प मैं सुर थई, हुस्ये तीर्थंकर देव ।
इम आख्या तसु पञ्च भव, केम मिलै ए भेव ९०
इत्यादिक जे सूत्र थी, बृत्ति प्रमुखरे मांहि ।
विरुद्ध बचन छै ते प्रतै, किम मानी जै ताहि ।९१।
द्वितीय आचारङ्ग नैं विषै, दशम उद्देशै म्हाय ।
मंस मच्छ कह्यो पाठ में, तास अर्थ कहि राय ।९२।
टबो पार्श्व चंद्र सूरि कृत, तेह विषै इम ख्यात ।
बृत्तिकार ए मंस मच्छ, लोक प्रसिद्ध आख्यात ९३
विरुद्ध सूत्र सुं ते भणीं, नसंभाविये ए अर्थ ।
वलि गीतार्थ जे वदै, प्रमाण छै ज तदर्थ ॥९४॥
अस्थी शब्दै सूत्र मैं, कुलिया छै बहु स्थान ।
एगट्ठिया हरडै कह्यु, सूत्र पन्नवणा जान ॥९५॥
कह्या दाडिम प्रते बहुट्ठिया, एहवा शब्द प्रभूत ।
अस्थि शब्द कुलिया कह्या, तो मंस शब्द गिर हुन्त ९६
एहवो संभाविये अछै, ते माटै अवलोय ।
बनस्पातिज विशेष छै, मन्स मच्छ ए जोय ।९७।
भाव उघाडै मन्स मच्छ, चारित्रया नैं जेह ।
कारण थी पिण आहार वो, योग्य नथी दीसेह ।९८।

वलि सूत्र मैं साधु नैं, उत्सर्ग भाव आख्यात ।
वृत्ति विषै अपवाद ए, भाव तणौ अवदात ॥ ९९ ॥
तिण जे विशेष सूत्र नो, अर्थ उत्सर्ग पणेह ।
जेम अछै तिमहिज मिलै, इम कह्यु टबा विषेह १००
टबा कार पिण इम कह्यो, सूत्र थकी विगटेह ।
अर्थ प्रमाण तिको नहीं, तो मुझ दूषण किम देह १०१

॥ इति ॥

॥१८मूं भगवती मैं निर्युक्ती कही तथा पन्नवणा सामाचार्य्य कृत कहै तसुत्तर अधिकार॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै निर्युक्ती कही, शत पण बीसमा मांहिं ।
तृतीय उद्देशै भगवती, तुम्हे न मानूं कांहिं ॥ १ ॥
तसुं पूछीजे निर्युक्ती, केहनी कीधी जेह ।
भद्र बाहु कृता तव कहै, चौद पूर्व धर तेह ॥ २ ॥
तसुं कहिये जे तुम्ह कही, भद्र बाहु कृत एह ।
तो भगवती सूत्र विषै तिका, केम कही छै तेह ॥ ३ ॥
वीर छतां ए भगवती, तेह विषै अवधार ।
किम कहि भद्र बाहु कृता, देखो न्याय विचार ॥ ४ ॥

भद्र बाहु मोडा हुवा, पञ्चम् अर्के सुजात ।
चौथ अरके भगवती, तेह विषै किम थात ॥ ५ ॥
ग्रामो नास्ति सीमः कुतः, भद्र बाहु अणगार ।
नथी हुंता तो तसु कृता, केम निर्युक्ति तिवार ॥ ६ ॥
सूत्र भगवती नैं विषै, कही निर्युक्ति जेह ।
तेह मानवा योग अम्है, पिण हिवडां नहिं तेह । ७ ।
तव कहै पट तेबीस मैं, सामाचार्य्य ताहि ।
सूत्र पन्नवणा तिण कर्‌युं, कह्यो पीठका मांहिं ॥८॥
गणधर कृत ते भगवती, तेह विषै सु विचार ।
नाम पन्नवणा नौ कह्यो, ते किण विध अवधार ॥६॥
तसुं कहिये ते पन्नवणा, सामाचार्य्यं जोय ।
मोटा नीं छोटी करी, एहवुं दीसै सोय ॥ १० ॥
पिण मूल थकी कीधी नवी, इसो संभवै नांहिं ।
दश पूर्वधर ते नहीं, तसु कीधी किम थाय ॥ ११ ॥
सम्पूर्ण दश पूर्व धर, चौदश पूर्व धार ।
तास रचित आगम हुवै, वारू न्याय विचार ॥ १२ ॥
हेमि नाम माला विषै, धुर काण्डे अवदात ।
सुहस्ताद्या वज्रान्ता, दश पूर्व धर आख्यात ।१३।
सुहस्त सें लेई करी, वज्र स्वामी लग जोय ।
दश पूर्व धर दाखिया, अधिक पूर्व नहिं होय ।१४।

स्वामी वज्र थयां पछै, बहु वर्षे सुविमास ।
सामान्याचार्य तो थया, दश पूर्व नहिं जास ॥१५॥
तसु कृत आगम किम हुवै, न्याय नेत्र करि जोय ।
सूत्र वृहत् नौं लघू करै, तसुं कारण नहिं कोय ॥१६॥
इमहिज सूत्र निशीथ प्रति, गणी विसाह विचार ।
मोटा नूं छोटो कर्युं, एहवुं दीसै सार ॥ १७ ॥
वलि कहै दशवैकालिक पिण, कर्युं सींजंभव एह ।
तास नाम नदी विषै, किम आख्यो गुण गेह ॥१८॥
गणधर कृत जे भगवती, तास विषै सुविचार ।
नाम नदी नूं पिण कह्यो, हिव तसुं उत्तर सार ॥१९॥
जेम पन्नवणा तिमज ए, वृहत् थकी लघू कीध ।
पिण मूल थकी कीधी नवी, नथा संभवै सीध ॥२०॥
चौदश पूर्व मांहि थी, अर्थ अनोपम सार ।
दशवैकालिक वृहत् पिण, पूर्वे रचित उदार ॥२१॥
ते मोटा नूं ए लघू, मनक पुत्र अर्थेह ।
सूत्र सींजंभव पिण कर्युं, न्याय संभवै एह ॥ २२ ॥

॥ इति ॥

॥ अथ १६ मूं नदी थिरावली अधिकार ॥

कोई कहै नदी तणीं, थिरावली छै तेह ।
गणधर कृत के अन्य कृत, हिव तसुं उत्तर देह ॥१॥

नदी पीठका नैं विषै, सुधर्म जम्बू साँम ।
प्रभव सीजंभव आदि त्यां, पाठ बन्दे बहु ठांम ।२।
अनागत जिन हुर्य अङ्क, वन्दे पाठ न ख्यात ।
तेह अनागत मुनि भणीं, किम बंदै गणीनाथ ।३।
तिण सूं यह थिरावली, देव वाचक कहिवाय ।
पिण गणधर कृत ए नहीं, निर्मल विचारो न्याय ४
थिरावली नैं अन्त कहुं, अन्य पिण सहु भगवंत ।
प्रणामी ज्ञान प्ररुपणा, कहस्युं तास उदन्त ॥ ५ ॥
नदी सूत्र नीं वृत्ति में, आख्यो इम अवदात ।
दुष्य गणी नौं शिष्य जे, देव वाचक इम ख्यात ।६।
इण लेखे नदी सूत्र, दुष्य गणी शिष्य देव ।
मोटा नूं छोटो कन्यु, ते जाणै जिन भेव ॥ ७ ॥
कथा तणी गाथा जिके, नदी सूत्रैं मांहि ।
देव वाचक कीधी हुवै, एहवु दीसै न्याय ॥ ८ ॥
दश चौदश पूर्व धरा, आगम रचै उदार ।
ते पिण जिननी शाख थी, विमल न्याय सुविचार ।६।
पिण जिननी जे शाख विन, आगम सूत्र अमोल ।
छद्मस्थ कृत किण विध हुवै, त्राजु न्याय सूं तोल ।१०।
चो नाणी गोयम गणी, चौदश पूर्व धार ।
ते पिण बचन खलाविया, सप्तम अंग मझार ११

दृष्टीवाद तणौं धणी, बचन खलायां ताहि ।
अन्य मुनी नैं हसवो नहीं, दशवै कालिक मांहि ॥१२॥
पञ्चम अंग तृतीय शत, प्रथम उद्देशै ताय ।
वैक्रिय शक्ती सुर तणीं, अग्नि भूति कहिवाय ॥१३॥
वाय भूति श्रद्धी नहीं, अतीत जाणी तेह ।
प्रभू नैं पूछ खमाविया, द्वादशाङ्ग धर एह ॥१४॥
ठाणा अङ्ग ठाणैं सात मैं, हिन्सा झूठ अदत्त ।
शब्द रूप गंध फर्श रस, आस्वादी हुवै रक्त ॥१५॥
वलि पूजा सत्कार प्रति, पामी नैं हर्षाय ।
सावद्य इहवध कही, तास सेववूं थाय ॥१६॥
जेम प्ररूपै तै, विषै, नथी पालवूं होय ।
सप्त प्रकारे जाणवूं, छद्मस्थ अति अवलोय ॥१७॥
चौद पूर्व धर पिण करै, पाडिक्कमणो विहुं काल ।
गलता खामी नुं तिको, देखो न्याय निहाल ॥१८॥
तिण सुं चौदश पूर्व-धर, वलि दश पूरव धार ।
जिन शाखैं आगम रचे, इसो संभवै सार ॥१९॥
इम हिक, प्रत्येक बुद्धि पिण, जिन शाखैं सुविचार ।
आगम रचवुं संभवै, अमल न्याय अवधार ॥२०॥
इम मुज न्यासै तिम कह्युं, अर्थ अनूप उदार ।
फुन केवल ज्ञानी कहै, ताहिज छै तत सार ॥२१॥

जद कहै चौदश पूर्व धर, भद्र बाहु गुन गेह ।
निर्युक्ती तेहनी करी, किम मानूं नवि तेह ॥२२॥
हिव तेहनौं उत्तर सुणो, तेह निर्युक्ती मांहि ।
हूं वादूं वज्र स्वामी प्रते, एम कह्युं छै ताहि ।२३।
जो भद्र बाहु कृत ए हुवै, तो वज्र स्वामी प्रति जेह ।
नमस्कार किण विध करै, देखोजी चित देह ।२४।
वलि निर्युक्ती मैं कह्यो, बाल्य अवस्था मांहि ।
मेह वर्षतां देवता, आहार निमंत्र्यो ताहि ।२५।
पिण ते आहार वंछ्यो नहीं, सीख्यो विनय आचार।
एहवा वज्र स्वामी प्रते, नमस्कार करूं सार ।२६।
नगर उज्जेणी नैं विषे, जम्बक नामैं देव ।
करी परीक्षा नें पछै, स्तव्यो तास स्वयमेव ॥२७॥
लब्धि अक्षीण माहणसी; तेह तणौं धरण हार ।
सीह गिरी प्रशंसीयो, वन्दू ते अणगार ॥ २८ ॥
पदासारणी लब्धि जसु, दश पुर नगर मझार ।
महिमा कीधी देवता, करूं तासु नमस्कार ॥२९॥
जेह कुशुम पुर नैं विषै, धनौ शेठ जिवार ।
धन फुन कन्याइं करी, निमिंत्रियो धर प्यार ॥३०॥
नव जोबन वय नैं विषै, वज्र ऋषी गणधार ।
नमस्कार तेहनैं करूं, इम कह्यो निर्युक्ति मझार ।३१।

भद्र बाहु स्वामी पछै, बहु वर्ष अवधार ।
वज्र स्वामी मोडा हुवा, देखो न्याय विचार ॥३३॥
निर्मित्रीयो कन्या धने, एम इहां आख्यात ।
पिण निर्मत्रसी इम नथी कह्यो, देखो सुगण सुजात
महिमां कीधी देवता, इम इहां आख्यो सोय ।
सुर करस्ये महिमां इसो, वचन कह्यो नहीं कोय ।३४।
तिण कारण ए निर्युक्ती, भद्र बाहु कृत नांहिं ।
वलि ए निर्युक्ती विषे, वचन बहु विरुद्ध दिखाहि ।३५।
उववाई मैं आखीयो, उत्कृष्टी अव गाह ।
धनुष पंचसय नी तिको, सीझै ए जिन वाय ।३६।
आवश्यक निर्युक्ति मैं, मोरा देवी माय ।
सवा पांचसौ धनुष तनु, ए वच केम मिलाय ॥३७॥
ठाणांग तुर्यठाणा विषे, प्रथम उद्देशा मांहि ।
सनत्कुमार चक्री तणी, अंत कृया कही ताहि ।३८।
आवश्यक निर्युक्ति मैं, चक्री सनत् कुमार ।
तीजै सुर लोके गयो, ए वच विरुद्ध विचार ।३९।
ऋषभ बाहुबल आउषो, पूर्व चोरासी लक्ष ।
समवायंगमैं आखीयो, पाठ मांहि प्रतक्ष ।४०।
आवश्यक निर्युक्ति मैं, ऋषभ बाहुबल राय ।
एक समय शिवगत लही, केम मिलै ए वाय ।४१।

ज्ञाताध्येनें आठ मैं, मल्ली नाथ जिन राय ।
पोह सुध इगारस दिनें, चारित्र केवल पाय ।४२।
आवश्यक निर्युक्ती मैं, चारित्र केवल नाण ।
मृगशिर सुध एकादशी, विरुद्ध वचन ए जान ।४३।
नेऊ गणधर अजित नां, समवायंग विषेह ।
आवश्यक निर्युक्ति मैं, कह्या पंचाणूं जेह ॥४४॥
तुर्य अङ्ग जिन सुविध नां, असी अरु छः गण धार ।
आवश्यक निर्युक्ती मैं, अठयासी अधिकार ॥४५॥
तुर्य अङ्ग शीतल तणां, तीन असी सुविचार ।
आवश्यक निर्युक्ती मैं, एक असी गणधार ॥४६॥
तुर्य अङ्ग बासट कह्या, वास पुज्य गणधार ।
आवश्यक निर्युक्ती मैं, छासट्ठ कह्या तिंवार ।४७।
गणधर अनन्त प्रभू तणां, सूत्रे चौपन जास ।
आवश्यक निर्युक्ती मैं, आख्या छै पचास ॥४८॥
गणधर धर्म्म प्रभूतणां, सूत्रे अड़तालीस ।
आवश्यक निर्युक्ती मैं, तयां तीस फुन दोस ।४६।
नेऊ गणधर शान्ति नां, तुर्य अंग सुजगीस ।
आवश्यक निर्युक्ती मैं, आख्या छै खट तीस ।५०।
पार्श्व प्रभु नां तुर्य अङ्ग, गणधर अष्ट उदार ।
आवश्यक निर्युक्ती मैं, आख्या दश गणधार ॥५१॥

आवश्यक निर्युक्ती मुनि, कृत पंचक में काल ।
पञ्च डाभ नां पूतला करवा कह्या जु न्हाल ।५२।
आवश्यक निर्युक्ती मैं, वातिका विरुद्ध अनेक ।
चतुर हुअै ते ओलखी, छांडै मतरी टेक ॥ ५३ ॥
तिण सुं चौदश पूर्व धर, भद्र बाहु अणगार ।
तेहनी कीधी किम हुवै, ए निर्युक्ती विचार ।५४।
आवश्यक निर्युक्ती मैं, कारण थी अण गार ।
ग्रहण करै खट काय नैं, कहिये ते अधिकार ।५५।
शर्पादिक डसियां छतां, पृथिवी काय प्रतेह ।
प्रथम अचित्त मांगी लिये, ग्रहस्थ समीपे जेह ।६५।
जो मांगीलाधै नहीं, तो पोते आणेह ।
कदा अचित लाधै नहीं, तो मिश्र पृथ्वी मांगेह ५७
मिश्र पृथ्वी लाधै नहीं, तो पोते हिज जाय ।
अटव्या दिक थी मिश्र प्रति, ले आवै मुनिराय ।५८।
मीश्र कदा लाधै नहीं, मांगे जई ग्रहस्थां पास ।
सचित पृथिवी काय प्रति, मांगी ल्यावै तास ।५६।
जो मांगी सचित मिलै नहीं, तो पोतै हीज जाय ।
खान प्रमुख आगर थकी, ले आवै मुनिराय ।।६०।।
जेह काम आणी तिको, कार्य्य करी नैं ताय ।
पृथिवी काय जे ऊगरै, तेह परिठवै जाय ॥ ६१ ॥

इम कारण थी धुर अचित, मिश्र सचित अपकाय ।
मुनी दातार कनैं जई, मांगी ल्यावै ताहाय ॥६२॥
जो मांग्यो जल ना मिलै, तो पोतै हिज जाय ।
नदी तलावादिक थकी, अप आणैं मुनिराय ।६३।
शूलादिक कारण पड्यां, इम हिज तेऊ काय ।
अचित मिश्र फुन सचित प्रतै, मांगै ग्रही पै जाय ६४
जो मांगी अग्नि मिलै नहीं, तो पोतै हिज जाय ।
कुम्भ कारादिक स्थान थी, लेइ आवै मुनिराय ।६५।
शूलादिक कारण पड्यां, इम हिज वाउ काय ।
अचित मिश्र फुन सचित प्रति, ग्रहण करै ऋषी ताहाय।
इम हिज वनस्पती अचित, मिश्र फुन सचित मुनिराय
गाढा गाढ कारण पड्यां, ग्रहै मूलादिक ताय ॥६७॥
त्रश बेन्द्रियादिक प्रतै, तनु फोडादिक होय ।
तास मिटावा मुनि ग्रहै, जलोक आदि सुजोय ।६८।
आवश्यक निर्युक्ती मैं, पारिट्ठावणीया समितेह ।
आखी छै ए वारता, किम मानी जै एह ॥६६॥

॥ अथ चौसमूं नदी अधिकार ॥

कोई कहै नदी उतरै, मुनि ईर्या समितेह ।
तिहां जिन आज्ञा तै भणी, हिंसक तसु न कहेह ।१।

तिम म्हे पिण प्रतिमा भणी, पुष्प चढावां तेह ।
म्हानें पिण जिन आंण छै, हिन्सा तसु न कहेह ॥३॥
तसुं कहिये साधू नदी, उतरै तिहां जिन आंण ।
जो पूजा में जिन आंण छै, तो मुनि केम न करै जांण
वंदनां नी पूछयां थकां, मुनि आज्ञा दे तेह ।
पुष्प चढावूं इम कह्यां, मुनि आज्ञा नाहिं देह ।४।
नदी ऊतरै जे मुनी, द्रव्य पूजा कहै तेम ।
हेतु तिण ऊपर कहूं, चतुर सुणो धर पेम ॥५॥
विहार विषै जल सहित इक, नदी देख मुनिराय ।
ते टालण रे कारणे, अवलाई पिण खाय ॥ ६ ॥
इक कोशादिक अन्तरै, सूकी नदी निहाल ।
तेह प्रते मुनि ऊतरै, उदक सहित दे टाल ॥७॥
तिम दश दिननां पुष्प जे, सूका ते अव लोय ।
एकण आडी पुष्प फुन, तत् क्षण चूंटया होय ॥८॥
किसा चढावो पुष्प तुम्ह, तुम्ह लेखै इम न्हाल ।
सूका फूल चढावणा, हरिया देणा टाल ॥ ९ ॥
जो चढो तत्कालनां, सुष्क पुष्प न चढाय ।
जद तो पुष्प नदी तणो, मिल्यो न सरिषो न्याय १०
उदक सहित टालै नदी, मुनि अँवलाई खाय ।
तिण कारण हणावा तणुं, ते कामी नाहिं ल्हाय ॥११॥

हरित पुष्प चाढो तुम्हे, शुष्क पुष्प न चढाय ।
इण कारण हणवा तणां, तुम्हे कामी इण न्याय ।१२।
तिण सुं पुष्प नदी तणौं, नथी सरिषो न्याय ।
द्रव्य पूजा नीं आंण नहीं, नदी जिन आज्ञा म्हांय १३
जिन आज्ञा देवै जिको, निर्वद्य कारज जान ।
जिन आज्ञा देवैं नहीं, ते सावद्य कार्य्य मान ।१४।
सुर सुर्याभ भणीं प्रभु, वन्दन आज्ञा ख्यात ।
नाटक नीं पूछ्यां थकां, आंण न दीधी नांथ ।१५।
मन मैं भलो न जाणियो, मौन रह्या अवलोय ।
तिण सुं ए नाटक कियो, ते सावद्य कार्य्य होय १६
प्रभूजी जे नाटक तणीं, आज्ञा दीधी नाँथ ।
तो किम द्रव्य पूजा तणीं, आज्ञादे जिनराय ।१७।
मुनि दिक्षा लेतां कीया, सावद्यरा पच्चखान ।
न करै द्रव्य पूजा तिको, सावद्य कार्य्य मान ।१८।
सावद्य कार्य्य प्रतें मुनी, करै करावै नाँय ।
अनुमोदै पिण नहिं तिको, निर्मल विचारो न्याय १९
जेह कार्य्य अनुमोदयां, मुनी नैं लागै पाप ।
तो करण वालो तो धुर करण, तिण मैं धर्म्म न थाप २०
सावद्य कार्य्य सर्व ही, मुनि त्यागे विष जांण ।
आज्ञा तेहनी किम दियै, वारूं करो विनाण ।२१।

द्रव्य पूजा सावद्य छै, कै निर्वद्य कहिवाय ।
सावद्य छै तो तेह मैं, धर्म्म पुण्य किम थाय ॥२२॥
जो पूजा निर्वद्य छै, तो मुनि न करै कांय ।
वलि सामायिक पोषह मभै, तुम्हे करो क्यूं नांय ।२३।
सामायिक पोषा मभै, पचख्या सावद्य जोग ।
निर्वध तो त्याग्या नहीं, देखो दे उपयोग ॥२४॥
द्रव्य पूजा आज्ञा मभै, कै जिन आज्ञा बार ।
जो आज्ञा बारै कहो, तो धर्म्म पुण्य मत धार ।२५।
जो ए छै आज्ञा मभै, तो मुनि न करै कांहि ।
सामायिक पोषा मभै, तुम्हे करो क्युं नांहि ।२६।
द्रव्य पूजा छै विरत मैं, कै अविरत रै मांहि ।
जो अविरत मांहीं कहो, तो धर्म्म पुण्य किम थाहि२७
द्रव्य पूजा छै विरत मैं, तो मुनि क्युं न करेह ।
सामायिक पोषा मभै, क्यों न करो तुम्ह तेह ।२८।
जो पूरी समभ पड़ै नहीं, तो राखो प्रभू प्रतीत ।
जिन आज्ञा बाहर धर्म्म कही, न करणी यह अनीत२९

॥ अथ इकीस मूं दानाधिकार ॥

असंयती नैं जाण नैं, वा श्रावक नैं कोय ।
दान दीयां स्युं फल हुअै, तसु उत्तर अवलोय ॥१॥

अष्टम शतके भगवती, छट्ठे उद्देशे जोय ।
गौतम पूछ्यो वीर प्रति, हे प्रभु श्रावक कोय ॥२॥
तथा रूप जे असंजाति, तसुं सचित्त अचित्त असणादि
असेषणी फुन एषणीक, प्रतिलाभ्यै स्युं संवाद ।३।
तेहनैं स्युं फल सम्पजे, तब भाषै जिन राय ।
एकान्त पाप हुवै तसु, निरयरा किञ्चित नाँय ॥४॥
एकान्त पाप कह्यो प्रभू, प्रगट पाठ मैं जोय ।
तो ते दान दीयां छतां, धर्म्म पुराय किम होय ।५।
वलि सातमां अङ्ग मैं, प्रथम अध्येन मझार ।
वीर भणी आणंद कह्यो, अन्य तीर्थी प्रति धार ।६।
अन्य तीर्थकनां देव प्रति, फुन जिन नां मुनिराय ।
अन्य तीर्थक मैं जई मिल्या, तिणों संग्रह्या रहाय ।७।
ए त्रिहुं प्रति वंदू नहीं, वलि न करूं नमस्कार ।
पहली बोलाऊं नहीं, एक बार बहु बार ॥ ८ ॥
असणादिक नहिं द्युं तसुं, वलि देवावूं नांहिं ।
एहवुं अभिग्रह आदर्यो, देखो आगम मांहिं ।९।
छ छगडी आगार ते, राख्यो सावज्ज जांण ।
सामायिक पोषह भज्यै, तेहना पिण पच्चखाण ।१०।
दीधां अन्य तीर्थक भणी, धर्म्म पुराय जो होय ।
तो आणन्द किम तज्यो, हिये विमासी जोय ।११।

उत्तराध्ययणे चौद में, गाथा बारमीं मांय ।
भग्गु प्रतैं पुत्रां कह्यो, सांभल जो चित ल्याय ।१२।
वेद भण्यां सुत जान्मियां, त्राण शरण नहिं होय ।
दीयां जीमायां तम तमां, जावै इम कह्यो सोय ।१३।
वृत्तिकार इह विध कह्यो, नरक रोरवा देय ।
तो तेह नैं पोष्यां छतां, किण विध धर्म्म कहेह ।।१४।।
कोई कहै ए गृही हुंता, तसुं उत्तर अवलोय ।
तेहनीं धुर गाथा विषै, तुर्य पदे कह्युं सोय ।।१५।।
कुमर आलोची नैं वदै, इम कह्यो गणधर देव ।
ते माटै तसुं सत्य बच, पिण नाहिं झूठ कहेव ।१६।
वेद भणया सुत जान्मियां, त्राण शरण नहिं होय ।
ए पिण भगुप्रते कह्युं, वेहुं पुत्रां अवलोय ।।१७।।
ए बच सांचा तेहनां, तुम्हे जाणो मन मांहिं ।
तो दीयां जीमायां तम तमा, ए पिण सांची वाहि १८
द्वितीय सुगडांगे सखर, छट्ठाध्येनरै मांहिं ।
निज श्रद्धा विप्रे कही, आद्र मुनि नैं ताहि ।१९।
जीमावै द्विज सहस्र बे, तसु पुण्य खंध बंधाय ।
तेह पुण्य थी सुर हुवै, वेद विषै ए वाय ।। २० ।।
आद्र मुनि कह्यो सहस्र बे, दीहा जीमावै जेह ।
तेह नरक में ऊपजै, अति अभिताप विषेह ।।२१।।

प्रगट पाठ मैं बात ए, आद्र मुनि बच जोय।
तो असंजतीश दान मैं, धर्म्म पुराय किम होय ।२२।
कोई कहै छद्मस्थ था, आद्र मुनी तिह वार ।
कह्यु तांगा मैं तेह वच, किम कहिये तसु सार ॥२३॥
तसुं काहिये आदर मुनी, चरचा करी विशाल ।
बौद्ध मती गौशाल सूं, साग मती सूं न्हाल ।२४।
एक हंडिया प्रमुख नैं, उत्तर दिया विचार ।
तेह सत्य जाणो तुम्हे, तो ए पिण सत्य उदार ॥२५॥
जाव अन्य प्रति सत्य छै, ब्राह्मण प्रति अवदात ।
उत्तर असत्य कहो तुम्हे, आ किसा लेखारी बात ।२६।
सूत्र सुयगड़ा अङ्ग द्वार मैं, दान प्रशंसै शंत ।
वध बंछै षट काय नों, इम भाष्यो भगवन्त ।२७।
तृतीय करण प्रशंसियां, हिन्सक कहिये ताहि ।
तो दान देवै ते धुर करण, ते हिन्सक किम नाहिं २८
करै प्रशंसा कुशीलरी, तासु कर्म्म बंध होय ।
तो सेवै ते तो धुर करण, स्युं कहिये तसुं सोय ।२९।
तिम सावद्य दान प्रशंसियां, कर्म्म तणों बंध थाय ।
तो दान दिये ते धुर करण, तसु अघ बंध अधिकाय ३०
दान निषेध्यां वृत्ती नीं, छेद करै इम ख्यात ।
कह्यो अर्थ मैं काल ए, वर्त्तमान मैं शात ॥ ३१ ॥

मिलतो अर्थ ए सूत्र थी, देखो न्याय विचार ।
अम ठाम सूत्रें कह्यो, सावद्य दान असार ॥ ३२ ॥
असंजती नैं दान दे, पाप एकन्त आख्यात ।
सूत्र भगवती नैं विषै, देखो तज पख पात ॥ ३३ ॥
ते माटे वर्त्तमान ज, काल विषै जे मून ।
मून कहै त्रिहुं काल मैं, श्रद्धा तास जबून ॥३४॥
द्वितीय सुगडा अङ्ग विषै, पंचम् अज्झयणे पेख ।
देतो लेतो एहवो, वर्त्तमान मैं देख ॥ ३५ ॥
पुराय पाप नहिं कहै तिहां, एहवुं बच अवलोय ।
ते माटे वर्त्तमान हीज, कालै मून सु जोय ॥ ३६ ॥
कह्यो उपाशक अङ्ग मैं, सुत सकडाल उदार ।
गौशालक नैं आपीया, फलग सेज्झा संथार ॥३७॥
कह्यो प्रभुना गुण करया, तिणस्युं आपूं सोय ।
पिण निश्चय नहिं धर्म्म तप, इम कह दीधा जोय ३८
दीधां गौशालक भणी, नहि धर्म्म तप सद्य ।
तिमज अनेरा नैं दीधां, केम हुवै पुराय बंध ॥३९॥
दुःख विपाक मांहीं कह्यो, मृगा लोढो देख ।
गौतम पूछ्यो वीर प्रति, पूर्व भवे इण पेख ॥ ४० ॥
स्यूं दीधो स्यूं भोगव्यो, इम पूछ्यो गणिराय ।
तिण सुं दान कुपात्र नां, फल अति कटुक कहाय ४१

प्रदेशी केशी भणी, बोल्यो एह वी वाय ।
च्यार भाग ए राजरा, हूं करस्युं मुनिराय ॥ ४२ ॥
एक भाग राण्यां निमित्त, दूजो भाग खजान ।
तीजो हय गय अर्थ ही, चोथो देवा दान ॥४३॥
च्यारूं सावज्भ जाण नैं, मौन रह्या मुनिराय ।
तीन भाग जिम तुर्य पिण, जाणी सावद्य ताय ।४४।
पिण न कह्यो त्रण भाग तो, हेतु अघनीं राश ।
तुर्य भाग तो पुण्य बंध, इम न कह्यो गुण तास ।४५।
च्यारूं भाग बोलाय नैं, प्रदेशी राजान ।
निज लफरो मेटी थयो, धर्म्म करण सावधान ।४६।
तुर्य भाग दान तालके, नित प्रते धान रंधाय ।
वणी मग रांक जिमायिवै, तिहां जीव हिन्सा अधिकाय
सप्त सहस्त्र जे ग्राम नाँ, च्यार भाग तसुं कीध ।
दान तालकै थापीयो, चौथो भाग प्रसिद्ध ॥४८॥
दान तालकै ग्राम था, साढ सतरै सो जेह ।
तसुं हांसल धान रंधाय नैं, दान शाला माँडेह ।४९।
नित्य हजाराँ मण तदा, धान राँधता जाण ।
हुवे हजाराँ मण तिहाँ, अग्नि पाँणी घमसाण ॥५०॥
उदक विषै फुँवारादि फुन, वलि वनस्पती जल माँय ।
लूण मणाँ बंध लागतो, अनेक मूवा तशकाय ।५१।

वायु जीव विराधना, ते पिण तिहाँ विशेख ।
मोटो आरंभ ए सही, दान शाला में देख ॥५२॥
दिन दिन प्रति षटकाय हण, अनन्त जीवांरी घात ।
न गिणै पाप हिन्सा तणौ, तसुं घट मांहि मिथ्यात ५३
असंयती बहु पोषियां, करै षटकाय विणाश ।
धर्म्म पुण्य किम तेह मैं, जोवो हिये विमास ॥५४॥
धर्म्म हेतु प्राते जीव नैं, हणयां दोष न कोय ।
कह्युं अनार्य्य बचन ए, आचाराङ्गे जोय ॥ ५५ ॥
कह्यो धर्म्म रे कारणैं, जीव न हणवूं कोय ।
ए आर्य्य नौं बचन है, धुर अङ्गे अवलोय ॥५६॥
तिण सूं प्रदेशी तणी, दान शाला पहिछाण ।
श्री जिन आज्ञा बार हैं, समझो चतुर सुजाण ।५७।
ज्ञाता अध्येनैं तेर मैं, जे नन्दन मणिहार ।
नन्दा पुष्करणी तणौ, आख्यो बहु विस्तार ।५८।
चिहुं दिश च्यारूं बाग फुन, चिहुं बाग चिहुं शाल ।
पूर्व बाग बिषे प्रवर, चित्र शभा सुविशाल ॥५९॥
विवध रूप चित्र्या तिहां, नयना नैं सुखदाय ।
नाटक नां धुंकार बहु, जन मन हुलसत थाय ।६०।
दान शाला दक्षण बनैं, दिये दान दगचाल ।
जीमायें बणी मग रांक बहु, भोजन विवध रसाल ६१

तीगच्छ शाला पश्चिम बनें, राख्या वैद्य सुताम ।
औषध करी रोगी भणीं, करै अधिक आराम ।६२।
शुभ अलङ्कार उत्तर बनें, नाई प्रमुख बैशाय ।
रोगी प्रमुख भणी तिहां, खिजमत स्नान कराय ।६३।
इम बहु असंयती भणीं, सुख साता उपजाय ।
उपना छेहडे सोल गद, नन्दनरे तनु माँय ।६४।
काल करी मींडक हुओ, निज पुष्करणी माँय ।
सावज्भ कार्य्य नां कटुक फल, निमल विचारो न्याय
ज्ञाताज्भेणां आठ मैं, देखो चतुर सुमर्म्म ।
चोखी शन्याशण कह्युं, दान धर्म शुचि धर्म्म ।६६।
दान धर्म शुचि धर्म्म कर, निर विघ्न स्वर्गे जाय ।
मल्लि भणी चोखी कही, ए निज श्रद्धा ताय ॥६७॥
तब मल्लि कह्यो चोखी भणीं, रुधिरे खरड्यो जेह ।
वस्त्र लोही सूं धोवीयां, शुद्ध हुअै किम तेह ।६८।
तिम अष्टादश पाप प्रति, सेवै जे कोई जंत ।
तेह निमल किण विध हुअै, दीधो एह दृष्टान्त ।६९।
रुधिरै खरड्यो वस्त्र जे, जलादि करि शुद्ध होय ।
तिम हिन्सादिक अघतज्यां, जीव निमल हुवे सोय ।
सचित अचित सहु नैं दीयां, पुराय कहै छै जेह ।
केहायत चोखी तणां, न्याय विचारी लेह ॥७१॥

दश में ठाणैं देखल्यो, प्रभू कह्या दश दान ।
संक्षेपे कहिये तिके, सुणजो चतुर सुजाण ॥७२॥
सचित अचित जल अन लवण, अग्नि जमीं कंद जान
अनुकम्पा आणीं देवै, ते अनुकम्पा दान ॥७३॥
द्वितीय दान संग्रह कह्यो, पोषै बन्दी वान ।
तथा छुडावै दाम दे, चोर प्रमुख नैं जान ॥७४॥
ग्रह करडा जाणी करी, थावरिया नैं जांन ।
देवै भय आणी करी, ते तीजो भय दान ॥७५॥
खर्च करै मृत कैड वा, जीवत बारियो जान ।
आध छमासी प्रमुख ते, तुर्य कालूणी दान ॥७६॥
बहु नीं लज्भाइं करी, सचित अचित धन धान ।
दियै असंजती नैं जिको, पंचम् लज्भा दान ।७७।
मुकलावो पैरावणी, जस अहंकारे जांन ।
दिये रावलिया प्रमुख नैं, छट्टो गार्व दान ॥७८॥
कुशील नों अर्थी जिको, गणिका दिक नैं जांन ।
दियै द्रव्य तेह नैं कह्युं, सप्तम् अधर्म दान ॥७९॥
धर्म दान वर आठ मूं, तीन भेद है तास ।
सूत्र सुपात्र दान फुन, अभय दान गुण राश ।८०।
आगम अर्थ बताय नैं, तसुं मिथ्यात्व मिटाय ।
शुद्ध समकित पमावियें, सूत्र दान कहिवाय ।८१।

वर महाव्रत धारी मुनि, दियै सूज तो तास ।
दान सुपात्र तसुं कह्यो, द्वितीय भेद सुविमास ।८२।
भय नहिं दे जन्तू भणीं, हणवारा पच्चखाण ।
ते अभय ए भेद त्रण, धर्म्म दानरा जांण ॥८३॥
सचित्तादिक जे द्रव्य बहु, दियै उधारा जेम ।
ध्यान पाछो लेवा तणौ, नवम् काएन्ती एम ।८४।
लैणायत्त नैं जिम दियै, हांती नैंता देय ।
दियां पछै पाछो लिये, दशम् कयन्ती तेह ॥८५॥
धुर वोहरा जिम उभय ए, दियां प्रथम दे तेह ।
ते नवमूं फुन दशम् जे, दियां पाछो दे जेह ॥८६॥
धर्म दान अष्टम् तिको, श्री जिन आज्ञा मांहि ।
शेष दान नव छै जिका, जिन आज्ञा मैं नांहि ८७
असंजती नैं दान दे, तसुं कह्यो अघ एकन्त ।
नव ही दान तेह नैं विषै, देखोजी बुद्धिवन्त ।८८।
ए दश दान कह्या तिके, गुण निप्पन्न तसुं नांम ।
पिण जिन आज्ञा वाहिरो, ते सावध अघ धाम ।८९।
वेश्यानैं देवै तिको, अत्यन्त अधर्म पेख ।
दीसै लोक विषै तसुं, अधर्म नांम संपेख ॥ ९० ॥
धर्म दान विन शेष अठ, ते पिण अधर्म जान ।
गुण निप्पन्न ए नाम तसुं, भाष्या श्रीभगवान ।९१।

श्री जिनवर जे दानरी, आज्ञा नहीं दे कोय ।
धर्म पुण्य नहिं तेह में, हिये विमासी जोय ॥९२॥
दशमैं ठाणैं धर्म दश, पाषंड धर्म आख्यात ।
पिण ते नाहिं आज्ञा विषे, तिमहिज दान अवदात ९३
सूत्र चारित्र जे धर्म बे, श्री जिन आज्ञा मांहि ।
तिमहिज जिन आज्ञा विषे, धर्म दान कहिवाय ९४
जिन आज्ञा जे धर्म नीं, ते निर्वद्य पहिछाण ।
आज्ञा नहिं जिण धर्म री, तेतो सावज्ज जांण ।९५।
जिम आज्ञा जे दान नीं, ते निर्वद्य अवलोय ।
आज्ञा नाहिं जे दानरी, ते सावद्य छै सोय ॥ ९६ ॥
दशमैं ठाणैं स्थिवर दश, भाष्या श्री भगवान ।
सावद्य निर्वद्य ओलखो, जिन आज्ञा करिजान ।९७।
तिम हिज जिन आज्ञा करी, सावज्ज निर्वद्य दान ।
ओलख नैं निर्णय करै, ते कहिये बुद्धिवान ॥९८॥
नवमैं ठाणैं पुण्य बंध, नव विध समुच्चै ख्यात ।
अन्न पुण्य फुन पांण पुण्य, लेण पुण्य विख्यात ९९
सयण पुण्य फुन वस्त्र पुण्य, मन्न पुण्य वच पुण्य काय ।
नमस्कार पुण्ये नवम, समुचै ही कहिवाय ॥ १०० ॥
कोई कहै अन्न पुण्य इम, समुच्चय आख्यो सांम ।
ते माटे सहुनैं दीयां, पुण्य बंध छै तांम ॥ १०१ ॥

इम कहै तेहनैं पूछिये, अन्न पुराय आख्यो सोय ।
कै कोरो दीधां पुराय हुवै, कै काचो दीधां होय १०२
कै अन्न पुराय रांध्यो दियां, सचित दियां पुराय थाय।
तथा अचित्त दीधां थकां, पुराय बंध कहिवाय।१०३।
दियां सूझतो पुराय है, वा असूझतो दियेह ।
पात्र प्रति दीधां पुराय है, तथा कुपात्र विषेह ।१०४।
मुनि प्रति दीधां पुराय है, तथा अ साधू प्रतेह ।
चोर कसाई नैं दियां, वलि गणिका प्रतेज देह १०५
समुच्चय आख्यो अन्न पुराय, ते माटै अवलोय ।
सहु नैं दीधां पुराय नौं, तुझ लेखे बंध होय ॥१०६॥
इम तसकर गणिकादि जे, सहु नैं दीधां पुराय ।
तिण सुं सघला पात्र है, नहिं कुपात्र जबुन्य ।१०७।
पांण पुराय समुच्चय कह्यो, ते अचित्त पायां पुराय होय।
कै सचित्त उदक पायां थकां, पुराय बंध तसु जोय१०८
जो सचित्त पायां थी पुराय हुवै, तो छाणयो पावेह।
अथवा अछाणया उदक प्रति, पायां पुराय कहेह १०९
वलि सूझता उदक प्रति, पायां तसुं पुराय होय ।
अथवा उदक असूझतो, पायां पुराय अवलोय ।११०।
पात्रें दीधां पुराय हैं, तथा कुपात्र विषेह ।
मुनि प्रति दीधां पुराय है, तथा असाधु प्रतेह ।१११।

चोर कसाई नैं दियां, वाले गणिका प्रति जोय ।
तुझ लेखे सहुनैं दियां, पुण्य बंध अवलोय ॥११२॥
लयण पुण्य समुच्चय कह्यो, ते जागां नवी कराय ।
छकाय हणी दे तासु पुण्य, कै सीधी दीधां थाय ११३
पात्र नैं दीधां पुण्य है, तथा कुपात्र विषेह ।
मुनि प्रते दीधां पुण्य है, तथा असाधु प्रतेह ॥११४॥
गणिका चोर कसाई प्रते, दीधां पुण्य बंधाय ।
समुच्चय लयण पुण्ये कह्यो, उत्तर देवो त्हाय ॥११५॥
सयण पुण्य समुच्चय कह्यो, रूंख कटाय फटाय ।
पाट बाजोट कराय नैं, दीधां पुण्य बंधाय ॥११६॥
के सीधा दीधां पुण्य है, पात्र कुपात्र भणीज ।
साधु असाधु नैं दियां, ते किणमैं पुण्य कहीज ११७
गणिका चोर कसाई प्रते, दीधां पुण्य अवलोय ।
समुच्चय सयण पुण्ये कह्यो, उत्तर देवो सोय ॥११८॥
वस्त्र पुण्य समुच्चय कह्यो, कपडा नवा वणाय ।
धोवाय दीधां पुण्य है, कै सीधा दीधां त्हाय ॥११९॥
पात्रेज दीधां पुण्य है, तथा कुपात्र विषेह ।
साधु असाधु नैं दियां, किण मैं पुण्य कहेह ॥१२०॥
गणिका चोर कसाई प्रते, दीधां पुण्य बंधाय ।
समुच्चय वत्थ पुण्य कह्यो, उत्तर देवो न्याय ॥१२१॥

मन पुण्ये समुच्चय कह्यो, सावज्भ अशुद्ध जवून्य ।
मन प्रवर्त्तायां पुण्य छै, कै निर्वद्य मन थी पुण्य ।१२२।
पंच आश्रव सेवण तणां, मनथी पुण्य बंधाय ।
पंच आश्रव छोडण तणां, मनथी पुण्य बंधथाय १२३
समुच्चय मन पुण्ये कह्यो, सावद्य मन प्रवर्त्ताय ।
ते थी पुण्य बंधै कै नांहिं, उत्तर देवो ताय !! १२४ ॥
बच पुण्ये समुच्चय कह्यो, सावज्भ अशुद्ध जघुन्य ।
बच बोल्यां थी पुण्य छै, कै निर्वद्य वचथी पुण्य १२५।
समुच्चय बच पुण्ये कह्यो, मुख में बोलै गाल ।
एक गुणौं नवकार शुद्ध, किण थी पुण्य बंध न्हाल १२६
काय पुण्ये समुच्चय कह्यो, सावज्भ तन प्रवर्त्ताय ।
तेह थकी पुण्य बंध हुवै, कै निर्वद्य तनु थी थाय १२७
शीत तप्त तनु थी खमैं, ते थी पुण्य बंधाय ।
गेहुं पीसे छेदे हरी, तेथी पुण्य बंध थाय ॥१२८॥
हिन्सा भूट अदत्त फुन, चौथो आश्रव ताहि ।
समुच्चय काय पुण्ये कह्यो, इण थी पुण्य कै नांहिं १२६
नमस्कार समुच्चय कह्यो, सिद्ध साधु प्रति जोय ।
नमस्कार कियां पुण्य छै, कै अन्य प्रते कीधां होय १३०
कुत्ताभाई रांम रांम, कागा भाई रांम ।
इम चाण्डाल भणी नम्यां, पुन्य छै कै नांहिं तांम।१३१।

विनय करे सघला तणौं, विनय वादी अवलोय ।
तसुं पाषण्डी प्रभु कह्यो, सूत्रैं ए वच जोय ।१३२।
जो नमस्कार सहु नैं कियां, पुण्य कहै मति मंद ।
ते केडायत जाणवा विनय वादीरा अंध ॥१३३॥
अन्न पुण्य समुच्चय कह्यो, ते माटै अवलोय ।
सहु नैं अन्न दीधां थकां, पुण्य कहै जे कोय ।१३४।
तसुं लेखै समुच्चय कह्या, मन पुण्य वच पुण्य काय ।
ए पिण अशुद्ध तीनौं थकी, पुण्य तणो वंध थाय १३५
जो सावद्य मन वच कायथी, पुण्य वंध नहिं थाय ।
अन्न पिण दियां कुपात्र नैं, पुण्य वंधै किण न्याय १३६
नमस्कार पुण्ये अपि, समुच्चय कहिये पेख ।
सहुनैं नमण कियां थकां, पुण्य वंध तसुं लेख ।१३७।
गणिका चोर कसाई प्रति, कर जोडी नमस्कार ।
कीधां पिण पुण्य वंध हुवे, जसु लेखै अवधार ।१३८।
सर्व भणी जो अन्न दियां, वलि सहुनैं नमस्कार ।
कीधां पुण्य तो देखलो, सप्तम् अङ्ग मझार ॥१३९॥
अन्य तीर्थी नैं नहिं करूं, वंदना ने नमस्कार ।
अशणादिक पिण द्युं नहीं, आणद कह्युं उदार ।१४०।
मुनि विन अन्य प्रति अन्न दियां, वलि कियां नमस्कार।
पुण्य हुवे तो किम लियो, आनन्द अभिग्रह सार१४१

जसुं अन्न दीधां पुण्य हुऔ, तेहनैं पिण शिरनांम ।
नमस्कार कीधां छतां, पुण्य हुवे छै तांम ॥१४२॥
ते नवही निर्वद्य छै, साधू नैं नमस्कार ।
कीधां पुण्य छै तो तसुं, अन्न दीधां पुण्य सार ।१४३।
जल पिण निरदोषण तसुं, दीधां पुण्य सु देख ।
जाग। पिण तसुं सूझती, आप्यां पुण्य सु पेख ।१४४।
सयण पाट प्रमुख तसूं, दीधां पुण्य सु जोय ।
वत्थ पिण निरदोषण तसुं, दीधां थी पुण्य होय ।१४५।
मन वच काया पिण वलि, निरवद्य थी पुण्य बंध ।
नमस्कार पद पंच प्रति, कीधां पुण्य सु संध ॥१४६॥
निरवद्यरै लेखै नवूं, बोल शरीषा शुद्ध ।
नवूं शरीषा नवि कहे, श्रद्धा तास विरुद्ध ॥१४७॥
साधू नैं कल्पै जिके, तेहिज द्रव्य आख्यात ।
द्रव्य अनेरा नवि कह्या, देखो तज पख पात ॥१४८॥
अन्न साधुरै जोई ये, जल पिण मुनि रै त्हाय ।
चाहिजे तिण कारणै, पांण पुण्य कहिवाय ॥१४९॥
जागां पाट बाजोट्आदि नौं, पडै साधुरै कांम ।
कपडो पिण साधू तणौ, अवश्य चाहिजे तांम ।१५०।
इम कल्पै साधू भणीं, आख्या तेहिज बोल ।
देखोजी देखो तुम्हे, आंख हीयारी खोल ॥१५१॥

साधू विन जो अन्य प्रतै, दीधां पुण्य जो होय ।
तो गाय पुण्य किमनवि कह्यो, भैंश पुण्य पिण जोय
सुवरण पुण्य रूपो पुण्य, हीरो पुण्य उदार ।
मोती नें माणक पुण्य, खेती पुण्य विचार ।१५३।
इत्यादिक मुनिवर भणीं, नहिं कल्पै ते बोल ।
सूत्र विषै ते नावि कह्या, देखोजी दिल खोल ।१५४।
मुनि प्रति नहिं कल्पै तिको, इक ही बोल कहंत ।
तो तुम्हे कहता अन्य प्रति, दीधैं पिण पुण्य हुन्त१५५
जब को कहै कह्यो अर्थ मैं, पात्रे अन्न दीधेह ।
तीर्थंकर नामादि जे, पुण्य प्रकृति बंधेह ॥१५६॥
पात्र थकी जो अन्य प्रति, दीयां अनेरी ताहि ।
पुण्य प्रकृति बंधै इसो, कह्यो अर्थ रे माहिं ।१५७।
तसुं कहिजे जे पात्र नैं, दीधैं छतां जु तेह ।
तीर्थंकर नामादि जे, पुण्य प्रकृति बंधेह ॥१५८॥
आदि शब्द मैं तो जिके, पुण्य प्रकृति सहु आय ।
इक ही बाकी नवि रही, निमल विचारो न्याय ।१५९।
ऋषभादिक कहिवे इहां, जिन चउवीस सु आय ।
गौतमादिक गण वै करी, चउद सहस्र मुनिराय।१६०।
तिम तीर्थंकर नामादि इम, आदि शब्दरै मांहिं ।
पुण्य प्रकृति आवी सहु, बाकी रही न कांय ।१६१।

पात्र थकी जो अन्य प्रति, दीयां अनेरी जांण ।
पुण्य प्रकृति बंधै तिको, अर्थ विरुद्ध पहिछांण ।१६२।
आदि शब्द मैं तो जिके, पुण्य प्रकृति सहु आय।
वलि अनेरी पुण्य नीं, प्रकृति किसी कहिवाय ।१६३।
क्रियाहिक ठांणा अङ्ग मैं, छै ए अर्थ जवून्य ।
सहु ठांणा अङ्ग मैं नहीं, पाठ विना अर्थ शुन्य ।१६४।
अन्य प्रति दीधां अन्न जे, पुण्य प्रकृति बंधेह ।
वृत्ति विषै ए नावि कह्यो, अभय देव सूरेह ।१६५।
पात्रे अन्न देवा थकी, ने तीर्थंकर नामादि ।
पुण्य प्रकृति नौं बंध ते, अन्न पुण्य संवाद ॥१६६॥
वृत्ती विषै इतरोज छै, पिण अन्य प्रति दीधां सोय।
बंधै अनेरी पुण्य प्रकृति, एहवुं कह्यो न कोय ।१६७।
पाठ विषै पिण ए नहीं, वृत्ति विषै पिण नांहि ।
सूत्र थकी पिण नांहिं मिलै, ए विरुद्ध अर्थ इणन्याय
अन्न पुण्ये को अर्थ शुद्ध, वृत्तीं विषे कह्युं सोय ।
पात्रे दीधां पुण्य कह्युं, प्रत्यक्ष ही अवलोय ।१६९।
वृत्तिमानैं तसुं लेख पिण, पुण्य पात्रें ज दीयेह ।
अर्थ न मानैं एह तिण, वृत्ति न मानी तेह ।१७०।
सूत्र भगवती सुगडाङ्ग, उत्तराध्ययन उजास ।
असंजती प्रति दान दे, कह्या अशुभ फल तास ।१७१।

इम जाणी उत्तमा नरां, राखो सूत्र प्रतीत ।
श्रीजिन आंण उथाप नैं, मती को करो अनीत १७२
ठाणा अङ्ग ठाणौं तुर्य वर, तुर्य उद्देशा मांय ।
च्यार मेह प्रभू आखिया, सांभल ज्यो चित्त ल्याय १७३
इक वर्षै जे खेत्र मैं, अखेत वर्षै नाहिं ।
अखेत वर्षै एक पिण. खेत्र न वर्षै ताहिं ॥१७४॥
इक क्षेत्रे पिण वर्षं तो, अखेत्रें पिण वर्षाय ।
इक क्षेत्रे नाहिं वर्ष तो, अखेत वर्षै नाहिं ॥ १७५ ॥
इण दृष्टान्ते पुरुष नीं, च्यार जाति कहिवाय ।
देवै पात्र विषैं जु इक, दियै कुपात्रे नाहिं ।१७६।
इह विध कह्या कुपात्र नैं, कु क्षेत्र सु वर न्याय ।
वायो जिहां ऊगे नहीं, ते कु खेत्र कहिवाय ॥१७७॥
ते माटे जु कुपात्र नैं, दीधां शुभ अंकूर ।
ऊगै नाहिं तिण कारणै, कह्या कु क्षेत्रे भूर ॥१७८॥

॥ इति ॥

॥ अथ बावीसमूं श्रावक नैं दीयां स्यूं थाय ते अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहैं श्रावक भणी, अशणादिक आपेह ।
तेहनैं स्यूं फल संपजैं, हिव तसु उत्तर लेह ॥ १ ॥

द्वितीय सुगडाअङ्गे कह्यो, द्वितीय अध्येन विषेह ।
अथवा प्रथम उपङ्ग में, प्रश्न वीस मैं लेह ॥ २ ॥
खाणो नें फुन पीवणो, श्रावक तणो सु जोय ।
अव्रत मांहै आखियो, वलि गहणो अवलोय ॥ ३ ॥
त्याग त्याग सहु व्रत है, राख्यो जे आगार ।
तेहनै अव्रत आखियै, वारूं न्याय विचार ॥ ४ ॥
दूजो आश्रव दाखियो, अव्रत नें जिनराय ।
ठाणांग ठाणें पांच मैं, वलि समवायाङ्ग मांहि ॥ ५ ॥
भाव शस्त्र अव्रत भणी, भाष्यो श्री जग भांण ।
शङ्का हुवै तो देखल्यो, ठाणाङ्ग दश मैं ठाण ॥ ६ ॥
तिण सूं हियै विचारियै, श्रावक नैं अवलोय ।
अव्रत सेवायां छतां, धर्म पुण्य किमहोय ॥ ७ ॥
श्रावक ते विरतें करी, देव वैमानीक थाय ।
कह्यूं भगवती प्रथम शत, अष्टमोद्देशक मांहि ॥ ८ ॥
ग्रहस्थ नैं देवो तज्यो, स्यूं जाणी मुनिराय ।
ते संसार भ्रमण तणो, हेतु जाणी त्हाय ॥ ९ ॥
सुयगडांग नवमैं कह्यो, गाहा तेवीसम् ताहि ।
तिण सूं श्रावक आवियो, प्रत्यक्ष ग्रहस्थ मांहि ॥ १० ॥
पनरमोद्देश निशीथ मैं, मुनि अन्य तीर्थी प्रतेह ।
अथवा ग्रहस्थ प्रतै वली, अशणादिक आपेह ॥ ११ ॥

वस्त्र पात्र फुन कम्बली, रजोहरण सुविचार ।
ए आठ बोल देवै तसुं, दंड चौमासी धार ॥१२॥
देतां प्रति अनुमोदियां, दंड चौमासी आय ।
ते माटै ग्रहस्थ विषै, श्रावक पिण इहां आय ॥१३॥
तसुं मुनि पोतै दे नहीं, वलि जसु देवै कोय ।
अनुमोदै नहिं तेह नैं, ऋषि आचार सु जोय ॥१४॥
तृतीय करण अनुमोदियां, दंड चौमासी आय ।
तो प्रथम करण देवै तसूं, धर्म पुण्य किम थाय ॥१५॥
पडिमाधारी पिण इहां, आयो ग्रहस्थ विषेह ।
तसुं अशणादिक नहिं दियै, महा मुनी गुण गेह १६
ते पडिमाधारी प्रते, ग्रहस्थ दियै को आहार ।
तो मुनि अनुमोदै नहीं, देखो न्याय विचार ॥१७॥
देता प्रति अनुमोदियां, मुनिवर नैं दंड आय ।
तो देणवाला नैं धर्म किम, तसु खाणो अव्रत मांहि १८
गौतम प्रति संथार मैं, आनन्द आख्यो एम ।
हे भदन्त हूं गृहस्थ छूं, गृहि मज्झ वसूं ज तेम ॥१९॥
ते गृही मज्झ वसता भणी, इतरो अवधि उपन्न ।
पूर्व दिशि लवणो दधी, जोयण पंच सय जन्न ॥२०॥
देखूं ते हूं क्षेत्र प्रति, दक्षिण पश्चिम एम ।
वलि उत्तर दिशिनैं विषै, चूल हेमवंत तेम ॥२१॥

ऊंचो सौधर्म कल्प लग, अधो नरक धुर तास ।
सहस्र चौराशी वर्ष स्थिति, लोलुच नरका वास ।२२।
गौतम बोल्या एवडो, मोटो अवधि उदार ।
ग्रहस्थ भणी नहीं ऊपजै, हे आनन्द विचार ।२३।
ते माटै तूं एहनी, लै आलोवण सार ।
जाव प्रायश्चित एहनो, पडि वजीयै धरप्यार ॥२४॥
तब आनन्द पूछ्यो भदंत, जे वर सत्य वदेह ।
आवै छै दंड तेह नै, श्री जिन वयण विषेह ॥२५॥
गौतम कहै नाहिं दंड तसुं, वलि आनन्द कहै वाय ।
सत्य प्रवर वच कहै तसूं, प्रायश्चित जो नाँय ।२६।
तो तुम्ह हीज आलोवणा, जाव प्रायश्चित लेह ।
इत्यादिक इधकार छै, देखोजी चित्त देह ॥ २७ ॥
इम सप्तम अङ्ग कह्यो, अण शणमैं सुविशेख ।
आनन्द आख्युं ग्रहस्थ हूं, तो पडिमानौं स्यूं पेख २८
व्यावच ग्रहस्थ तणी कही, दशवै कालिक मांहि ।
अणाचार अट्ठवीसमो, तृतीय अध्येनें ताहि ॥२६॥
गृही व्यावच मुनि नहीं करै, नथी करावै जाण ।
करतां अनुमोदै नहीं, त्रिविध २ पच्चखाण ॥ ३० ॥
ग्रहस्थ प्रति पूछै मुनि, सुख साता छै तोय ।
अणाचार ते सोलमो, दशवै कालिक जोय ॥३१॥

सुख पूछ्यां वंछी तिणे, साता तसुं अणाचार ।
तो गृही नैं साता कियां, किम हुवै धर्म उदार ॥३२॥
दशाश्रुत स्कंधे ज्ञारमी, पडिमा मैं संपेख ।
पेज्ज वंधण तूटो नहीं, ज्ञात तणों सुविशेख ॥३३॥
ते माटै कल्पै तसूं, ज्ञात तणों जे आहार ।
इम पेज्ज वंधण खातै कही, भिक्षाचरी तसुं धार ।३४।
पेज्ज वंधण नां अशुभ फल, ते माटै अवलोय ।
तसूं खातै भिक्षाचरी, ते पिण सावज्भ जोय ।३५।
भगवती अष्टम् शत विषे, पंचमुद्देशक जान ।
गौतम पूछ्यो गृही करी, सामायक मुनिस्थान ।३६।
तसुं भंड तस्कर अपहरयां, सामायक चीतार ।
भंडनी करै गवेषणा, श्रावक तेह तिंवार ॥ ३७ ॥
हेप्रभु ते निज भंड तणी, करै गवेषण सोय ।
के पर भंडनी ते करै, गवेषणा अवलोय ॥ ३८ ॥
प्रभु कहै करै गवेषणा, निज भंड तणीज तेह ।
पिण जे परना धन तणी, गवेषणा न करेह ।३९।
वलि गौतम पूछ्यो प्रभु, सामायिकरै मांहि ।
ते भंड नैं वोसिरावीयां, भंड अभंड कहाहि ।४०।
जिन कहै हंता गोयमा, भंड अभंड कहाय ।
वलि गौतम पूछ्यो प्रभु, तसुं भंड कहो किण न्याय४१

प्रभु कहे सामायक विषे, ते इसी भावना भाय ।
हिरण्य नहीं ए माहरो, वलि मुझ सुवर्ण नांहिं ।४२।
कांसी नहीं ए माहरी, नहीं वस्त्र मुझ एह ।
नहिं माहरो विस्तीर्ण धन, कनक रत्न मणी जेह ।४३।
मोती नें वलि शंख शिल, प्रवाल मूंग कहाय ।
पद्म रत्न आदिक छतां, सार द्रव्य मुझ नांहि ॥४४॥
एवी चिन्तवना प्रवर, सामायक में जान ।
पिण ममत्व भाव जे धन थकी, न कियो तिण पच्चखाण
तिण अर्थे इम आखीयो, निज भंड तणीज जेह ।
गवेषणा पिण परतणा, भंड नी नथी करेह ॥४६॥
प्रगट पाठ में इम कह्यो, ते माटै अवलोय ।
सामायक में धन थकी, ममत्व भाव तसुं जोग ।४७।
ममत्व भाव पच्चख्यो नथी, गृही सामायक मांहि ।
तो पडिमा में धन तणी, ममत्व तजी किम ताहि ४८
ममत्व तजी नहीं ते भणी, धन तेहनो ज कहाय ।
तिण सुं सामायक मझै, मुनि प्रति द्रव्य वहिराय ४९
द्रव्य अनेरा नों हुवै, ते मुनि प्रति जो देह ।
तो तेहनी आज्ञाथकी, वहिरावे गुन गेह ॥ ५० ॥
पिण ममत्व भाव पच्चख्यो नहीं, तिण सुं तसु द्रव्य जोय
वहिरायां आज्ञा तणों, कारण नाहिं छै कोय ।५१।

तिण ज उद्देशे पूछियो, गृही सामायक मांहि ।
कोई पुरुष सेवै तदा, तसुं भार्या प्रति आय ॥५२॥
हे प्रभु ते श्रावक तणी, भार्य्या प्रति सेवेह ।
तथा अभार्या प्रति तदा, सेवै इम पूछेह ॥ ५३ ॥
जिन कहै ते श्रावक तणी, भार्या प्रति सेवंत ।
अभार्या प्रति सेवै नहीं, वलि गौतम पूछंत ।५४।
हे प्रभु सामायक विषै, भार्या अभार्या होय ।
जिन कहै हंता गोयमा, भार्या अभार्या जोय ।५५।
किण अर्थे प्रभु इम कह्युं, भार्या प्रति सेवंत ।
अभार्या प्रति सेवै नहीं, तब भाषै भगवंत ॥५६॥
जिन कहै सामायक विषै, इसी भावना भाय ।
माता नाहिं छै माहरी, पिता न म्हारो ताहि ।५७।
भ्राता ते म्हांरो नहीं, भगिनी माहरी नांहि ।
भार्या माहरी को नहीं, सुत म्हारो नहिं ताहि ।५८।
नहिं छै म्हारी पुत्रिका, सुतनीं बहू विमास ।
ते पिण माहरी को नहीं, करै इम चिन्तवणा तास ५९
प्रेमरूप बंधन वलि, तसु वोछिन्न न हुन्त ।
तिण अर्थै करि तेहनी, भार्या प्रति सेवन्त ॥६०॥
इह विध प्रभुजी आखियो, सामायक रै मांहि ।
प्रेम बंधन छेद्यो नथी, मात प्रमुख नूं ताहि ।६१।

इम हिज पडिमा नैं विषै, मात प्रमुख नूं सोय ।
प्रेम बंधन तूटो नथी, न्याय विचारी जोय ॥६२॥
इग्यारमी पडिमा मभै, न्यातीला नौं धार ।
प्रेम बंधन छूटो नथी, तिणसुं लै तसुं आहार ६३
कह्युं दशाश्रुत स्कंध इम, ते माटे अवलोय ।
पेज्भ बंधन खाते तसुं, आहार लेवूं पिणहोय ॥६४॥
पूछ्यां जिन आज्ञा न दै, लेण वाला नैं जोय ।
देण वाला नैं पिण नहीं, जिन आज्ञा अवलोय ६५
जिन आज्ञा बारै नहीं, धर्म पुण्यरो अंश ।
धर्म कहै आज्ञा विना, तसुं कहिये मति भ्रंश ।६६।
सूत्र भगवती नैं विषै, सप्तम् शतकै भेव ।
प्रथम उद्देशा नैं विषै, दाख्यो श्री जिन देव ।६७।
सामायक मांहे कही, श्रावकनी संपेख ।
आत्म ते अधिकरण इम, प्रगट पाठ मैं लेख ।६८।
शस्त्र जे षट् काय नौं, अधिकरण कहिवाय ।
तसुं तीखो कीधां छतां, धर्म पुण्य किम थाय ।६९।
इमहिज पडिमा नैं विषै, श्रावक आतम जांण ।
अधिकरण न्याये करी, वारूं करो विनाण ॥७०॥
सामायक मैं आत्मा, तसुं अधिकरण आख्यात ।
तो जे सामायक विना, तेह तणी सी बात ।७१।

षट् पोसा इक मास मैं, अष्ट पोहरिया करेह ।
थया वोहित्तर वर्ष मैं, संवत्सरि इक लेह ॥ ७२ ॥
एह तीहोत्तर दिन तणौं, व्याज तसुं घर आय ।
वालि तोटादि नफा तणौं, ते हिज धणी कहाय ।७३।
घर पुत्रादिक जन्मीयां, हर्ष हियै तसुं आय ।
चित्त उदास हुवै मुंआ, पेज्ज वंधन इम थाय ।७४।
तोटो सुण विलखो हुवै, नफो सुणी विकसाय ।
सामायक पोषह मज्झै, ममत्व भाव इण न्याय ।७५।
इमहिज पडिसारे विषै, हर्ष सोग चित्त आय ।
पेज्झ बंधण आख्यो प्रभु, न्यातीला सूं त्हाय ७६
एक लखपती शेठ जसुं, मात पिता परिवार ।
स्त्री पुत्रादिक को नहीं, एकलडो अवधार ॥७७॥
लाख रूपईया रोकडा, मित्र भणी ज भलाय ।
श्रावक नीं पाडिमा वह, एकादश लग ताहि ।७८।
मित्र तणौ व्रत पंचमैं, निज पोताना जाण ।
सहस्र दाम उपरन्त स्यूं, राखण रा पच्चखाण ।७९।
पडिमा धारी ना जिके, लाख दाम राखंत ।
तेह तणी अव्रत तणौं, अघ किण नैं लागंत ॥८०॥
तथा रुपइया लाख जे, किणरा परिग्रह मांहि ।
पोतै रखवाली करै, पिण तसुं परिग्रह नांहि ।८१।

पडिमा धारीना प्रगट, परिग्रह मांहि पिछाण ।
अविरत नौं लागै तसुं, पाप निरन्तर जाण ॥८२॥
ममत्व भाव पच्चख्यो नथी, पडिमा मैं इण न्याय ।
सामायक जिम तेहनुं, तनु अधिकरण कहाय ।८३।
तथा लखपती शेठ इक, पुत्रादिक नहिं कोय ।
गुमास्ता बहु तेह नैं, विणज करै अवलोय ॥८४॥
दुकान वाणोत्तर भणी, शेठ भलावी सोय ।
श्रावक नी पडिमा वहै, एकादश लग जोय ।८५।
व्याज आवै रुपइया तणौं, ते किणरा घर मांहि ।
वलि तोटा रु नफा तणौं, कँवण धणी कहिवाय ।८६।
पडिमाधारी ना प्रगट, घर मैं आवै व्याज ।
नफा अनै तोटा तणौं, एहिज धणी समाज ।८७।
लाख तणा बे लाख थयां, परिग्रह इणरो हीज ।
सहस्र पचास रह्या छतां, तोटो तास कहीज ।८८।
पडिमा मैं पिण पंचमूं, देश व्रत गुण ठाण ।
जे जे तसु आगार छै, ते ते अव्रत जाण ॥ ८९ ॥
खाणों पीणों तेहनों, अविरत मांहीं जोय ।
तसुं अव्रत सेवा वियां, धर्म पुण्य किम होय ।९०।
पडिमा धारी आहार ल्ये, तेह नैं तो कहै पाप ।
तो देवै तसुं धर्म किम, देखो थिर चित्त थाप ॥९१॥

जो लेण वाला नैं पाप छै, पाप लगायो जास ।
धर्म पुण्य किण विध हुवै, जोवो हिय विमास ।९२।
लेण वाला नैं जे हुवै, देण वाला नैं तेह ।
जिन आज्ञा नहिं विहुं भणी, विहुं नैं अघ बंधेह ९३
जे पडिमा धारी विना, अन्य तणो पिण देख ।
खाणों पीणों पहिरणों, अविरत मैं संपेख ॥९४॥
ते माटै मुनि दै न तसुं, दीधां आवै दंड ।
अनुमोद्यां पिण दंड है, सूत्र निशीथ सुमंड ।९५।
श्रावक जिमावण तणी, जिन आज्ञा दे नांहि ।
आज्ञा विन नहिं धर्म पुण्य, देखोजी दिल मांहिं ९६
समदृष्टी अधै समौं, जिन आज्ञा मैं धर्म ।
आज्ञा बारै धर्म नहीं, ए जिन शासन मर्म॥९७॥
कहि कहि नैं कितरो कहुं, धर्म न आज्ञा बार ।
आज्ञा मांहीं पाप नहीं, श्रध्यां सम्यक्त्व सार ।९८।
इम सांभल उत्तम नरां, राखो जिन सु प्रतीत ।
आज्ञा बारै धर्म कही, करवी नहीं अनीत ॥९९॥

॥ इति ॥

॥ अथ तेवीसमों अनुकम्पा अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै असंजती भणी, जेह बचावै जाण ।
स्युं फल तास समुपजै, तसुं उत्तर पहिछाण ॥१॥

जीव छोडावै दाम दे, जिन मुनि नहिं दे आंण ।
अनुमोदै पिण नहिं तिके, सावज्झरा पच्चखाण ॥२॥
मुनि दीक्षा लीधी तदा, सर्व सावद्य पच्चखेय ।
जीव छोडावै नहिं तिके, निज वस्त्रादिक देय ॥३॥
ग्रहस्थ छोडावै दाम दे, जो मुनि अनुमोदेह ।
तृतीय करण भागै तसुं, पाप कर्म बंधेह ॥ ४ ॥
तृतीय करण अनुमोदवै, लागै पाप जबून ।
तो दाम दियै ते धुर करण, केम हुवै तसुं पुण्य ।५।
सामायक पोषह विषै, सावद्य प्रति पच्चखेह ।
जीव छोडावै नहिं तिके, निज वस्त्रादिक देह ॥६॥
खोटो सावद्य जाण कै, जे त्यागो मुनिराय ।
ग्रहस्थ ते सावद्य कियां, धर्म पुण्य किम थाय ॥७॥
अवद्य पाप सहित जे, सावद्य कहिये तास ।
अंतर आंख उघाड नैं, वारू न्याय विमास ॥८॥
निशीथ उद्देशै बार मैं, मुनि अनुकम्पा आंण ।
तृणादिके पाशे करी, जो बांधै त्रश प्राण ॥ ९ ॥
अथवा बांधतां प्रतै, जो अनुमोदै ताय ।
चौमासी तसुं प्रायश्चित, प्रगट पाठ मैं वाय ॥१०॥
इमहिज बंध्या जीव नैं, छोडै तो दंड पाय ।
छोडतां प्रति जे वली, अनुमोद्यां दंड आय ।११।

ए प्रत्यक्ष पाठ विषै कह्यो, अनुकम्पा ए जान ।
सावद्य छै तिण कारणै, दण्ड कह्यो भगवान ।१२।
छोडै तसुं अनुमोदियां, तृतीय करण दण्ड ख्यात ।
तो छोडै ते धुर करण, तास धर्म किम थात ।१३।
असंजतीरो जीवणो, बंछै नहिं मुनिराय ।
मरणो पिण नहिं बंछणो, ए राग द्वेष कहिवाय ।१४।
असंजतीरो जीवणो, वंछयां धर्म जु होय ।
तो ए अनुकम्पा तणो, प्रायश्चित किम जोय ।१५।
सावद्य ए अनुकम्प छै, तिण सुं दंड छै तास ।
निर्वद्य नो दंड हुवै नहीं, जोवो हिय विमास ।१६।
अनुकम्पा नैं अर्थ ही, कृष्ण ईंट उपाड़ ।
मूंकी बृद्ध तणै घरै, अंतगडे अधिकार ॥ १७ ॥
राणी धारणी गर्भ नीं, अनुकम्पा नैं अर्थ ।
पथ्य अनादिक भोगव्या, ज्ञाता मांहि तदर्थ ।१८।
सुलसांनी अनुकम्प करि, देवकी नां सुत आण ।
मूंकया हरण गवेषी सुर, अंतगड मैं जांण ॥१९॥
अभय कुमार तणी वली, अनुकम्पा चित्त आंण ।
दोहलो पूरयो मित्र सुर, ज्ञाता मैं जिन वांण ।२०।
रत्तन द्वीप देवी तणी, जिन ऋषि करुणा कीध ।
ज्ञाता नवम् अध्येन कह्युं, सावद्य यह प्रसिद्ध ।२१।

इत्यादिक अनुकम्प नीं, जिन आज्ञा दे नांहिं ।
ते माटै सावद्य तिके देखोजी दिल मांहिं ॥ २२ ॥
जीव हणै मुज कारणै, चिन्तव नेम कुमार ।
तोरण थी पाछा फिर्या, ए अनुकम्पा सार ॥२३॥
जीव हणान्ता नेम नां, विवाह निमत्त पिछाण ।
ते टाल्यो पाप पोता तणों, जिन आज्ञा तिहां जांण २४
गज भव सुशलो नावि हणयो, कष्ट भोगव्यो आप ।
निर्वद्य ए अनुकम्प छै, गज टाल्यो निज पाप ।२५।
उत्तराज्झयण इक बीस मैं, चोर देख समुद्र पाल ।
छोडायो आख्युं नथी, चरण लियो सुविशाल २६
दूजो श्रुतस्कंध अङ्ग धुर, तृतीय अध्येन विचार ।
प्रथम उद्देश कह्यो मुनि, बैठो नाव मझार ॥२७॥
छेद्रकरी जल आवतो, देखी ग्रहस्थ प्रतेह ।
बतावणो नहिं जिन कह्यो, प्रत्यक्ष पाठ विषेह २८
उदक भराती नाव ए, देवूं तुरत बताय ।
एह वुं पिण नवि चिन्तवै, मन माहीं मुनिराय ।२९।
आप अनें वहु अन्य जन, डूबै उदक करेह ।
सम भावै बैठो रहै, राग द्वेष टालेह ॥ ३० ॥
द्वितीय अङ्ग में आखियो, श्रुत खंध द्वितीय विषेह ।
पंचम अज्झयणे प्रगट, तीसमी गाथा जेह ॥३१॥

जीव सिंह व्याघ्रादि फुन, हिन्सक देखी संत ।
यह मारवा जोग छै, इम न कहै गुणवंत ॥ ३२ ॥
अथवा हिन्सक देख नैं, यह हणवा जोग ज नाहिं ।
एहवुं पिण कहिवुं नहीं, निपुण विचारो न्याय ।३३।
वृत्तिकार एहवुं कह्युं, वधवा जोग ज नाहिं ।
इम कहतां तसु कर्म्म नीं, अनुमोदना जु आय ३४
कह्या सिंह वाघ्रादि जे, आदि शब्दरै मांहिं ।
घातक जे षट्कायना, ते सहु आव्या ताहि ।३५।
हणै कसाई अज भणी, तसुं तारण अण गार ।
त्याग करावै वध तणां, दे उपदेश उदार ॥ ३६ ॥
पिण बकरा नुं जीवणो, वंछै नहिं मन मांहिं ।
असंजम जीवत वंछणो, वर्ज्यो छै जिनराय ।३७।
दश मैं अज्झयण द्वितीय अङ्ग, च्यार वीसमी गाह ।
जीवित मरण न वंछणो, असंजम जीवित ताह ।३८।
तेरमै ज्झयणे द्वितीय अङ्ग, तीन बीसमी गाह ।
जीवत मरण न वंछणो, असंजम जीवित ताह ३९
पनरम अज्झयणे द्वितीय अङ्ग, दशमी गाथा मांहि ।
असंजम जीवित प्रतै, मुनि आदर न दिये ताहि ४०
तृतीय अज्झयणे द्वितीय अङ्ग, तुर्य उद्देश विषेह ।
जीवित मरण न वंछणो, असंजम जीवित तेह ।४१।

इत्यादिक बहु स्थानकै, असंजम जीवत ताय ।
बाल मरण नहिं वंछणो, भाख्यो श्री जिनराय ।४२।
आप तणों नाहिं वंछणो, असंजम जीवित सोय ।
तो पर नुं वंछ्यां थकां, धर्म पुराय किम होय ४३
बाल मरण पिण आपरो, वंछै नहिं मुनिराय ।
परनूं पिण वंछै नहीं, वंछ्यां धर्म न थाय ॥४४॥
पण्डित मरण ज आपरो, वंछै महा मुनिराय ।
परनूं पिण वंछै तिको, विमल विचारो न्याय ४५
कह्यो सातमा अङ्ग मैं, पोषह विषै पिछाण ।
मात बचावण ऊठियो, चूलणी पिया जाण ।४६।
अभा तसुं इम आखियो, भागो पोसह सोय ।
वलि व्रत भागो कह्यो, भागो नियम सु जोय ४७
मात बचावा ऊठियो, भागो पोसह ताहि ।
तो साधु बचावे तेह नुं, चारित्र भागे किम नांहि ४८
जे कार्य्य कीधे छतैं, पोषह चारित्र भागेह ।
ते कार्य्य मैं धर्म किम, न्याय विचारी लेह ।४९।
द्वितीय सुगडा अङ्ग पवर, छट्टा अध्येनरै मांहि ।
अठारमी गाथा अमल, आद्र मुनी कहीवाय ।५०।
निज कर्म प्रते खपायवा, वा अन्य तारण ताहि ।
धर्म देशना प्रभु दियै, निमल विचारो न्याय ।५१।

असंजती जे जीव छै, तास बचावा हेत ।
बीर प्रभू उपदेश दे, इमनवि आख्यो तेथ ॥५२॥
द्वितीय आचारङ्ग नै विषै, द्वितीय अध्येने ताहि ।
प्रथम उद्देशै प्रभु कह्यो, ग्रहस्थलडै माहो मांहि ।५३।
देखी नवि चिन्तै मुनी, मारो एह प्रतेह ।
अथवा इण नैं मतहणो, राग द्वेष वर्जेह ॥ ५४ ॥
द्वितीय आचारङ्ग नै विषै, द्वितीय अध्येन विषेह ।
प्रथम उद्देशै ग्रहस्थ वे, तेऊ आरंभ करेह ॥ ५५ ॥
देखीमन चिन्तै न मुनि, अग्नि उजालो एह ।
अथवा आग्नि उजाल मति, इम पिण नवि चिन्तेह ५६
तथा बुझावो अग्नि ए, अथवा मत बुझाव ।
एहवुं पिण नवि चिन्तवै, राखै मुनि समभाव ५७
नवम् उत्तराज्झयणे कह्युं, मिथला बलती देख ।
साहमूं नवि जोयो नमी, टाल्यो राग विशेख ।५८।
दशवै कालिक सातवैं, पचासमी जे गाह ।
माहो मांही सुरभिडै, इम मतु माहो मांहि ॥५९॥
तीर्यञ्च माहो मांहि लडै, एहनी थावो जीत ।
इणरी जय थावो मती, मुनि न कहै ए रीत ।६०।
दशवै कालिक सातवें, इकावनमी गाह ।
वर्षाने फुन वायरो, सीत उष्ण अधिकाह ॥ ६१ ॥

राज विरोध रहित फुन, थावो देश सुगाल ।
उपद्रव रहित हुवो वली, इम न कहै मुनिमाल ६२
ए सातों होवो तथा, ए सातों मत होय ।
ए विध पिण न कहै कदा, अमल न्याय अवलोय ६३
दिशा मुढ जे ग्रहस्थ नैं, मार्ग वतायां दगड ।
निशीथ उद्देशै तेरमैं, चौमासीक प्रचंड ॥ ६४ ॥
ठाणा अङ्ग ठाणे तीसरे, तृतीय उद्देशक मांय ।
आत्म रक्षक तीन जे, आख्या श्री जिनराय ६५
हिन्सादिक देखी करी, दीयै धर्म उपदेश ।
अथवा मौन रहे मुनी, समभावे सुविशेष ॥६६॥
अथवा ऊठी त्यां थकी, एकन्त जागां जाय ।
आत्म रक्षक ए कह्या, पिण छोडावणो कह्यो नाँय ६७
निशीथ उद्देशै ग्यारमैं, परनैं भय उपजाय ।
डरावता प्रति अनुमोदै, दंड चौमासी आय ॥६८॥
ग्रहस्थ नी रक्षा करै, रक्षा कारि प्रतेह ।
अनुमोद्यां पिण दंड कह्यो, निशीथ तेरमैं लेह ६९
दशवै कालिक तीसरै, ग्रहस्थ तणी मुनिराय ।
साता पूछ्यां सोलमों, अणाचार कह्यो ताय ।७०।
ग्रहस्थ नी व्यावच कियां, आठ वीसमूं न्हाल ।
अणाचार मुनिवर भणी, दाख्यो परम कृपाल ७१

करै करावै जे नथी, करता प्रते अवलोय ।
मुनि अनुमोदै पिण नहीं, तो धर्म कहै किम सोय ७२
अशणादिक ग्रहस्थी भणी, दीयां मुनि नैं दंड ।
अनुमोद्यां पिण दंड कह्युं, निशीथ पनरमैं मंड ७३
शस्त्र है पटकाय नूं, ग्रहस्थ तणो जे शरीर ।
तसुं तीखो करवा तणी, किम आज्ञा दे वीर ७४
घातिक जे षट कायना, तास बचावै कोय ।
तसुं प्रते आज्ञा किम दीयै, न्याय विचारी जोय ।७५।

॥ हिव साधूरी आज्ञा बाहररी ग्रहस्थ व्यावच करै तसुं उत्तर ॥

कोई कहै साधू तणी, व्यावच ग्रहस्थ करेह ।
तेह विषै स्यूं फल हुवै, तसुं उत्तर हिवलेह ॥७६॥
जे व्यावच मुनि नी करै, तसुं आज्ञा प्रभु देह ।
निरदोषण अशणादिकर, तेह विषै धर्म लेह ।७७।
जे व्यावच मुनि नी करै, प्रभु आज्ञा नहिं देह ।
तेह विषै नहिं धर्म पुराय, न्याय विचारी लेह ७८

॥ साधूरी हरस छेद्यां पुराय शुभ क्रिया कहै तेहनुं उत्तर ॥

सोलम शतकै भगवती, तृतीय उद्देश विमास ।
हरस छेदै जे मुनी तणी, क्रिया कही प्रभुतास ।७९।

हरस छेदूं हूं तुम्ह तणी, इम पूछयां अणगार ।
आज्ञा न दियै गृही भणी, तिण सुं आज्ञा वार ।८०।
कार्य करावै नहि मुनी, ग्रहस्थ कनैं जे अंश ।
जबरी सूं जो को करै तो न करै तास प्रशंस ।८१।

॥ सोरठा ॥

ग्रहस्थ मुनी नी पेखरे, हरस छेदवै धर्म पुराय ।
तो मुनि ना कार्य्य अनेकरे, तसुं लेखै कीधां धर्म ८२
मुनि पग कांटो जाणरे, वलि फांटो चक्षू थकी ।
गृही काडे विण आंणरे, तसु लेखै धर्म गृही भणी ८३
दूखै पेट अपाररे, मुनि चित व्याकुल दुःख घणो ।
गृही मशलै कर साररे, तेह नैं पिण पुराय लेख तसुं८४
पेटूची अति दुःखरे, हूंठी भूंती समकहीं ।
गृही मशलै कर सुक्खरे, तेहनै पिण तसु लेख पुराय८५
अटवी विषै अचेतरे, हय खर सगट वैशाण नैं ।
आणै गृही पुर तेथरे, तेह नैं पिण पुराय तसु मतै ।८६।
मुनि थाको मग मांहि रे, बोज घणो पोथ्यां तणों ।
पग भर खीस्यो न जायरे, तो बोज उठायां पिण धर्म ८७
अरणय वलि पुर मांहि रे, संत तृषातुर चेत नहीं ।
सचित उदक गृही पायरे, तेहनैं लेखै धर्म तसूं ।८८।

इत्यादिक अवलोयरे, गृही मुनिनां कार्य करै ।
हरस छेद्यां धर्म होयरे, तसु लेखे सहु मैं धर्म ।८६।
मुनि नी हरस छेदंतरे, तेह नैं अनुमोदै मुनी ।
दंड चौमासी हुन्तरे, तृतीय उद्देश निशीथ मैं ॥ ६० ॥
अनुमोद्यां ही पापरे, तो गृही छेद्यां पुराय किम ।
जिन आज्ञा चित्त स्थापरे, आज्ञा विन नहीं धर्म पुराय
सामायक पच्चखाणरे, निर्वद्य कार्य अन्य वलि ।
ग्रहस्थ करै को जाणरे, तो मुनि अनुमोदै तसूं ।६२।
निर्वद्य कार्य ताहिरे, गृही कीधें धर्म पुराय तसुं ।
अनुमोदै मुनि रायरे, तेह नैं पिण धर्म पुराय छै ।६३।
विणज अनें व्यापाररे, सावद्य कार्य अन्य वलि ।
ग्रहस्थ करै तिंवाररे, धर्म पुराय तेहनै नथी ॥ ६४ ॥
सावद्य कार्य ताहि रे, गृही कीधें पिण पाप छै ।
अनुमोदै मुनिरायरे, प्रायश्चित आवै तसूं ॥ ६५ ॥
हरस छेदणरी ताहिरे, आज्ञा जिन मुनी न दियै ।
अनुमोदै पिण नांहि रे, तिण सुं ते सावद्य अछै ।६६।
ग्रहस्थ पासै जाणरे, कार्य करावा मुनि तणो ।
जावज्जीव पच्चखाणरे, मर्णान्ते पिण नियम ए ।६७।
हरस गुम्बडा आदि रे, गृही पै छेदावण तणा ।
मुनि नैं त्याग संवादरे, गृही छेदै जबरी थकी ।६८।

मुनि अनुमोदै नांहि रे, तो तसु त्याग भागै नही ।
पिण कामी कहिवायरे, त्याग भगावानौ गृही ।९९।
तिण सुं सावद्य एहरे, वलि अनुमोदै पिण नही ।
आज्ञा पिण नहिं देयरे, ते माटै नहिं धर्म पुराय ।१००।
जे कामी गृही थायरे, त्याग भगावा मुनि तणौ ।
धर्म नहिं तिण मांहि रे, न्याय दृष्ट अवलोकिये १०१
किण गृही अट्ठम् कीधरे, आहार च्यार त्यागन कीया।
व्याकुल तृषा प्रसिद्धरे, थयां अचेतन अन्य गृही ।१०२।
उसनोदक तसु पायरे, कियो सचेतन अधिक सुख ।
नेम भङ्ग तसु नांयरे, पिण कामी त्याग भांगण तणौ
तेम इहां अवलोयरे. नेम भङ्ग मुनि नो नथी ।
पिण कामी गृही होयरे, त्याग भगावा मुनि तणौ।१०४
किणही ग्रहस्थ पच्चखाणरे, हरस छेदावा नां किया।
जबरी सूं पाहिछाणरे, वैद्य हरस छेदै तसू ॥ १०५ ॥
नेम भङ्ग तसु नाहिं रे, पिण त्याग भङ्ग करवा तणौ ।
कामी वैद्य कहिवायरे, तिण सु धर्म न तेह नैं ।१०६।
तिम मुनिरै पच्चखाणरे, हरस छेदावा गृही कनैं ।
जबरी सूं पाहिछाणरे, वैद्य हरस छेदै तसूं ॥ १०७ ॥
नियम भङ्ग तसुं नाहिंरे, पिण त्याग भङ्ग करवा तणौ ।
कामी वैद्य कहायरे, तिण सुं नहिं तसु धर्म पुराय१०८

वैद्य हरस छेदेहरे, अनुमोदै नाहिं जे मुनि ।
किम तसु धर्म कहेहरे, न्याय विचारी देखल्यो ।१०६।
अनुमोद्यां ही पापरे तो छेदै तसु पुराय किम ।
तृतीय करण अघ स्थापरे, प्रथम करण तो अधिक अघ
पाप हुवै धुर करणरे, ते अघनी अनुमोदना ।
तीजे करण उच्चरणरे, तिण लेखे तसु पाप है ।१११।
प्रथम करण पुराय होयरे, ते पुराय नी करणी प्रतै ।
अनुमोदै जे कोयरे, तास पाप किण विध हुवै ।११२।
करण वाला नैं पुरायरे, ते अनुमोद्यां पाप कहै ।
प्रत्यत्त वचन जबून्यरे, न्याय दृष्ट कर देखीये ।११३।
छेदै तिण नैं पुरायरे, ते पुरायरी करणी प्रतै ।
अनुमोद्यां जो पुरायरे, तास पाप किण विधहुवै।११४।
धर्म विना पुराय नाहिंरे, शुभ जोगां थी निरयरा ।
पुराय वंध पिण थायरे, ज्यूं गहूं लारै खाखलो ।११५।
द्वितीय आचाराङ्ग माँयरे, तेरम अध्येन नैं विषै ।
पाठ कह्या जिन रायरे, ग्रहस्थ करै साधू तणां ।११६।
मुनि तनु ब्रण ज थायरे, गृही छेदै शस्त्र करी ।
मुनि मनकर वान्छै नाँयरे, न करावै वचकाय करि११७
व्रण छेदी नैं ताहिरे, रुधिर राधि काढै गृही ।
मुनि मनकरि वंछै नांहिरे, न करावै वच कायकरि ११८

गृही मुनि पगवालि कायरे, तेल चोपडै मर्द्दनै ।
मुनि मन कर वंछै नाँयरे, न करावै वच काय करि ११९
गृही मुनि पगथी ताहिरे, खीलो कांटो काढियां ।
मन करि वंछै नांहिरे, न करावै वचकाय करि । १२० ।
मुनि मस्तक थी ताहिरे, गृही काढै जुं लीख प्रतै ।
मन करि वंछै नांहिरे, न करावै वचकाय करि । १२१ ।
बोल इत्यादिक ताहिरे, ग्रहस्थ करै साधू तणां ।
वंछै नहिं मुनि रायरे, द्वितीय आचारङ्ग तेर मैं । १२२ ।
मुनि अनुमोदै नांहिरे, तो ग्रहस्थ करै ए ऋषि तणां ।
धर्म पुराय तिण मांहिरे, किण ही बोल विषै नथी १२३
मुनि तनु व्रण छेदंतरे, धर्म कहै इक बोल मैं ।
तो लसु लेखै हुन्तरे, धर्म सर्व बोलां मझै । १२४ ।
धर्म पुराय नहिं होयरे, ते सघला बोलां मझै ।
तो पाप गृही नैं जोयरे, जिन आज्ञा नहिं ते भणी १२५
तिम ते हरस छेदंतरे, अशुभ कृया ते वैद्य नैं ।
मुनि नहिं अनुमोदंतरे, धर्म पुराय किण विध हुवै १२६
हरस छेद्यां शुभ कर्म रे, तो आचारङ्ग मैं कह्या ।
त्यां सघला मैं धर्म रे, कहवो तिणरै लेख ए ।। १२७ ।।
धर्म नहिं अन्य मांहिरे, तो छेदैं व्रणादि गृही ।
तिण मैं पिण पुराय नांहिरे, ए सावद्य आज्ञा नथी १२८

हरस छेद्यां धर्म हुन्तरे, तो मुनि शिर सेती गृही।
जूंवा पिण काढंतरे, तिणमें पिण तसुं लेख पुण्य १२६
वलि मुनिवरनीं सोयरे, पग चम्पी मर्द्दन करै।
करै जो औषध कोयरे, तसुं लेखै पुण्य सहु मन्है १३०
वृत्ति विषै इम वायरे, धर्म बुद्धि छेद्यां थकां।
कृया हुअै शुभ तायरे, अशुभ कृया लोभादि करि १३१
विरुद्ध अर्थ छै एहरे, सूत्र थकी मिलतो नथी।
मुनि नहीं अनुमोदेहरे, तास कृया शुभ किम हुवै १३२
इम शुभ कृया जो होयरे, तो औषध तेलादि करि।
मुनि तनु मर्द्दै कोयरे, तास कृया पिण शुभ हुवै १३३
वलि मुनि पगथी तायरे, खीलो कांटो काढीयां।
तसुं लेखै कहिवायरे, तेहनैं पिण हुवै शुभ कृया।१३४।
वलि मुनि शिरथी सोयरे, जूंवां लीखां काढीयां।
तसुं लेखै अवलोयरे, तेहनैं पिण हुवै शुभ कृया १३५
मुनि अति तृषा अचेतरे, साचित अचित जल पाय कर।
कीधो ग्रहस्थ सचेतरे, तसुं लेखै हुवै शुभ कृया।१३६।
थाको मुनी उजाडरे, गाडै हय खर चाढ करि।
आणै ग्राम मभ्कारे, तसुं लेखै हुवै शुभ कृया।१३७।
इत्यादिक अवलोयरे, मुनि नै जे कल्पै नहीं।
ते करै कार्य्य गृही कोयरे, तसुं लेखै पिण शुभ कृया

जो यां बोलां रे मांहिरे, नहुवै गृही नैं शुभ कृया ।
तो हरस छेद्यां पिण ताहिरे, किम शुभ कृया कहिजीए
हरस छेदणारी तांमरे, जिन मुनि आज्ञा नहिं दियै ।
जिन आज्ञा विन कामरे, कीधां नहिं छै धर्म पुराय १४०

॥ इति ॥

॥ अथ चौबीसमूं सुभद्राधिकार ॥

॥ दोहा ॥

फांटो काढ्यो आंखथी, सती सुभद्रा जेह ।
किणी सूत्र मैं ए नहीं, कथा विषे छै एह ॥ १ ॥
जो सुभद्रा नैं धर्म छै, तो मुनिना अवलोय ।
अन्य कार्य्य बाई कीयां, तसु लेखे धर्म होय ॥ २ ॥
दूखे पेट मुनी तणों, मोत घात अवलोय ।
बाई मशलै उदरतो, तसु लेखे धर्म होय ॥ ३ ॥
वालि किण ही साधू तणी, टली पेटूची ताम ।
बहु दुःख फेरोपी घणो, अन्न नहिं भावे आम ॥४॥
ते पेटूची मुनि तणी, बाई मशलै कोय ।
तो उणारै लखे तदा, तिण मैं पिण धर्म होय ॥५॥
किणही मुनि रो गोलो चढयो, बहु दुःख बाई देख ।
गोलो मशलै तेहनूं, धर्म हुई तसु लेख ॥ ६ ॥

अग्नि विषे पडता प्रतैं, बाई बांह पकडेह ।
बारे काढे तेहनैं, तो धर्म तसुं लेखेह ॥ ७ ॥
ऊंचा थी पडतो मुनी, बाई झेले तास ।
तिण मांही पिण धर्म छै, तेहनै लेख विमास ॥८॥
श्राखड पडतां मुनि भणी, बाई झाल राखेह ।
पडता नैं बेठो करै, हुवे धर्म तसुं लेखेह ॥ ६ ॥
मांथो दूखे मुनि तणों, बाई शिर दाबेह ।
मलम लगावे दूखणे, तसुं पिण धर्म कहेह ॥१०॥
पाटो बांधे दूखणे, मुच्छी फुन मुशलेह ।
इत्यादिक बहु मुनि तणा, बाई कार्य्य करेह ॥११॥
दुःखी देख साधू भणी, मरतो देखी ताय ।
पीडाणो देखी करी, साता करै सवाय ॥ १२ ॥
फांटो काढ्यो सुभद्रा, धर्म हुसी ज्यो तास ।
तो यानैं पिण धर्म छै, तिणरै लेख विमास ॥१३॥
साधूरा कारज करै, बाई जे जिण रीत ।
तिम कारज भाई करै, समणी नां धर प्रीत ॥१४॥
जो सुभद्रा नैं धर्म छै, तो श्रमणी नों जोय ।
भाई फांटो आंख थी, काढ्यां पिण धर्म होय ॥१५॥
वलि कांटो पग मांहि थी, समणी तणोज सोय ।
भाई काढे तेह मैं, तसुं लेखै धर्म होय ॥ १६ ॥

वलि गोलो श्रमणी तणो, पेट पेट्रुची जोय ।
भायो मशलै तेह मैं, तसु लेखे धर्म होय ॥ १७ ॥
शिर दाबै श्रमणी तणुं, भायो तसु दुःख देख ।
इम मुच्छी मशलै तसुं, धर्म होसी तसु लेख ॥१८॥
मलम लगावे दूखणो, वलि अज्झा पडती जोय ।
भायो झेलै तेह नैं, तसु लेखे धर्म होय ॥ १९ ॥
पडती नैं बैठी करै, इत्यादिक अवलोय ।
समणी नां भायो करै, तसु लेखै धर्म होय ॥२०॥
साधुरा बाई करै, तास धर्म छै सोय ।
तो श्रमणी नां भायो कीयां, तिणमैं अघ किम होय
सुभद्रा फांटो काढियो, जो तिण मैं धर्म होय ।
तो सारां मैं धर्म छै, न्याय सरिषो जोय ॥ २२ ॥
जो यां सहु बोलां मभ्कै, जिन आज्ञा दे नांहि ।
तो धर्म पुराय पिण को नहीं, धर्म जिन आज्ञा मांहि
जे मुनीवर नैं त्याग छै, ते कार्य्य अवलोय ।
ग्रहस्थ करै को मुनि तणां, तास धर्म नाहिं होय॥२४॥
जिण रीतें जिणवर कह्यो, तिण रीतें अवलोय ।
अज्झा नैं मुनिवर भणीं, वचावियां धर्म होय २५
जे प्रभु सीखावे नहीं, न करै तास प्रशंस ।
आज्ञा पिण देवे नहीं, तिहां धर्म तणों नहिं अंस २६

॥ इति ॥

॥ अथ पचीसमूं गोशालाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै छद्मस्थ प्रभु, चौनाणी था जेह ।
किम चूका कहो वीर नैं, तसुं उत्तर हिव लेह ॥ १ ॥
वलि तुम्ह कहो गोशाल नैं दीक्षा दीधी स्वाम ।
ते किण सूत्र विषै कह्युं, तसु उत्तर पिण तांम ॥ २ ॥
वलि अनुकम्पा करि प्रभु, राख्यो जे गोशाल ।
तेह विषै पिण स्युं थयुं, तसुं उत्तर पिण न्हाल ॥३॥
शतक पनरमैं भगवती, आया सावत्थी स्वाम ।
उत्पति गोशाला तणी, गौतम पूछी तांम ॥ ४ ॥
वीर कहै सुण गोयमा, गौ नी शाला मांय ।
ए जन्म्यों तिण कारणै नाम गोशाल कहाय ॥५॥
हूं तीस वर्ष घर में रही, ग्रह्युं चरण सुख राशि ।
प्रथम वर्ष पख पख सुतप, अट्ठी ग्राम चौमास ॥६॥
तप मास मास दूजे वर्ष, नगर राजग्रह वार ।
नालंदा पाडा मझै, चौमासो सुविचार ॥ ७ ॥
तंतुवाय शाला विषै, हूं तपकरत विशेष ।
आयरह्यो गोशाल पिण, ते शाला इक देश ॥८॥
प्रथम मास नूं पारणो, विजय तणै घर किद्ध ।
प्रगट हुआ जे पंच द्रव्य, महिमा देख प्रसिद्ध ।६।

गोशालो कह्यो मुझ भणी, थे धर्मा चार्य सोय ।
धर्मान्तेवासी प्रभू, हूं तुम्हनो अवलोय ॥ १० ॥
तब मैं तेहना वचन नैं, आदर न दियो कोय ।
मनमैं भलो न जाणियो, धारी मौन सु जोय ॥११॥
द्वितीय मास नों पारणो, आणंद नैं घर कीध ।
तिमहिज गोशाले कह्यो, मैं आदर नहीं दीध ।१२।
तृतीय मास नूं पारणो, कियो सुदर्शण गेह ।
तिमहिज गोशाले कह्यो, मैं आदर नाहिं देह ॥१३॥
तुर्य मास नूं पारणो, कोल्लाक संनिवेश ।
ब्राह्मण बहुल तणे घरे, करि चाल्यो सु विशेष ।१४।
तंतु वाय शाला विषे, गोशालो तिहवार ।
मुज प्रति तिण देख्यो नहीं, जोयोभ्यन्तर बार ।१५।
मुज अण देख्यें निज उपधि, ब्राह्मण नैं दे त्हाय ।
मुंडी दाढ़ी मूंछ प्रति, मिल्यो ज मुज सूं आय ।१६।
तीन प्रदक्षण दे करी, जाव नमी कहै मुज्झ ।
थे धर्मा चार्य माहरा, हूं धर्म अंते वासी तुज्झ ॥१७॥
तब मैं गोशालक तणां, एह अर्थ प्रति सोय ।
अङ्गीकार कीधो तदा, पाठ विषै इम जोय ॥१८॥
वृत्तिकार कह्यु एहवा, अजोग नैं पिण जेह ।
अङ्गीकार कीधो प्रभु, ते अक्षीण राग पणेह ॥१९॥

वलि तेहना परिचय थकी, ईषत् थोडी जाण ।
स्नेह गर्भ अनु कम्पनां, सद्भावे पहिछाण ॥ २० ॥
प्रभु छद्मस्थ पणे करि, जेह अनागत काल ।
तेह विषै जे दोषनां, अजाणवाथी न्हाल ॥ २१ ॥
अवश्य होणहार भाव थी, कीधो प्रभु अङ्गीकार ।
अभय देव सूरे कह्यो, वृत्ति विषै ए सार ॥ २२ ॥

॥ ते टीका कहै छै ॥

अभ्युप गच्छामि यच्चेतस्य अयोगस्याऽप्यभ्युगमनं भगवत स्तदक्षीणरागतया परिचये नेपत्स्नेह गर्भानुकंपासद्भावात् छद्मस्थ तयाऽनागत दोषानवगमाद ऽवश्यं भावीत्वाच्चे तस्यार्थेति भावनीयं ।

॥ दोहा ॥

तदन्तर हूं गोयमा, गोशालारे साथ ।
भोगविया षट् वर्ष लग, लाभ अलाभ संजात ॥ २३ ॥
सुख दुःख नें सत्कार फुन, असत्कार फुन सोय ।
अनित्य जागरणा जाग तो, हूं विचर्यो अवलोय २४
मृगशिरमासे एकदा, हूं गोशाला साथ ।
जे सिद्धार्थ ग्राम थी, कुर्म ग्राम प्रति जात ॥ २५ ॥
तिल बूंटो इक देख नें, मुज प्रति तब गोशाल ।
ए तिल नीपजसेक नहीं, इम पूछ्यो तिह काल ॥ २६ ॥

सप्तजीव तिल पुष्प नां, मरी २ नें ताय ।
किहां उपजसे हेप्रभु, तब हूं बोल्यो वाय ॥ २७ ॥
नीपजसै तिल थंभ ए, फूल जीव जे सात ।
मरी मरी ए एह नैं, तिलथंभ विषै विख्यात ॥२८॥
एक फली जे तिल तणी, तेह विषै अवलोय ।
ए तिल सप्त हुस्ये सही, इम मैं भाष्यो सोय ॥ २६ ॥
तब गोशाले मुज वचन, श्रद्धयो नांहिं मन मांहि ।
प्रतीतीयो पिण नहीं तिणें, रोचावियो पिण नांहिं ३०
मुज नैं भूंठो घालवा, धीरे धीरे तास ।
पाछोवल नैं आवीयो, ते तिल बूंटा पास ॥ ३१ ॥
माटी मूल सहीत तिण, तुरत उपाडी जेह ।
एकन्ते न्हाख्यो तदा, ते तिल थंभ प्रतेह ॥ ३२ ॥
तत्खिण थोडी वृष्टि करि, थंभ्यो तिल थंभ स्थान ।
थया सप्त तिल फूल चवि, एक फली मैं आण ।३३।
गोशाला साथै तदा, हूं आयो कुर्म ग्राम ।
तेहि नगरी वाहिरै, बाल तपश्वी ताम ॥ ३४ ॥
नाम वैसियायिण तिको, तप छट्ठ छट्ठ करेह ।
रवि सन्मुख आतापना, तिहां लेतो विचरेह ॥३५॥
तसु शिर थी रवि ताप करि, जूंका भूमि पडंत ।
तास दया अर्थे तिको, वलि २ शिरै धरंत ॥ ३६ ॥

तव गोशालो मुज पासथी, बाल तपस्वी पांहि ।
धीरे २ आथ नैं, बोल्यो एहवी वाय ॥ ३७ ॥
स्युं तूं मुनि तपस्वी अछै, तथा तत्व नूं जांण ।
यती तथा तूं कहा अही, कै जूं सिज्यातर मांण॥३८॥
गोशालानां वचन नैं, तिण आदर नहिं दिद्ध ।
मनमैं भलो न जाणियो, साधी मौन प्रसिद्ध ॥३९॥
बे त्रण वार गोशाल तब, बोल्यो तिमहिज बांण ।
स्यूं तूं मुनि तपश्वी अछै, जाव जूंआं रो स्थान ॥४०॥
बाल तपस्वी सीघ्र तब, कोप चढ्यो असराल ।
जे आतापन भूमि थी, पाछो वलियो न्हाल ॥४१॥
समुद्घात तेजस प्रतै, करै करी अवलोय ।
सात आठ पग ते तदा, पाछो उसरी सोय ॥४२॥
मंखलि पुत्र गोशाल नैं, हणवा काजै जांण ।
काढे तेज शरीर थी, ए तेजू उष्ण पिछांण ॥४३॥
तिण अवशर हूं गोयमा, गोशालक नी जेह ।
तेह मंखली पुत्र नीं, अनुकम्पा अर्थेह ॥ ४४ ॥
वेसियायण नामैं तिको, बाल तपश्वी जेह ।
तेह तणी जे तेज-प्रति, दूर हरण अर्थेह ॥ ४५ ॥
तापस नैं गोशाल रै, इहां विचाले न्हाल ।
शीतल तेजू लेश्य प्रति, मैं मूंकी तिण काल ॥४६॥

॥ चोपाई ॥

जा मुज शीतल तेजूलेशं, तिण लेश्या करि नैं सुविशेषं । बेसियायण तापस नी जाणी, उन्ही तेजुलेश हणाणी ॥ ४७ ॥ बेसियायण तपस्वी तिह अवशर, मुज शीतल तेजु लेश्या करि । पोता नी जे उष्ण पिछाणी, तेजु लेश्यहणाणी जाणी ॥ ४८ ॥ गोशाला नां तनु नैं ताह्यो, जाण्यो किञ्चित पीड न पायो । देख्यु छवि छेद अण करतो । ते उष्ण तेजु लेश्य संहरतो ॥ ४९ ॥

॥ दोहा ॥

उष्ण तेजु प्रति संहरी, मुज प्रति बोल्यो वाय ।
जाण्या भगवन् आपनैं, जाण्या २ ताहि ॥५०॥
आप तणा ज प्रशाद थी, दग्ध हुवो नाहिं एह ।
संभ्रम थी गत शब्द नैं, बार २ उचरेह ॥ ५१ ॥

॥ गीतक छन्द ॥

कह्यु वृत्ति मैं गोशाल नों भगवंत संरक्षण कीयो।
सराग भाव करि प्रभु इक दयारस थी राखीयो ॥
जे उभय मुनि नवि राखस्ये ते बीत राग पणै

तूंनी । फुन लब्धि अणा फोडणा थकी । वलि अवश्य भावी भाव थी ॥ ५२ ॥

॥ अत्र टीका ॥

इह च यद्गोशालकस्य संरक्षणं भगवतः कृतं तत्सरागत्वेन दयैकरसत्वाद्भगवतः यच्च सुनक्षत्रसर्वाणुभूति मुनिपुङ्गवयोर्न करिष्यति तद्वीतरागत्वेन लब्धिनुपजीवकत्वाद् अवश्यं भावित्वाद्वे त्यवसेयं ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

गोशालो तिण अवशरै, मुज प्रति बोल्यो वाय ।
जूं सिय्यातरियो किसूं, तुज प्रति भाषै ताहि ।५३।
जाणया भगवंत तो भणी, जाणया जाणया सोय ।
तब हूं गोशाला प्रतै, इम बोल्यो अवलोय ।।५४।।
हे गोशाला तूं इहां, वेशियायण नामेह ।
बाल तपश्वी प्रति तदा, देखी नेत्र करेह ॥ ५५ ॥
धीरे २ ऊसरी, मुज पासा थी ताहि ।
जिहां वेसियायण तिहां, जई बोल्यो इम वाय ।५६।

॥ चोपाई ॥

स्यूं तूं मुनी तपश्वी छै कोई, तथा तत्व नों जाण सु होई । स्यूं तूं यती कदाग्रही कहियो, के तूं जूं

नूं सिद्धात्तरीयो ॥ ५७ ॥ वेशियायण तपश्वी तिहवारं, तुज बच आदर न दियै लिगारं । मनमैं पिण भलो न जाणी, रह्यो मून धरी तिह टाणै ॥ ५८ ॥ अहो गोशाला तूं तब हेर, तिण बाल तपश्वी प्रतेज फेर । तूं मुनी कै जाय जूं सय्या तरियो, इम बे त्रण बार उच्चरियो ॥ ५९ ॥ तब बाल तपश्वी सीघ्र कोप्यो, जाव पाछो ऊशर चित्त रोप्यो । तुझ हणवा तेजू मूंकेह, तब हूं तुझ अनुकम्पा अर्थेह ॥ ६० ॥ तिणरी उष्ण तेजू हणवा न्हाल, मूंकी शीतल तेजू अंतराल । तब बाल तपश्वी चित्त ठाणी, उष्ण तेजू हणाणी जाणी ॥ ६१ ॥ पीड तुझ तनु नावि देखेह । उष्ण तेजु लेश्या संहरेह । तब मुज प्राति बोल्यो बाय, जाणया २ हे भगवन् ताहि ॥ ६२ ॥

॥ दोहा ॥

तिण अवशर गोशाल तें, सांभल बच मुझ पास ।
बीहनो यावत पामियो, अतही भय मन त्रास ॥६३॥
मुज प्राति वन्दी नमण करि, इम बोल्यो अवलोय ।
संक्षिप्त विस्तीर्ण प्रभु, तेज लेश किम होय ॥६४॥

तिण अवशर हूं गोयमा, गोशाला प्रति ताहि ।
तेह मंखली पुत्र प्रति, बोल्यो इह विध वाय ।६५।
इक मूंठी उडदै करी, फुन जे उष्ण जलेह ।
इक पुशली तप छट छटे, अंतर रहित करेह ॥६६॥
ऊंची बांह आतापना, सूर्य सनमुख लेह ।
तसुं छेहडै षट् मासै, तेजु लेश ह्वै तेह ॥ ६७ ॥
गोशालक तिण अवशरै, ए मुज अर्थ प्रतेह ।
सम्यक् प्रकारे विनय करि, अङ्गीकृत करेह ॥६८॥
तिण अवशर हूं गोयमा, गोशालक संघात ।
अन्य दिवश कुर्म ग्रामजे, नगर थकी विख्यात ।६९।
सिद्धार्थ फुन ग्रामजे, नगरे आवत तांम ।
जे तिल थंभ मुज पूछियो, भट आव्यो ते ठाम ।७०।
तब गोशालो मुज प्रते, बोल्यो एहवी वाय ।
मुज नैं प्रभु तुम्ह जद कह्युं, तिल निपजसी ताहि ७१
तिमज सप्त पुष्फ जीव चांवे, एक सङ्गली मांय ।
हुस्ये सप्त तिल तेह वच, मिथ्या प्रत्यक्त दिखाय ।७२।
ते तिलस्थंभ न नीपनौं, सप्त पुष्फनां जीव ।
चवी सप्त तिल नवि थया, इक सूंगणी मैं अतीव ७३
तिण अवशर हूं गोयमा, गोशालक प्रति वाय ।
बोल्यो तैं मुज जद वचन, श्रद्धयो नांहिं मन मांय ७४

प्रतीतियो नाहिं रोचव्यो, यह अर्थ अवलोय ।
मनमैं अश्रद्ध तो छतो, झूंटो बालक मोय ॥७५॥
ए मिथ्या वादी हवो, इम मन करी विचार ।
मुज थी पाछो ऊशरी, धीरै धीरै धार ॥ ७६ ॥
जिहां तिलथंभ तिहां आयनैं, यावत एकान्त ठाम ।
न्हां रुयो ते उपाड नैं, हे गोशालक तांम ॥ ७७ ॥
तत् खिण बादल अभ्र दिव्य, प्रगट थयो तिहवार ।
अभ्र बदल ते क्षिप्र ही, तिमहिम यावत धार ॥७८॥
तेह तिलनां स्थंभ नीं, एक संगली मांहि ।
तदा ऊपना सप्त तिल, जेम कह्यु तिम ताहि ॥७९॥
हे गोशाला तेह ए, तिल नूं स्थंभ निप्पन्न ।
नथी तेह अण नीपनूं, निश्चय करी सुजन्न ॥८०॥
तेह सप्त पुष्फ जीव चवि, ए तिलस्थम्बनीं जाण ।
एक संगली नैं विषै, थया सप्त तिल आण ।८१।
इम निश्चय गोशालका, वनस्पतिरै मांहि ।
पउट्टपरिहार करै तिकै, मरी मरि तसु तन आय ।८२।

॥ टीका ॥

पारिहत्य २ मृत्वा २ यस्तस्यैव वनस्पति शरीरस्य परिहारः परिभोग स्तत्रै बोसावो सौ परिवृत्य परिहारस्तं ।

॥ वार्त्तिका ॥

वणस्पत्ति कहतां वनस्पति नां जीव जे पारिवृत्त २ क० मरी मरी नैं एहिज वनस्पती ना शरीर नौं परिहार क० परिभोग ते तिहांइज उपजवुं ते पारिवृत्त परिहार कहिइं तेम ते परिहरति कहतां करै, ॥

॥ दोहा ॥

तिण अवशर गोशाल ते, मुज इम कह्यै छतेह ।
एह अर्थ श्रद्धै नहीं, नाहिं प्रतीत न रुचेह ॥ ८३ ॥
यह अर्थ अण श्रद्धतो, जिहां तिल स्थम्ब त्यां आय ।
ते तिल थंभ थी तिल तणी, सङ्गली तोडै ताहि ॥ ८४ ॥
ते तिल संगली तोड नैं, करतल विषे ज सोय ।
सप्त तिल पाडे तदा, प्रगट पणै सु जोय ॥ ८५ ॥
तिण अवशर गोशाल नैं, गिणतां ते तिल सात ।
एहवुं मन मैं चिंतव्युं, जाव समुत्पन्न जात ॥ ८६ ॥
इम निश्चय सहु जीव पिण, पउट परिहार करेह ।
हे गोतम गोशाल नूं, पउट वाद कह्यु एह ॥ ८७ ॥
हे गोतम गोशाल नूं, मुझ पाशा थी जेह ।
आतमई करिकै तसुं, पडिवुं जुदो कहेह ॥ ८८ ॥

॥ वार्त्तिका ॥

आयाए पाठ नौ अर्थ, वृत्तीकार आयाए पाठ नां बे अर्थ कीया:—भगवंत कहै म्हारा पाशा थी आयाए कहतां आतमई

करी अपक्रम ते जुदो पड्यो नीसरयो अथवा आयाए कहतां आदाय तेजू लेश्या नूं उपदेश ग्रहण करी नैं जुदो पड्यो ।

॥ इति आयाए पाठ नूं अर्थ ॥

तिण अवशर गोशाल ते, इक मूठि उड़दैह ।
इक पुसली उष्णोदके, छट् यावत विहरेह ॥८६॥
तिण अवशर गोशाल ते, षट् मासे अवलोय ।
संक्षिप्त विस्तीर्ण तिका, तेजु लेश्यवंत होय ।६०।
तिण अवशर गोशालपे, पार्श्व नाथ नां जोय ।
षट् साधू भागल हुंता, आवी मिलया सोय ।६१।
गोशाला नैं गुरू पणै, पडिवज्झ रहिता जेह ।
तेसाणै तिमहिज सहु, पूर्व कह्या तिम लेह ।६२।
यावत् ए अजिन छतो, पिण जिन शब्द उच्चार ।
प्रकाशमान छतो ज ए, विचरै छै इहवार ॥६३॥
मोटी प्रषध नैं विषे, वीर कही ए बात ।
गोशालो सुण कोपीयो, निज संघ प्राति ले साथ ६४
वीर समीपै आयनैं, बोल्यो एहवी वाय ।
भलो कहै रे काशवा, आछो कहै रे ताहि ॥६५॥
रे काशव तूं इम कहै, मंखली सुत गोशाल ।
धर्मान्ते वासी माहरो, पिण हूं नाहिं ते म्हाल ६६
मंखली सुत गोशाल ते, धर्मान्ते वासी तोय ।
ते तो काल करी गयो, सुरलोके अवलोय ॥६७॥

महाकल्प चौरासी लक्ष, सप्त देव भव सार ।
सप्त संयूथा सन्नि गर्भ, सप्त पउट परिहार ॥६८॥
इत्यादिक निज शास्त्र नी, वार्त्तिका कही वणाय ।
जीव उदाई नाम हूं, पिण गोशालो नाँय ॥६६॥
गोशालारै तनु विषै, अम्हे कीधूं प्रवेश ।
सप्तम् पौट परिहार ए, इत्यादिक जे अशेश ॥१००॥
चौर तणो दृष्टान्त प्रभु, गोशाला नैं दीध ।
तब गोशालो बोलियो, अगल डगल बहु विधि १०१
अवानु भूति मुनि तदा, गोशालापै आय ।
भगवन्त नैं अनुराग करि, बोल्यो एवी वाय १०२
समण माहण पै एक पिण, आर्य्य बच धारेह ।
तो पिण तसुं वन्दै नमै, यावत सेव करेह ॥१०३॥
तो स्युं कहिवो गोशाल तुझ, भगवंत प्रव्रर्या दीध ।
निस्चय भगवंत मूंडियो, शिष्य पणौ सुप्रासिद्ध १०४
वृत्ति पणौ करिनैं वली, सेव्यो भगवन्त तोय ।
सीखावी भगवंत तुझ, तेजु लेश अवलोय ।१०५।
वलि भगवंत बहु श्रुत कियो, भगवन्त थकी ज सोय ।
भाव अनार्य पडिवज्झियो, ते माटै अवलोय ।१०६।
मति इम हे गोशाल तुझ, करणा योग्य नाहिं एह ।
तेहिज छाया ताहरी, नाहिं अनेरी जेह ॥१०७॥

सुण गोशालो कोपियो, तेजु लेश करि तांम ।
श्रवानुभूति मुनि प्रतै, भस्म कीयो तिण ठाम १०८
द्वितीयवार गोशाल फुन, कठिन वचन अधिकाय ।
नष्ट विणष्टादिक कह्या, तब सुनक्षत्र मुनिराय १०९
जिम श्रवानुभूत्ति कह्यो, तिमहिज कह्यो विचार ।
गोशालो तब तेज करि, परितापै तिहवार ।११०।
प्रभुपै आवी वंदि नम, महाव्रत प्रति आरोप ।
संत सत्यां नैं खाम नैं, कीधो काल अकोप ।१११।
तृतीयवार गोशाल फुन, प्रभु प्रति निठुर वदेह ।
तब प्रभु गोशाला प्रते, मुनि कह्यो तिमज कहेह ११२
हे गोशाला तो भणी, मैं प्रवर्ज्या दीध ।
यावत मैं वहु श्रुति कियो, म्लेच्छ भाव तैं कीध ।११३।
गोशालो सुण कोपीयो, तनु थी काढै तेज ।
प्रभु तनु परितापै तदा, पिण तनु नाहिं पेसेज ।११४।
गोशालारा तनु विषै, पाछो पैठी आय ।
लागी दाह शरीर मैं, बोल्यो प्रभु प्रति वाय ११५
छद्मस्थ थको छः मास मैं, काशव काल करेह ।
प्रभु कहै हूं वर्ष सोल लग, गंध गज जिम विचरेह११६
तैं मूकी तेजू तिका, पैठी तुझ तनु न्हाल ।
तेह थी सप्तम निशि मझै, तूं करसी छद्मस्थ काल ११७

पुर मैं जन कहै उभय जिन, लवै माहो मांहि वाय ।
कुण सांचो झूठो कवण, आस्चर्य ए अधिकाय ११८
गोशालो निज स्थान जई, सप्तम् निशि सु विचार ।
सम्यक्त पामी आतम निन्द, काल कीयो तेहवार ११९
प्रभु वेदन षट् मास सही, पछै विजोरा पाक ।
लीधैं तनु पाक्रम वध्यो, प्रभुजी होगया चाक ।१२०।
गोयम तब बे मुनी तणी, पूछी फुन पूछेह ।
अंतेवासी आपरो, कु शिष्य गोशालक जेह ।१२१।
काल करी नैं किहां गयो, प्रभु भाष्यो सुविशाल ।
अंतेवासी माहरो, कु शिष्य गोशालक न्हाल ।१२२।
श्रमण घातक छद्मस्थ थको, काल करी सु जगीस ।
अच्युत् कल्पे ऊपनों, स्थिति सागर बावीस १२३
भगवती पनरमैं शतक मैं, छै बहुलो विस्तार ।
इहां संक्षेप थकी कह्यो, गोशालक अधिकार ।१२४।
कही सूत्र मैं तिमज कह्यु, हिव तसु कहिये न्याय ।
प्रभु शिष्य कियो गोशाल नैं, वलि बचायो ताय १२५
गोशाला नीं वारता, प्रभुजी धुर सूं रूयात ।
मास २ तप द्वितीय वर्ष, म्हे कीधो सुविरूयात ।१२६।
प्रथम मास नैं पारणै, विजय तणै घर किद्ध ।
गोशालो कह्यो आप गुरु, हूं तुम्ह शिष्य प्रसिद्ध १२७

तसुं अङ्गीकार मैं नवि कीयो, द्वितीय मास नैं जाण ।
पारणा गोशाले कह्युं, तिणहिज रीत पिछाण ।१२८।
अङ्गीकार न कियो तदा, तृतीय मासरै जेह ।
पारणा फुन गोशाल कह्युं, पिण म्हैं अंगीकृत न करेह
जो शिष्य करवानी रीत हुवै, तो प्रथम वार ही पेख ।
अंगीकार करता प्रभु, न्याय विचारी देख ॥१३०॥
तुर्य मास नैं पारणै, तिमज कह्युं गोशाल ।
मुझ धर्माचार्य तुम्हे, हूं धर्म अन्तेवासी न्हाल १३१
मैं अङ्गीकार कीधो तसुं, इम कह्यो सूत्र विषेह ।
वृत्तिकार एहवो कह्युं, सांभल जो चित्त देह ।१३२।

॥ गीतकछन्द ॥

अक्षीण राग पणा थकी, परिचय करी नैं जानीयं ।
ईषत् स्नेह अनुकम्पनां सद्भाव थी पहिछानीयं,
अद्धा अनागत दोषनां, अजाणवाथी आद्रतं, फुन
अवश्य भावी भाव थीज अजोग प्रति अङ्गीकृतं १३३

॥ दोहा ॥

अक्षीण राग पणै करी, अङ्गीकार प्रतिख्यात ।
ते राग भाव मैं धर्म किम, समझो सुगण सुजात १३४

वलि परिचय करी नैं कह्यो, ईषत् स्नेह अनुकम्प ।
एह कार्य्य आछो हुवै, तो इह विधकेम पर्यम्प ।१३५।
क्षीणराग पणा विषै, परिचा विषय सु जोय ।
स्नेह अनुकम्पा नैं विषे, भलो कार्य किम होय ।१३६।
वलि अनागत दोषनां, अजाणवा थी जोय ।
अङ्गीकार कीधो कह्यो, ते दोष किसो अवलोय १३७
ए तिल नीपजसे कह्यो, तिण दीधो तुरत उपाड ।
हिन्सा जीवांरी हुई, ए अवगुण अवधार ॥१३८॥
वलि लब्धि फोड गोशाल नौं, रक्षण कीधो ताय ।
तिण वहु मिथ्यात वधावियो, ए पिण अवगुण थाय
वलि तेजु लेश्या प्रतै, सीखावी भगवान ।
तिण लेश्याइं मुनी हणया, ए पिण अवगुण जान १४०
वलि प्रतापना प्रभु नैं करी, तेजू लेश्य करेह ।
वेदन अति षट् मास सही, प्रत्यक्ष अवगुण एह १४१
वलि तिल बूंटो नीपनो, एम कह्यो भगवान ।
तस्तिण तिणे उपाडियो, ए पिण अवगुण जान १४२
एम अनागत दोषनां, अजाणवाथी न्हाल ।
प्रभु छद्मस्थ पणे कीयो, अङ्गीकृत गोशाल ।१४३।
जो ए अवगुण जाणता, तो केमकरे अङ्गीकार ।
पिण उपयोग दीधो नहीं, वारूं न्याय विचार ।१४४।

जो अपर अनागत दोष हुवै, तो कहिये तसु नाम।
प्रगट वृत्ती मैं आखियो, दोष अनागत तांम १४५
कोई कहै गोशाल नैं, अङ्गीकार कृत ख्यात।
पिण दिक्षा दीधी इसो, किहां पाठ अवदात १४६
अवानु भूत्ति मुनि कह्यो, हे गोशाला तोय।
प्रवर्ज्या दीधी प्रभु, वलि प्रभु मूंडयो सोय।१४७।
वृत्ति पणै सेव्यो प्रभु, सीखायो भगवान।
वलि वहु श्रुति प्रभु कियो, प्रगट पाठे पहिछान १४८
इमज सु नक्षत्र मुनि कह्यो, इम प्रभु कह्यो प्रसिद्ध।
हे गोशाला तोभणी, म्हे ज प्रवर्ज्या दिद्ध।१४९।
यावत म्हे वहु श्रुत कियो, मुझ सेती इहवार।
भाव अनार्य्य पडिवज्यो, इम आख्यो जगतार १५०
तव गोशाले जिन ऊपरै, मूंकी तेजू लेश।
प्रभु षट् मास लगे सही, वेदन अधिक विशेष १५१
जे षट्मास थयां पछै, प्रभु तनु थयो निराम।
गौतम पूछ्यो कु शिष्य तुझ, मर उपनो किण ठांम
प्रभु कह्यो अंतेवासी मुज, कु शिष्य गोशाल जगीस।
अच्युतकल्पे ऊपनो, स्थित सागर बावीस।।१५३।।
नव मैं शतकै भगवती, तेतीसम् उद्देश।
गौतम पूछ्यो बीर प्रति, सांभल जो सु विशेष।१५४।

अंतेवासी कु शिष्य तुझ, जमाली अणगार ।
काल करी किहां ऊपनौं, प्रभु भाषै तिहवार ।१५५।
अंतेवासी कु शिष्य मुज, जमाली अणगार ।
लंतक कल्पै ऊपनौं, किल्विष पणौ विचार ॥१५६॥
जमालीनैं कु शिष्य कह्युं, तिमहिज कु शिष्य गोशाल।
ते माटै बिहुं शिष्य हुंता, देखो नयण निहाल ।१५७।
अंतेवासी बिहुं भणी, आख्या श्रीजगनाथ ।
वलि कु शिष्य बिहुं नैं कह्या, देखो तज पखपात१५८
कु पूत कहिवै पूत पुर, तिणहिज रीत पिछाण ।
कु शिष्य कहिवै शिष्य धुर, समझो चतुर सुजाण१५९
अङ्गीकृत आख्यो प्रथम, अवानु भूति ख्यात ।
कह्यो सुनक्षत्र मुनि वलि, फुन प्रभु कह्यो विख्यात
तास कु शिष्य कह्यो वलि, ए पंचठाम पहिछान ।
दीक्षा गोशाला तणी, देखोजो बुद्धिवान ॥१६१॥
नवमैं ठाणै वृत्ति मैं, जिन छद्मस्थ सु जोय ।
दिक्षा न दियै इम कह्यो, शिष्य वर्ग नैं सोय ॥१६२॥

॥ अथ ठाणाङ्ग नवमैं ठाणै टीका मैं कह्यो छै तीर्थंकर छद्मस्थ थका दिक्षा न दियै ते गाथा लिखिए छै ॥

न परोवए सिसा नय छउमत्था परोवए ।
संपि डिबिनय सीस वग्गां दिरकांति जिणा जहासव्वे

केवल उपाजिया विना, दिक्षा दीधी आप ।
अक्षीण राग पणे करी, परिचय स्नेह प्रताप ॥१६३॥
वलि अजाण पणा थकी, जेह अनागत दोष ।
वृत्तिकार पिण इम कह्यो, तो मुजथी क्यूं अपसोस
अयोग नैं अङ्गीकार कृत, एम कह्युं वृत्तिकार ।
जे दिक्षा देवा जोग्य नहीं, तेह अयोग विचार १६५
अक्षीण रागपणे कह्यो, ते राग भावरे मांहि ।
आणाँ केवली नी अछै, अथवा आज्ञा नाहिं ।१६६।
वलि परिचय करिनैं कह्यो, ते परिचय पहिछान ।
आछो छै अथवा बुरो, न्याय विचार सुजान १६७
ईषत् स्नेह गर्भानु कम्प, सभावथी अवलोय ।
अङ्गीकृत कह्युं वृत्ति मैं, तास न्याय हिव जोय ।१६८।
जे अनुकम्पा नें विषै, स्नेह रह्यो छै ताय ।
स्नेह गर्भ अनुकम्पते, मोह अनुकम्प कहाय ।१६९।
भावे स्नेह अनुकम्प कहो, भावै मोह अनुकम्प ।
श्री जिन आज्ञा बार है, सावद्य तेह प्रपंच ।१७०।
मोह कर्म नां उदय थी, स्नेह राग ए होय ।
तिण सुं स्नेह अनुकम्प ते, मोह अनुकम्पा जोय १७१
स्नेह किणसुं करिवो नहिं, भाख्यो श्री जिनराय ।
उत्तराध्ययनैं आठ मैं, दूजी गाथा माँय ॥१७२॥

ईषत् स्नेह अनुकम्प कही, ते अनुकम्पा सोय ।
सावद्य पाप सहित छै, अथवा निर्वद्य जोय ।१७३।
जो निर्वद्य अनुकम्प ए, तो इषत् क्युं ख्यात ।
पूरण कृपा करि प्रभु, इमकहता अवदात ।१७४।
ईषत स्नेह अनुकम्प ए, जो सावद्य छै सोय ।
तो सावद्य में धर्म नहीं, हिये विमासी जोय १७५
ईषत लोभ भलो नही, ईषत भलो न मान ।
ईषत माया नहिं भली, तिम ईषत स्नेह जान १७६
ईषत झूट भलो नही, ईषत भलो न क्रुद्ध ।
ईषत अदत्त भलो नही, तिम ईषत स्नेह अशुद्ध १७७
गौतम नैं जिन स्नेह थी, अटक्यो केवल ज्ञान ।
तो गोशालारा स्नेह थी, धर्म पुराय किमजान १७८
काल अनागत दोष पिण, बृत्तिकार आख्यात ।
तो प्रशंसवा योग्य ए, कार्य्य केम कहात ।१७९।
होणहार निश्चय तिको, टाल्यो नहिं टलंत ।
तिण कारण गोशाल नैं दिक्षा दी भगवंत १८०
बृत्तिकार पिण इम कह्यो, तुम्ह नैं पिण तिण रीत ।
कहिवुं तेहिज उचित छै, वारू वचन वदीत ।१८१।
कोई कहै ए बृत्ति नैं, तुम्हे न मानो कोय ।
तो बात बृत्ति नी किम कहो, हिव उत्तर अवलोय १८२

भगवती शतक अठार मैं प्रभुजी भणी प्रत्यत्त ।
सोमिल प्रश्न ज पूछिया, शरसव भत्त अभत्त ।१८३।
जिन कह्यो जे ब्राह्मण तणा, शास्त्र विषै आख्यात ।
शरसव नां बे भेद है, इत्यादिक अवदात ।१८४।
तो ब्राह्मण नां शास्त्र प्रते, स्युं मान्युं जगनांथ ।
पिण तेह नै समझायवा, तसुं मतनी कही बात१८५
तिम मिलती ए वार्त्ता, वृत्ति तणी आख्यात ।
जे वृत्ति मानैं तेहनैं, समझावा कही बात ।१८६।
वलि प्रभु गोशाला तणी, अनुकम्पा चित्त ल्याय।
शीतल तेजू फोडवी, रत्तण कीधो ताय ॥१८७॥
वृत्तिकार इम आखियो, तेह सराग पणेह ।
एक दया नैं रश थकी, रत्तण कीधो एह ।१८८।
बे मुनी नैं न बचावसी, तब वीत राग भावेह ।
लब्धि अण फोडवा थकी, अवश्य भावी एह १८९
इहां सराग पणौ कह्यो, ते सराग पणारे मांय ।
धर्म पुराय किण विध हुवै, देख विचारो न्याय १९०
सराग पणौं कहिनें पछै, दया एक रश ख्यात ।
जिसो सराग पणौं हुवै, तिसी दया ए थात ।१९१।
सराग भाव निर्वद्य नहीं, तिम दया न निर्वध एह ।
दोनूं सावद्य जाणवा, न्याय विचारी लेह ॥१९२॥

बे साधु नविराखीया, ते वीत राग भावेह ।
दयावंत पिण जद हुंता, पिण सावध दया न तेह१९३
वीत राग थयां पछे, भाव सराग न होय ।
तिम वीत राग थयां पछे, सावद्य दया न कोय १९४
कोई कहे सावद्य दया, किहां कही छे तांम ।
न्याय कहुं छुं तेह नों, सुण राखो चित्त ठाम ।१९५।
हेमि नाम माला विषे, आठ दया रा नाम ।
दया शूक कारुण्य फुन, करुणा घृणाज्ञु ताम ।१९६।
कृपा अनें अनुकम्प फुन, वलि अनुक्रोश कहाय।
नाम एकार्थ आठ ए, तृतीय काण्डरे मॉय १९७

॥ अथ हेमिनाम माला में आठ दयारा नाम कह्या ते लिखीये छै ॥

सूरतोथ दयाशूकः कारुण्यं करुणा घृणा कृपानु कम्पानु क्रोशो ॥ इति ॥

जिन ऋष सामों जोवीयो, रत्न द्वीप नीं जेण ।
देवी नी करुणा करी, ज्ञाता नवम् अङ्गेण ।१९८।
करुणा नाम दया तणो, ते माटे सुविचार ।
एह दया सावद्य छै, श्रीजिन आज्ञा बार ॥१९९॥
उत्तराध्येन बावीस में, नेम नाथ भगवान ।
जीव देख अनुक्रोश मन, पाठ विषे पहिछान ।२००।

अनुक्रोश ते करुणा कही, अनिचूरि मैं अर्थ ।
ते माटै करुणा दया, निर्वद्य एह तदर्थ ॥ २०१ ॥
तिण सुं भाव सराग नी, दया ज सावद्य सोय ।
अष्टादश मैं देखलो, दशमूं राग सु जोय ।२०२।
लब्धि अण फोडववा थकी, वीत राग भावेह ।
बे साधु नवि राखस्ये, ए पिण वृत्ति विषेह ।२०३।
तिण सुं सराग भाव करि, सीतल तेजू लेश ।
लब्धि फोडवी राखीयो, गोशालक सुविशेष २०४
गोशालक हणवा भणी, बाल तपश्वी जेह ।
उष्ण तेजु लेश्या प्रते, मूंकी पाठ विषेह ॥२०५॥
भगवंत अनुकम्पा करी, लेश्या सीतल तेह ।
मूंकी गोशालक भणी, रक्षण करण कहेह ।२०६।
उष्ण तेजु लेश्या कही, सीतल तेजही लेश ।
तेजु लेश ए विहुं कही, पाठ विषे सु विशेष २०७
उष्ण तेज लेश्या प्रते, तापस मूंकी सोय ।
लेश्या सीतल तेज प्रति, प्रभु मूंकी अवलोय २०८
तिण सुं तेजु लब्धि प्रति, फोडी नैं भगवान ।
गोशाला नैं राखीयो, छद्मस्थ थकां पिछान ।२०९।
केवल ज्ञान थयां पछै, लब्धि फोडवणी नांहिं ।
बहु ठामैं वर्जी प्रभु, देखो सूत्रे मांहिं ॥ २१० ॥

पद छत्तीसम् पन्नवणा, वैक्रिय लब्धिज ताय ।
फोडवयां कृया जघन्य त्रण, उत्कृष्ट पंचही पाय ।२११।
इमहिज आहारिक लब्धि प्रति, फोड्यां थी पहिछान ।
जघन्य तीन कृया कही, उत्कृष्ट पंच सुजान ॥२१२॥
इमहिज तेजू लब्धि प्रति, फोडै तेहनै जोय ।
जघन्य तीन कृया कही, उत्कृष्ट पंच ज होय ।२१३।
तेजु लब्धि जे फोडवी, प्रभु छद्मस्थ पणेह ।
केवल लह्यां कृया कही, वैक्रिय नीपजै एह ॥२१४॥
सराग भाव करि कार्य कृत, तास स्थाप स्युं होय ।
केवल लह्यां पछै कह्यो, तास स्थाप छै सोय ।२१५।
कोई कहै अनुकम्प करि, प्रभु राख्यो गोशाल ।
ते माटे इहां धर्म छै, उत्तर तास निहाल ॥२१६॥
बृद्ध तणी अनुकम्प करि, कृष्ण ईंट उपाड ।
तासघरे मेली कही, अंतगडे अधिकार ॥ २१७ ॥
सुलसां नी अनुकम्प करि, पुत्र देवकी नांज ।
संक्या हरण गवेषि सुर, सूत्र अंतगड साज २१८
पथ्य धारणी भोगव्यो, गर्भ अनुकम्पा आंण ।
अभय अनुकम्पा सुरकरी, दोहलो पूरयो जांण २१९
हरकेशी मुनिवर तणी, अनुकम्पा करि यत्त ।
रुधिर वमंता छात्र कृत, उत्तराध्ययन प्रवृत्त ।२२०।

वाले मुनि नीं व्यावच अर्थ, छात्रां नैं दुःख देह ।
ए पिण सावद्य जाणवो, तिम अनुकम्प कहेह ।२२१।
अनुकम्पा त्रश जीवनीं, आंणी नैं मुनिराय ।
बांधै बांधतां प्रति, अनुमोद्यां दंड आय ॥२२२॥
इमहिज छोडै छोडतां प्रति, मुनि जे अनुमोदेह ।
निशीथ उद्देशै बारमैं, दंड चौमासी कहेह ॥२२३॥
अनुकम्पा ए सहु कही, पाठ विषै पहिछाण ।
जिन आज्ञा नाहिं तेह मैं, तिण सुं सावद्य जाण २२४
तिम प्रभु गोशाला तणी, अनुकम्पा चित आंण ।
तेजू लब्धिज फोडवी, तिण सुं सावद्य जांण २२५
आहारिक लब्धि फोडवै, अधि करण कह्या तास ।
शतक सोलमैं भगवती, प्रथम उद्देश विमास ।२२६।
वैक्रिय लब्धि फोडवै, कह्यो विराधक ताहि ।
भगवती तीजे शतक मैं, तुर्य उद्देशा मांहि ।२२७।
जंघा विद्या चारणा, लब्धि फोड़वी जाय ।
ते थानक विन पडिकम्यां, कह्या विराधक ताय।२२८।
भगवती गौतम गुण मभै, तेजु लेश्या प्रति ताहि ।
संकोचै ते गुण कह्यो, फोड्यां गुण कह्यो नाहिं २२६
इत्यादिक बहु सूत्र मैं, तेजू वैक्रिय आदि ।
मुनि नैं लब्धि न फोडणी, देखो धर अहलाद ।२३०।

जो लब्धि फोड गोशाल नैं, राख्यां धर्म न होय।
तो बे मुनि प्रति राख्या न क्यूं, न्याय विचारी जोय॥
जब कहै बे मुनिवर तणों, मृत्यु जांण भगवान।
तिण कारण राख्या नहीं, हिव तसुं उत्तर जांण।२३२।
वृत्तिकार तो इम कह्यो, वीत राग भावेह।
लब्धि अण फोडयां थकी, वलि अवश्य भावी छै एह
सीतल तेजू लब्धि प्रति, अण फोडवाथी ख्यात।
तिण सुं सीतल तेजु पिण, किम फोडै जगनाथ २३४
ज्यो प्रभु बे मुनिवर तणों, जाणयों मृत्यु जिवार।
तो मुनि गौतम आदि त्यां, क्युं नहिं कीधी सार२३५
गौतम आदि विषै हुंती, सीतल तेजू लेश।
त्यां लब्धि फोड राख्या न क्युं, बे मुनि प्रति सुविशेष
जब कहै गौतम आदि प्रते, वर्ज्या प्रभुजी ताय।
तिण सुं मुनि राख्या न बे, निसुणो तेहनों न्याय२३७
प्रभु तो आनन्द नैं कह्यो, तू मुनि प्रते कहेह।
धर्म प्रति चोयणा मत करो, गोशालक थी जेह।२३८।
पिण मुनि प्रते न बचावणा, इम तो आख्यो नाँय।
तिण सुं गौतम आदि जे, मुनि नहीं राख्या काँय२३९
पिण जे लब्धि फोडण तणी, श्रीजिन आज्ञा नाँय।
तिण सुं सीतल तेजु प्रते, किम फोडै मुनिराय।२४०।

लब्धि फोड गोशाल नैं, राख्यो श्री भगवान ।
जद छद्मस्थ पणैं हुंता, मोह स्नेह वस जान ।२४१।
जलथी नाव भरीजती, देखी नैं मुनिराय ।
गृही प्रते बतावणो नहीं, द्वितीय आचाराङ्ग माँय २४२
डूबै आप अनें वलि, जे डूबै वहु जीव ।
तसु अनुकम्प करै नहीं, रहै सम भाव अतीव ॥२४३॥
मात बचावा ऊठियो, चूलणि पिया पिछाण ।
तसुं पोशह भागो कह्यो, सप्तम् अङ्ग जाण ॥२४४॥
मिथला वलती देख नमि, स्हामों जोयो नाहिं ।
देखो उत्तराध्ययन में, नवमें अध्येनें ताहि ॥२४५॥
दशवै कालिक सातमैं, देव मनुष तिर्यञ्च ।
विग्रह लड़ता परस्पर, देखी नैं मुनि संच ॥२४६॥
एहनीं होवै जीत फुन, एहनी होवै हार ।
एहवुं न कहै महामुनी, हिव तसु न्याय विचार २४७
हार जीत नवि वंछवी, तो तास विचै पड संत ।
केम करावै हार जय, देखोजी मति मंत ॥२४८॥
छेदै हरश मुनि तणी, कृया वैद्य नैं ख्यात ।
शतक सोलमैं भगवती, तृतीय उद्देश संजात॥२४६॥
आज्ञा श्री जिनवर तणी, जेह कार्य मैं नाँय ।
तेह कार्य कीधां छतां, धर्म पुराय किम थाय ॥२५०॥

तिम ज लब्धि फोडण तणी, श्रीजिन आण न देह ।
धर्म पुण्य किम तेह मैं, न्याय विचारो एह ।२५१।
कोई कहै छद्मस्थ प्रभु, फोडी लब्धि जिवार ।
दण्ड लियो स्युं तेह नों, हिव तसुं उत्तर सार ।२५२।
राजमती नैं बोलियो, विषय वचन रहनेम ।
प्रायश्चित चाल्यो न तसुं, पिण लियो हुस्ये धर पेम
जल विच पात्री नाव जिम, अइमुते ऋषि किद्ध ।
प्रायश्चित चाल्यो न तसुं, पिण लीधो हुस्ये प्रसिद्ध
मोह बसै सीहो मुनी, रोयो मोटे साद ।
प्रायश्चित चाल्यो न तसुं, पिण लीधो हुस्ये संवाद२५५
धर्म घोषनां संत जे, आवी चोहटा मांहिं ।
नाग श्री हेली निन्दी, तसुं दण्ड चाल्यो नाहिं २५६
इणसे हय नृप सारथी, नाम सुमङ्गल संत ।
प्रायश्चित चाल्यो न तसुं, शतक पनरम उदंत ।२५७।
कोई कहै आलोयणा, पडिकमणा कही तास ।
तिण सु ए दंड तेहनुं, हिव उत्तर सुविमास ।२५८।
चर्म समय नूं पाठ ए, खंधक धन्नो आदि ।
वहु मुनि नों समुच्चय कह्यो, तिम ए पिण संवाद२५६
जंघा विद्या चारणा, तस्स ठाणस्स सोय ।
आलोइय पडिक मिय, एहवो पाठ सु जोय ।२६०।

लब्धि फोडी ते स्थान प्रति, आलोवी गुणवन्त।
वालि पडिक्कमैं ते मुनी, पद आराधक हुन्त ।२६१।
मुनी सुमङ्गल स्थानके, तस्स ठाणस्स नांहिं ।
तिण सुं लब्धि फोडण तणो, दण्ड कह्यो नहिं ताहि।
पिण नृप हय अरु सारथी, हणसे दण्डज तास ।
तेह मुनी लेस्ये सही, कह्युं सव्वठ सिद्ध वास २६३
इत्यादिक वहु ठामही, प्रायश्चित चाल्या नांहिं ।
पिण लिया हुस्ये महामुनी, गुणी देखोजी दिल मांहिं
तेजु लब्धि जे फोडवै, तास क्रिया त्रण पंच ।
केवल लह्यां कह्यो प्रभु, तिण सुं दण्ड सुसंच ।२६५।
कल्पातीत हुंता प्रभू, छै ए सांची वांण ।
पिण किण गुणठाणैं तिके, कहिये चतुर सुजाण२६६
प्रभुजी चारित्त लियां पछी, श्रेणि चढया पहलांज।
सप्तम गुण छट्ठै वली, वे गुणठाण समाज ॥२६७॥
सप्तम् गुणठाणा तणी, उत्कृष्टी अवलोय ।
अन्तर महुरत स्थिति छै, छट्ठे वहु स्थित जोय ।२६८।
छट्ठा गुणठाणा विषै, आखी च्यार कषाय ।
षट् लेश्या संज्ञा चिहुं, अशुभ जोग पिण आय २६९
परिचय स्नेह अनुकम्प करि, अक्षीण राग पणेह ।
सराग भाव फुन लब्धि नूं, फोडव वुं पिण लेह २७०

प्रथम छट्ठा गुणठाणा नां, प्रगट भाव ए पेख ।
निर्वध किम कहिये तसुं, न्याय विचारी देख ।२७१।
जेह कार्य नीं केवली, आज्ञा न दिये कोय ।
धर्म पुण्य नहिं तेह मैं, हिये विमासी जोय २७२
जेह कार्य नीं केवली, आज्ञा देवै आप ।
धर्म पुण्य छै तेह मैं, तिहां नहिं किञ्चित पाप ।२७३।
केई जिन आज्ञा मैं पाप कहै, धर्म जिन आज्ञा बार।
विहुं विध अशुद्ध प्ररुपवै, किम पामैं भव पार ।२७४।
जिनधर्म जिन आज्ञा दियै, जिन धर्म सिखावै आप।
जे धर्म कहै आज्ञा विना, ते कँवण प्ररुप्यो थाप २७५
आज्ञा बारै धर्म रो, कँवण धणी अवलोय ।
हात जोडि पूछ्यां थकां, कुण आज्ञा दे सोय ।२७६।
देव गुरू तो मौन रहै, नहिं अनुमोदै अंश मात ।
तो आज्ञा बाहिर धर्म री, उत्पतिरो कुण नाथ ।२७७।
संवर नैं वलि निरयरा, दोय प्रकारे धर्म ।
जिन आज्ञा मैं ए विहुं, ते थी शिवसुख पर्म ।२७८।
दोय प्रकारे धर्म वलि, श्रुत फुन चरित पिछाण ।
जिन आज्ञा ए विहुं विषे, समझो सुगण सुजाण २७९
पंच महाव्रत साधुरा, श्रावक नां व्रत बार ।
जिन आज्ञा मैं ए विहुं, आज्ञा बार असार ।। २८० ।।

तिणसुं जिन आज्ञा तणी, राखो सुगण प्रतीत ।
धर्म जिन आज्ञा धारियो, ते गया जमारो जीत २८१

॥ अथ हितशिक्षा ॥

दुःख बहु नरक निगोदनां, सह्या अनन्ती वार ।
धर्म जिन आज्ञा शिर धरै, हुवै तास निस्तार २८२
मनुष जन्म दोहिलो लह्यो, लही सामग्री सार ।
पंच महाव्रत आदरी, आराध्यां भव पार ॥२८३॥
जो चरित धर्म ग्रही नहिं सकै, तो श्रावक नां व्रत बार।
निर अतिचारे पालियां, पामैं भव दधि पार २८४
जो बार व्रत ग्रही न सकै, तो समदृष्ट उदार ।
देव गुरू धर्म उंलख्यां, सुख पामैं श्रीकार ।२८५।
जो पूरी समझ पड़ै नहीं, तो गुणवन्त रा गुण गाय ।
कोइक रशायण आवियां, पातिक दूर पुलाय २८६
पोतै व्रत पालै नहीं, पालै ज्यासूं द्वेष ।
दोय मूर्ख तिण नैं कह्यो, प्रथम आचारङ्ग देख २८७
गुणवंतरी निन्दा कियां, कर्म तणु बंध होय ।
तेह कर्म थी दुःख लहै, नरक निगोदे सोय ॥२८८॥
तिण सुं हित सिक्षा भली, धारै सुगण सुजाण ।
राग द्वेष छांडी करी, आराधे जिन आंण ।२८९।

॥ कलश ॥

॥ चाल गीतक छन्द ॥

जिन वयण गुण मणी रयण सार उदार देखी संग्रह्या, अवि तथ्य पथ्य सु अर्थ जे मुझ भ्यासनां मैं जिम कह्या। अति श्रेष्ट मिष्ट गरिष्ट प्रवर विशिष्ट जिन बच आद्यतं। बच विरुद्ध को आयो हुवै मुझ तास मित्थ्या दुःकृतं ॥ १ ॥ उगणीसै तेतीस वर्ष विद द्वादशी फागुण वही, वर शहर बीदाशर विषै, हद श्रमण एकावन सही। फुन अर्जका इक शय तिहां गणी आंण संप्रति सोभती। वर समय सार उदार निर्णय कीध जय जश गणपती ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

भिक्षू भारीमाल फुन, तृतीय पाट ऋषि राय।
तास पसाए सुगण वृद्धि, जय जश हर्ष सवाय ॥१॥
तिण काले भिक्षू गणे, मुनिवर छित्तर दोय।
इक सह त्राणु अर्जका, गणी आंण अवलोय ॥२॥
उत्तर तुम्हे मंगाविया, हमे लिखाव्या नाँय।
ते माटै ए प्रश्न नां, उत्तर दोहा वणाय ॥ ३ ॥
दोहा ग्रहस्थ कंठ करी, निज मति थकी लिखेह।
तिके खोट ज्यो को लिखी, तो मुझ दोषण मत देह ४

॥ इति ॥

॥ अथ छव्वीस मूं प्रतिमा वैराग नौ हेत्तु कहै तेह नुं उत्तर ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै वैराग्य नौं, हेत्तु प्रतिमा एह ।
जिन प्रतिमा देखी करी, वर वैराग लहेह ॥ १ ॥
ते माटे वन्दनीकहै, जिन प्रतिमा जग मॉय ।
हिव तेहनुं उत्तर कहुं, सांभल जो चित्तल्याय ॥२॥
वृषभ देख प्रति बूझियो, कर कंडू नरराय ।
दुमुह इन्द्रध्वज स्थम्भ प्रति, देख सम्वेग सुपाय ।३।
चूडि सूं प्रति बूझियो, नमि नृपति तिह काल ।
अम्ब देख प्रति बूझियो, नगई नाम भूपाल ।४।
उत्तराज्झयणा इक बीसमैं, समुद्र पाल सम्वेग ।
पायो तस्कर देख नैं, देखो तज उद्वेग ॥ ५ ॥
सम्वेग पाठ तणौ अर्थ, अविचूरि मैं ख्यात ।
सम्बेग नां हेत्तु भणी, सम्वेग चोर कहात ॥ ६ ॥

॥ सूत्र गाथा ॥

तं पासि ऊण सम्वेगं, समुद्दपालो इण मव्वी, अहो असुहाण कम्माणं, निज्झाणं पावगं इमं ॥ उत्तराज्झयण २१ वें गाथा ९ मीं ॥

॥ अत्र अविचूरी ॥

तामिति तथा विध द्रव्यं दृष्ट्वा संवेग संसार वैमुख्यतो मुक्त्य ऽभिलाषस्तद्धेतुत्वात्सोपि संवेगस्तं समुद्रपाल इदं वक्ष्यमाणं मब्रवीत् यथा अशुभानां पापकारीणां कर्म्मणा मनुष्ठानानां निर्याणं अव-सानं पापकं अशुभं इदं प्रत्यक्ष असौवराकौ वध्यार्थ मित्थं नीय त इति भावः ।

॥ वार्त्तिका ॥

इहां कह्यो ते कहतां ते, तथा विध द्रव्य देखी नें सम्वेग ते संसार विमुखपणो मुक्तिनी अभिलाषा ते सम्वेग नां हेतु पणा-थकी, सोपि कहतां तिको चोर पिणसम्वेग, जिम पापकारी कर्म्म ते अनुष्टान ना छेहड़े अशुभ ए प्रत्यक्ष रांक वध नें अर्थे इह विध लेजाय छै, एटले सम्वेग नौं हेतु चोर ते देखी नें समुद्रपाल बोल्यो अशुभ कर्म्म नां फल ए भोगवै छै।

॥ दोहा ॥

सम्वेग नौं हेतु कह्यो, तशकर नैं अवलोय ।
पिण गुण नाहिं छै ते भणी, वन्दन योग न कोय ।७।
वृषभादिक देखी करी, करकण्डू आदेह ।
बूझ्या पिण वृषभादि ते, वन्दनीक न कहेह ।।८।।
मुनि वेसैं जे पासत्थो, तसुं देखी नैं सोय ।
वैराग पावै पिण तिको, वन्दन योग न कोय ।६।
तिम जिन प्रतिमा देख नैं, पावै जे वैराग ।
पिण ते वन्दन योग नहीं, देखो मत पक्ष त्याग ।१०।

ज्ञान दर्शन चारित तणा, गुण नहिं छै जे मांय ।
ते सम्बेग नों हेतु हुवै, पिण वन्दनीक नहिं थाय ।११।
मुनिवर प्रति देखी करी, द्वेष धरै मन कोय ।
द्वेष तणौ हेतु मुनी, पिण निन्दनीक नहिं होय ।१२।
श्रवानु भूत्ति मुनि तणां, वचन सूणी गोशाल ।
कोप्यो सिघ्र उतावलो, भस्म कियो तेह काल ।१३।
कोप तणो हेतु मुनी, पिण गुण सहित सु शंत ।
ते माटै निन्दनीक नहीं, देखोजी बुद्धिवंत ॥१४॥
सु नत्तत्र नां वचन सूणि, धर्‌युं गोशाले द्वेष ।
द्वेष तणो हेतु तिको, पिण निन्दनीक नहिं पेख ।१५।
बीर प्रभूनां वचन सूणि, कोप्यो सिघ्र गोशाल ।
कोप तणा हेतु प्रभू, पिण निन्दनीक मत न्हाल ।१६।
छद्मबीर प्रति देखि नैं, जन बहु द्वेष धरेह ।
दुःख दीधा अति आकरा, आख्यो धुर अङ्गेह ॥१७॥
द्वेष तणा हेतु प्रभु, पिण ते गुण सहीत ।
तिणसुं ते निन्दनीक नहिं, देखोजी धरप्रीत ।१८।
वस्तु जे गुण सहित प्रति, देखी द्वेष लहेह ।
द्वेष तणो हेतु तिका, पिण निन्दनीक नहिं जेह ।१९।
वस्तु जे गुण हीण प्रति, देखि सम्बेग लहेह ।
सम्बेग नौं हेतु तिका, पिण निन्दनीक नहिं तेह ।२०।

॥ अथ सत्तावीसम ब्राह्मी लिपि अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै अङ्ग पंच मैं, ब्राह्मी नीं लिपिसार ।
नमस्कार तेह नैं कर्युं, हिव तसुं उत्तर धार ॥१॥
नमो बंभीए लिवी ए, लिपि कर्त्ता नाभेय ।
चरण सहित जिन धुलिपिक, अर्थ धर्मसी एह ॥२॥
पाथा नां कर्त्ता भणीं, पाथो कहिए ताहि ।
एवं भूत नय नैं मतै, अनुयोग द्वारै मांहि ॥ ३ ॥
अथवा लिपि जे भाव लिपि, जे मुनि नैं आधार ।
नमस्कार छै तेह नैं, एहवुं दीसै सार ॥ ४ ॥
तीर्थ नाम जिम सूत्र नुं, ते संघ नैं आधार ।
तिण सुं सङ्घ नैं तीर्थ कह्युं, तिम भावे लिपि सार ।५।
बृत्तिकार द्रव्य लिपि कही, तेह लिपि गुण सुन्य ।
नमस्कार तेहनैं करेइं, ते तो बात जबुन्य ॥ ६ ॥
द्रव्य निक्षेपो गुण रहित, बंदन जोग्य न तांम ।
समवायङ्ग देखल्यो, द्रव्य भाव जिन नाम ॥ ७ ॥
भरत एरवत खेत्र नां, अनागते जिन नाम ।
समवै चौवीस नाम जिन, वन्दे पाठ न तांम ॥८॥

वले एरवत खेत्र नीं, चउवीसी वर्त्तमान ।
ठाम ठाम वन्दे कह्युं, ए गुन सहित सुजान ॥९॥
वर्त्तमान चउ बीस ए, भर्त्त खेत्र नी ताहि ।
ठाम ठाम वंदे कह्यो, जोवो लोगस्स मांहि ॥१०॥
ते लेखै द्रव्य लिपि भणी, द्रव्य सूत्र नैं सोय ।
नमस्कार किम किजीए, हिये विमासी जोय ॥११॥
वृत्तिकार द्रव्य लिपि भणीं, थाप्यो छै नमस्कार ।
सूत्र थकी मिलतो नथी, एह अर्थ अवधार ॥१२॥
तथा पत्र मैं जे लिख्या, अक्षर ना आकार ।
वन्दनीक जो ते हुवै, तो लिपि अष्टा दश धार ॥१३॥
अष्टादश लिपि नैं विषै, वेद पुराण संपेख ।
कुरान जोतिष पिण हुवै, वंदनीक तुझ लेख ॥१४॥
अष्टादश लिपि नैं विषै, वर्ण संज्ञा संपेख ।
सहु पुस्तक मैं जे लिख्या, वंदनीक तुझ लेख ॥१५॥
वैदकविकथा वारता, मन्त्र जन्त्र फुन तन्त्र ।
कोक सामुद्रिक शास्त्र ए, लिपि मैं सहु आवंत ॥१६॥
पाप शास्त्र गुन तीश फुन, वर्ण स्थापना पेख ।
ए अठारे लिपि विषै, वन्दनीक तुझ लेख ॥१७॥
वीतराग तो तेह नै, पाप शास्त्र आख्यात ।
द्रव्य लिपि काहिए तेह नैं, वन्दनीक किम थात ॥१८॥

जो बन्दनीक द्रव्य लिपि हुवै, द्रव्य लिपि कही अठार।
तेह विषै सहु आविया, किम बन्दै अणगार।१९।
ते माटै ते भाव लिपि, वा करता नाभेय।
ऋषभ चर्ण गुण युक्त नैं, नमस्कार सु गुणेह।२०।

॥ वार्तिका ॥

कोई कहै भगवतीरै आदिमैं णमोबंभीए लिविए। ए शब्द कह्या पछै कह्यो णमो सुयस्स ते लिपि नैं नमस्कार करी सूत्र नैं नमस्कार कर्यु ते भाव श्रुत नैं नमस्कार कर्यं छतैं ते भाव सूत्र नैं विषै भावलिपी पिण आयगई तो पूर्वे भाव लिपि नैं नमस्कार कीधो तेहनुं स्युं कारण नमोबंभीए लिविए अनें नमो सुयस्स ए बेपद किमकह्या तेहनुं उत्तर॥दशवै कालिक अध्येन आठ मैं गाथा ४१ मीं मैं कह्यो कुम्मुवं अल्लिण पल्लिण गुत्तो, काछवा नीपरै अल्लीण ते इषत् गुप्त पल्लिण ते प्रकृष्ट लीन घणो गुप्त इहां बेपद कह्या तथा दशवै कालिक अध्ययन चौथै कह्यो पृथिवी काय ऊपर न लिहेज्झा कहितां थोडो सो अथवा एक वार लिखै नहीं, न विलिहेज्झा कहतां बहुवार लिखै नहीं इहां पिण बेपद कह्या, तथा उत्तराध्ययन पहलै आलवंते लवंते वा न सिएज्झ कयाइवि गुरुई, आलवं ते कहतां एकवार बोलाव्यो वा ते अथवा लवंते कहतां वार वार बोलाव्यो नं० शिष्य बैठो रहै नहीं कदाचित पिण इहां पिण बेपद कह्या, तथा उत्तराध्ययन इग्यारमैं नासीले कहितां सर्वथा चारित्र नी विराधना नथी, विसीले कहतां देशथकी चारित्रनी विराधना नथी इहां पिण देश अनें सर्व ए बेपद कह्या, तथा वृहत्कल्प उदेशै तीसरै अंतर घरनैं विषै साधू नैं न कल्पै निद्दा इत्तएवा कहितां थोडी नींद लेवी

पवला इत्तएवा कहितां विशेष ऊंघवो इहां पिण वेपद कह्या, इत्यादिक अनेकठामैं वेपद कह्या तिम इहां पिण वेपद जाणवा लिपि शब्दे भाव लिपि ते देशथकी श्रुत ज्ञान अने नमो सुयस्स ते सर्व श्रुत ज्ञान कह्यो तथा लिपिना करता ऋषभ देवनैं लिपिक कहिए ते चारित्र युक्त प्रथम जिननैं नमस्कार ।

॥ अत्र टीका ॥

अयं च प्राग् व्याख्याता नमस्कारादिकोग्रन्थ वृत्तिकृत्ता न व्याख्यातो कुतोपि कारणा दिति, ए भगवती नी वृत्ति में अभय देव सूरे कह्यो ।

॥ सोरठा ॥

नस्मकारादिक ताहिरे, रचना पूर्व कही जिका ।
मूल वृत्तिरै मांहिरे, न कही किण कारण तिका ॥१॥
इम कह्यो वृत्तिकाररे, ते माटे हिव तेहनुं ।
प्रवर न्याय जे साररे, बुद्धिवन्त हिये विचार ज्यो ॥२॥

॥इति॥ श्रीमद् जयाचार्य्य कृत हित शिक्षावली प्रश्नोत्तर तत्त्वबोध॥
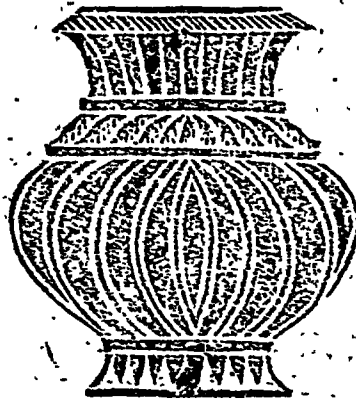
[f] *Form adjectives from:*—Vice, Use, Africa, King.

[g] *Give the opposite genders of:*—Poet, Hero, Governor, Monk.

[h] *Give the plurals of:*—Mr., Louse, Englishman and Brahman.

III. *Parse the italicized in:*—

[a] He told me *that, that, 'that' that, that* man used, was incorrectly used.

[b] Have you *any* pens.

[c] He went *home.*

[d] *Thank* you.

[e] I think it *so.*

IV. [a] *Change the Voice of:*—

1. The master punished him for speaking in class.
2. Who rang that bell ? Not I, Sir, Certainly not I.
3. She had been warned more than once.

[b] *Combine the following sentences:*—

The Jains honour the name of Aklanka. He defeated the Buddhists. He defeated the Vedanties. He defeated the worshippers of Shakti. He defeated all the non-Jains many times.

[c] *Fill up the blanks in the following:—*

1. Not only my sister, but Gopal.........been requested.........give.......pleasure............ company.......a dinner party.
2. Such a large house......you live......would not suit my......income.
3. ......five o'clock.......morning the village watchman.........his brother went........the tank.........they found.........Ranga sitting ....hole.

V. *Analyse any two of the following:—*

[a] His harp his sole remaining joy, was carried by an orphan boy.

[b] After his schooling was finished, his father, desiring him to be a merchant like himself, gave him a ship freighted with various sorts of merchandise, so that he might trade about the world and grow rich.

[c] Lives of great men all remind us, we can make our lives sublime.

VI. [a] *Convert the following from Indirect to Direct:–*

1. A farmer calling his sons to his deathbed told them that he was now departing from this life, and that all he had to leave them they would find in the vineyard.
2. I asked him how many miles he had travelled that day and whether he would not rest there for the night.

[b] *Canvert the following into the Indirect form:—*

1. He thus addressed the judge: "My Lord! Look at the sad state I am in. I was attacked and beaten on the high road by a wicked man, who has also robbed me of my bag of gold, all that I possessed in the world."

2. The monkey with a grave face replied: "The case cannot now be closed; you have asked me to make your two shares equal, and I am doing my best to make them so."

VII. [a] *Give the various meanings of the following sentence according as emphasis is laid upon the italicized words:—*

Do you walk to *Surat to day* ?

[b] *Form sentences using the following idioms:—*

To put up with, to set out, to get to, to put forth, to catch sight, to take to.

[c] *What is the difference between.*

1. He expected you sooner than I, and He expected you sooner than me.

2. He can speak English only, and only he can speak English.